अध्याय–द्वितीय

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में उद्‌घाटित विविध पक्ष

अध्याय–2

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में उद्घाटित विविध पक्ष

समाज एक व्यापक संकल्पना है। मनुष्य समाज का अभिन्न अंग है। मनुष्य के जीवन के सभी क्रिया–कलाप समाज में ही सम्पन्न होते हैं। मनुष्य अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक समाज का अटूट अंग बनकर समाज की उन्नति में अपना योगदान देता है। व्यक्ति की शिक्षा–दीक्षा, विवाह–गृहस्थी, उपजीविका, लेने–देन, संतानोत्पत्ति, उनका पालन–पोषण, उनकी शिक्षा, विवाह इत्यादि कार्य समाज में ही सम्पन्न होते हैं। समाज को मनुष्यों का प्राकृतिक और व्यवस्थित संगठन माना जाता है। यह परिवर्तनशील होने के साथ–साथ प्रगतिशील भी है। यह व्यक्ति के अस्तित्व और व्यक्तित्व का ठोस आधार होता है। मनुष्य की प्रवृत्ति है कि वह अकेला नहीं रह सकता, इसलिए वह एक ऐसे समूह का निर्माण करता है, जिसमें उसके समान रूचि–रूझानों और कार्य–कर्ताओं का समिश्रण होता है। इस प्रकार से समाज के अनेक रूप होते हैं। जैसे पढ़ा–लिखा समाज, ग्रामीण समाज इत्यादि। कहना न होगा कि चाहे समाजों में विविधता होती है परन्तु उन सबके मूल में कुछ आचार–व्यवहार, रीति–रिवाज, परम्पराएँ लगभग एक समान होते हैं। जैसे विवाह, परिवार, धर्म, शिक्षा, राजनीति इत्यादि। इन्हें ही समाज का घटक तत्व माना जाता है।

लघु हिन्दी शब्द सागर के अनुसार ''समाज से भाव है'समूह दल'। एक ही स्थान पर रहने वाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करने वाले लोगों का समूह। वह संस्था जो बहुत लोगों से मिलकर विशेष उद्देश्य से स्थापित की हो, सभा।"[60]

नालन्दा विशाल शब्द सागर के अनुसार "समूह, गिरोह या एक स्थान पर रहने वाला एक ही प्रकार का कार्य करने वाले लोगों का वर्ग, दल या समूह,

---

[60] लघु हिन्दी शब्द सागर, करूणापति त्रिपाठी (काशी : नागरी प्रचारिणी सभा, प्रथम संस्करण), पृ॰ 446

समुदाय। या किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हो सभा, सोसायटी।"[61]

विश्वनाथ प्रसाद वर्मा के अनुसार– "मानव समाज की इकाई है और समाज के बिना वह पूरा विकसित मनुष्य नहीं हो सकता है।"[62]

ए.के. सिन्हा के मतानुसार– "किसी स्थान पर लोगों के इकट्ठे होने पर समाज नहीं बन पाता, किन्तु लोगों के बीच एक दूसरे के साथ सम्बन्ध बनने पर ही समाज बनता है।"[63]

जोगेन्द्र सिंह के अनुसार– "समाज सामान्य मानव–समूह न होकर सामाजिक सम्बन्धों का एक व्यापक जाल है, जो अनेक तन्तुओं द्वारा निर्मित होता है। बुनियादी रूप से समाज मानव की जटिल सम्बन्धताओं का ऐसा समूह होता है, जिसमें कई उपसमूह या घटक अन्तर्भूत होते हैं। ये घटक तत्व है– व्यक्ति, परिवार, वर्ग समुदाय, राज्य आदि। लेकिन इन सबके मूल में जटिल मानवी सम्बन्धता होती है। समाज में रहते हुये व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है। सम्पर्क की यह क्रिया निरन्तर घटित होती रहती है, जिससे सामाजिक सम्बन्धों को ही समाज कहा जाता है। सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य की प्रवृत्ति एक ऐसे संगठन के निर्माण में व्यक्त होती है, जो उसके व्यवहार और समाज का अनेक प्रकार से मार्गदर्शन और नियन्त्रण करता है।"[64]

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि समाज एक धारणा है, जिसमें व्यक्ति समूह में रहकर अपनी सुरक्षा के साथ पारस्परिक भावनात्मक सम्बन्धों का निर्वाह करता है। मानव समाज का निर्माण विभिन्न इकाइयाँ तथा संस्थाओं के अंतःसंबंधों द्वारा होता है। इस तरह समाज का अर्थ–मिलना, एकत्र होना, समूह, संघ, दल सभा, समिति, समान कार्य करने वाले का समूह विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघटित संस्था से है। समाज से भाव व्यक्तियों के समूह से नहीं बल्कि व्यक्तियों के बीच में पाये जाने वाले सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्था से

---

[61] नालन्दा विशाल शब्द सागर, नवल (संपा.) (नई दिल्ली : आदिश बुक डिपो, 2005), पृ. 1407

[62] विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, राजनीति और दर्शन (पटना : विहार राष्ट्रीय परिषद, 1956), पृ. 107

[63] ए.के सिन्हा, समाज दर्शन, (अमृतसर : कृष्णा प्रकाशन, प्रथम संस्करण), पृ. 23

[64] जोगेन्द्र सिंह, फुणीश्वरनाथ रेणु का कथा साहित्य–समाजशास्त्रीय विश्लेषण (नई दिल्ली : ऋषभचरण जैन एवं संतति, 1986), पृ. 17–18

है। मानव जीवन की सभी गतिविधियाँ समाज में ही घटित होती हैं। समाज से अलग होकर वह अपनी विकास की गतियों को छू नहीं सकता। अतः समाज का बहुत व्यापक फलक है जिसमें पुरुष–स्त्री की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। समाज नामक रथ के दो पहिए हैं– स्त्री और पुरुष, जिसमें दोनों का महत्व समान है, किन्तु व्यावहारिक धरातल पर इन विचारों का कोई स्थान नहीं है। यही कारण है कि समाज में स्त्री–शोषण, स्त्री–पुरुष भेदभाव, बलात्कार, यौन शोषण, विधवा जीवन, अनमेल विवाह, वेश्या जीवन इत्यादि जैसी कुरीतियों का जन्म हुआ है।

संस्कृति मानव जीवन को संस्कारित कर विकास की ओर उन्मुख करती है। जैसे– "मनुष्य ने परंपरा से प्राप्त अनुभव के आधार पर अपने जीवन को अधिकाधिक सुखी और शान्त बनाने के लिए जो नियम निश्चित किये हैं जिनके पालन द्वारा वह अपने को अधिक उदात्त और भव्य बनाने का प्रयत्न करता है, उन नियमों और मान्यताओं को ही संस्कृति कहते हैं।"[65]

संस्कृति की विभिन्न परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि संस्कृति में दैनिक जीवन में पायी जाने वाली समस्त वस्तुएँ आ जाती हैं। यह अर्जित व्यवहारों की वह व्यवस्था है जिसका प्रयोग मनुष्य के द्वारा होता है।

समाज और संस्कृति के अर्थ प्राप्त करने के पश्चात् हम सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं पर चर्चा करेगें। समाज विषयक समस्याएँ वे समस्याएँ होती है जो समाज की कुरीतियों से सम्बन्धित होती हैं, जैसे– आतंकवाद, जलसंकट, बुजुर्ग–उपेक्षा आदि ये सभी समाज की सबसे गम्भीर समस्याएँ हैं जिनका आज तक कोई हल नहीं निकल पाया है। इसीलिए अधिकतर लेखकों ने सामाजिक समस्याओं पर आधारित रचनाएँ ही लिखी हैं।

सांस्कृतिक समस्याएँ तब उत्पन्न होती हैं जब मनुष्य अपनी संस्कृति को भूलाकर उचित–अनुचित के फर्क को मिटा देता है। सांस्कृतिक शब्द का केन्द्र शब्द'संस्कृत' है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में इन सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं का वर्णन हमें इस प्रकार से देखने को मिलता है। जिसका विवरण इस प्रकार है–

---

[65] शेख मोहम्मद शाकिर शेख बशीर, नासिरा शर्मा कथा साहित्य में समसामयिक बोध (कानपुर : अन्नपूर्णा प्रकाशन, 2011), पृ॰ 92

1. नारी समस्या

मानव जीवन में'नारी' शब्द नर शब्द के समानांतर है। इसका प्रयोग स्त्रीलिंग'मादा' प्राणियों के प्रतीक रूप में होता है। किन्तु प्राणी जगत में नारी शब्द को इस सामान्य अर्थ में ही नहीं ग्रहण किया जाता, बल्कि नारी का स्थान'नर' से कहीं बढ़कर माना जाता है। रूप–आकार, कार्य–व्यापार, शरीर–संगठन एवं जीवन–यापन की विविध स्थितियों में नारी विधाता की उच्चतम परिकल्पना सिद्ध हुई है। नारी को समाज का अनिवार्य तथा महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। प्राचीन भारतीय परम्परा में नारी को पुरुष की अर्धांगिनी एवं सहधर्मिणी स्वीकार किया गया है। वह पुरुष की प्रतिद्वन्द्विनी नहीं है, उसकी पूरक है। इसलिए पुरुष के जीवन को नारी के बिना अधूरा माना जाता है। लज्जा, श्रद्धा, सेवा आदि के गुणों की प्रधानता रखने वाली को नारी की संज्ञा दी जाती है। भारतीय संस्कृति में इसका स्थान सदैव पुरुष से ऊँचा रहा है किन्तु वर्तमान पुरुष प्रधान समाज में नारी का यह महत्व कम हो रहा है। जिस कारण नारी की दयनीय स्थिति एक चिन्तन का कारण बन गया है। नारी के बारे में विविध विद्वानों ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किये हैं।

भोलानाथ तिवारी के अनुसार– "नारी का व्यक्तित्व विचित्र है। दयालुता की मूर्ति है और कठोरता की प्रतिमा है, विश्वास की जननी है और अविश्वास की ग्रंथि है तथा सरलता–सी सरल और पहेली–सी असरल है।"[66]

डॉ॰ सिन्हा ने नारी के बारे में कहा है कि– "मानव सभ्यता और संस्कृति का इतिहास नारी स्थिति के विकास से ही प्रतिबिम्बत होता है। समाज प्रेरणा, शक्ति, विश्वास सबकुछ नारी से ही पाता है। मानव मूल्यांकन में नारी सर्वप्रमुख है।"[67]

इमर्सन के अनुसार– "मनुष्य यदि भाव है तो नारी भावना है।"[68]

राजकमल विद्यार्थी हिन्दी शब्दकोश के अनुसार– "स्त्री, औरत, महिला, वामा" नारी है।"[69]

---

[66] उद्धरण कोश, भोलानाथ तिवारी (दिल्ली : बुक्स व बुक्स 1986), पृ॰ 465

[67] आशु फुल्ल, हिमाचल हिन्दी उपन्यास में नारी परिवेश का चित्रण (दिल्ली : लक्ष्मी प्रकाशन, 2008), पृ॰ 19

[68] प्रतिभा येरेकान, मोहन राकेश के नाटकों में नारी (कानपुर : रोशनी पब्लिकेशन्स, 2008), पृ॰ 12

[69] राजकमल विद्यार्थी हिन्दी कोश, वीरेन्द्र नाथ मण्डल (संपा॰) (नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2004), 114

लोकभारती प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश के अनुसार– "स्त्री, नारीतत्व, औरत"[70] है।

मानक हिन्दी कोश के अनुसार– "विशेषतः वह स्त्री, जिसमें लज्जा, सेवा, श्रद्धा, त्याग आदि गुणों की प्रधानता हो, नारी है।"[71]

नारी के समष्टिगत चेतना और उसके जीवन के विविधि पक्षों का चित्रण भारतेन्दु युग के साहित्यकारों के साहित्य में देखने को मिलता है। उनके पश्चात् आवरणों को चीरती हुई ग्रामीण नारी के सहज और निश्छल रूप को प्रेमचन्द ने भी चित्रित किया। प्रसाद के नारी पात्र भी कुछ अतीत–गौरव और प्राचीन आदर्शों का प्रतीक है। उनके पात्रों में बलिदान का भाव है परन्तु स्वतन्त्रता के बाद इसके सन्दर्भ और सम्बन्ध में परिवर्तन आया। नारी की नैतिकता से सम्बद्ध वैचारिकता का समर्थन किया। नारी ने आत्मनिर्भर होकर अपनी जागरुकता का प्रमाण दिया है। पुरातन काल से नारी को पूज्य माना गया है किन्तु आधुनिक समय तक आते–आते नारी की स्थिति में कई परिवर्तन आने लगे। जैसे–जैसे समाज में उनकी स्थिति, उसके स्थान एवं पवित्रता को ठेस लगने लगी और वह विविध समस्याओं में इस प्रकार फंस गई कि अब इनसे बाहर निकलना एक स्वप्न सा लगता है। आधुनिक कालीन लगभग सभी महिला लेखिकाओं ने अपने साहित्य में महिलाओं से संबंधित समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत किया है जिनमें नासिरा शर्मा प्रमुख हैं। नासिरा शर्मा ने स्त्री की पीड़ा को देखते हुये कहा है कि–''मैं मानती हूँ औरतों की तकलीफें बेशुमान हैं, मगर दर्द कब अपनी उलझन से आज़ाद है ? सबसे बड़ी उलझन तो आज की बदलती औरत है जिसे वह समझ नहीं पा रहा है– मर्दों को हम जज्बाती नज़र से न देखकर उन्हें व्यावहारिक तौर पर देखें तो शायद हम उनकी कुंठाओं की गिरहें सकें और उन्हें बहुत कुछ समझा सके।''[72] इस तरह लेखिका नारी सम्बन्धित समस्याओं को स्पष्ट करती है।

भारतीय संस्कृति में विवाह को पवित्र संस्कार माना गया है। स्त्री–पुरुष के

---

70 लोकभारती प्रामाणिक हिन्दी कोश, रामचन्द्र वर्मा (संपा॰) (इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 1998), पृ॰ 458

71 मानक हिन्दी कोश (तृतीय खण्ड), रामचन्द्र वर्मा (प्रयाग : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, 1996), पृ॰ 250

72 नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी (नई दिल्ली : सरस्वती विहार, 1989), पृ॰ 179–180

जीवन में विवाह महत्वपूर्ण स्थान रखता है। स्त्री और पुरुष विवाह बंधन में बंधकर दाम्पत्य जीवन को आगे की ओर बढ़ाते हैं। प्राचीन काल से चली आ रही इस संस्था में कालानुरूप परिवर्तन भी हो रहा है। जैसे–जैसे इसमें परिवर्तन होने लगा वैसे–वैसे इसमें कठिनाईयाँ भी आने लगी। ये कठिनाईयाँ विशेष रूप से नारी को लेकर अत्यधिक जटिल हैं। पुरुष और नारी के लिए आवश्यक विवाह संस्था से नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। नासिरा शर्मा ने'शाल्मली' उपन्यास में बताया है कि जब शाल्मली नौकरी से घर आती है तो नौकरानी के न आने से उसे घर का सारा काम करना पड़ता है और दूसरी तरफ उसका पति नरेश बिना उसकी मजबूरी जाने उस पर व्यंग्य कसता है। जिससे उनके दाम्पत्य जीवन में कड़वाहट आ जाती है।

''भोजन बन गया है तो......। नरेश की आवाज़ उसे दूर से आती सुनाई पड़ी अभी लगाती हूँ। कहते हुये शाल्मली काटे सलाद पर नमक छिड़कने लगी। देर है क्या? नरेश का अब भरा स्वर उभरा।

नहीं, खाना परोसती हूँ बस। कहते हुये शाल्मली तेजी से थाली में कटोरी सजाने लगी।

एक दिन महाराजिन न आए, तो तुम्हारी दशा देखने बनती है। नरेश ने शाल्मली के चेहरे पर चुहचुहाती पसीने की बूंद देखकर कहा।

घर और दफतर, कुल मिलाकर थकान तो हो ही जाती है– शाल्मली उफ। फिर वही सब्जी.....। भाई मैं खाना नहीं खा पाऊँगा।

कहते हुये नरशे उठा खड़ा हुआ। थोड़ा चखकर तो देखो न नरेश अब ज्यादा विनम्र बनने की कोशिश न करो, समझी।

नरेश ने अपनी बाजू शाल्मली के हाथ से छुड़ाते हुये कहा।"[73] नरेश का शाल्मली के साथ किया यह व्यवहार आज की नारी की दयनीय स्थिति को दर्शाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बाल विवाह प्रथा का प्रचलन जारी है। "बाल विवाह से आशय बचपन या छोटी आयु में विवाह"[74] से लिया जाता है। इस विवाह के

---

[73] नासिरा शर्मा, शाल्मली (नई दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, 1994), पृ॰ 12

[74] आर.जी सिंह, भारतीय समाज (मध्यप्रदेश : हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1987), पृ॰ 162

अन्र्तगत नारियों को तो कभी–कभी जवानी में पैर रखने से पहले ही वैवाहिक जीवन में बंधना पड़ जाता है। जिससे उसका साथ जीवन नष्ट हो जाता है।'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में नासिरा शर्मा ने अंधविश्वास के कारण नवजात शिशु के विवाह की समस्या का वर्णन किया है। जो कि उसके जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी होती है।

यह उपन्यास मुस्लिम समाज में स्त्री की स्थिति और रूढ़ियों से ग्रस्त माहौल की घुटन से बाहर निकलने के संघर्ष की अनोखी दास्तान है। महरुख इसका प्रतिनिधित्व करती है। महरुख का मंगेतर रफत भाई जब अमेरिका से वापिस आता है। यह देख महरुख के घरवाले बहुत खुश होते हैं। उनकी खुशी का कारण रफत का वैलरी नामक स्त्री से तलाक लेकर वापिस लौटना था। रफत जब महरुख को अपनी शादी के बारे में पूछता है तब महरुख अन्दर से टूटी हुई कहती है– "मैंने आपका क्या बिगाड़ा था, जो आपने मेरे मासूम बेगुनाह जज्बात को रौंदा, कुचला और मुझे अकेला छोड़ दिया...... आपकी ख्वाहिशों के पुल से गुजरती हुई मैं जिस हाल पर पहुँची थी, वहाँ सिर्फ दलदल थी..... सिर्फ दलदल। मौत और जिन्दगी के बीच लटकती वह मैं थी।"[75] यह कहकर रफत को अपने निर्णय से अप्रत्यक्ष रूप से अवगत कराती है। इसके साथ ही लेखिका ने नारी के बारे में यह भी बताना चाहा है कि आज के समाज में व्यक्ति लड़की के गुणों को नजरअंदाज कर उसकी बाह्य सुन्दरता पर आकर्षित होता है।'सात नदियाँ एक समंदर' उपन्यास की अख्तर के जीवन की यही त्रासदी है। उसकी कुरुपता उसके लिये श्राप बन जाती है। जिस कारण उसका विवाह नहीं हो पाता। अख्तर अपनी चेहरे के बारे में कहती है– "यहाँ तो मेरे पीछे भागने को कोई भी तैयार नहीं होगा। अल्लाह ने ऐसी कंजूसी से मुझे बनाया है। न नाक–नक्श अच्छे, न रंग–रूप, कहने को कहने वाले कहते हैं कि मुझमें दमक गजब का है, मगर ऐसी दमक को दिखाने से क्या फायदा, जब कोई नज़र उठाकर ही न देखें।"[76]'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में भी नारी की इसी समस्या की बात की गयी है। रेश्मा और सनोवार दोनों बहनों की शादी भी इसी

---

[75] नासिरा शर्मा, राष्ट्र और मुसलमान, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2011

[76] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक सम ंदर (नई दिल्ली : अभिव्यंजना प्रकाशन, 1984), पृ॰ 24

कारण नहीं हो पाती क्योंकि वह दिखने में सुन्दर नहीं होती। उनके लिये रिश्ता देखने आये लोग कहते हैं– "रेश्मा का रंग जरा सांवल है और सनोवार की आँखें जरा छोटी हैं।"[77] वास्तव में वर्तमान युग में सौंदर्य को ही प्रधानता देने वाले पुरुषों में केवल एक ही धुन सवार रहती है कि लड़की सुन्दर होनी चाहिए। जो कि लड़कियों के समक्ष एक समस्या खड़ी कर देता है।

नारी और पुरुष का संघर्ष

प्राचीन काल से नारी को पूजनीय माना जाता है। आधुनिक काल तक आते–आते नारी के स्थान में कई परिवर्तन हो गये हैं समाज में उसका वह स्थान नहीं रहा है जो उसे प्राचीन काल में प्राप्त था। जैसे–जैसे समाज में स्थित उसके स्थान एवं पावित्रय को ठेस लगने लगी है वैसे ही वह नई समस्याओं के घेरे में कैद होती जा रही है। आज नारी प्रायः सभी क्षेत्रों मे अपनी क्षमताओं के अनुसार आगे बढ़ रही है। इसके साथ ही आधुनिक काल तक आते–आते उसे विविध समस्याओं का सामना करना पड़ता है और इन समस्याओं में वह बहुत बुरी तरह फंस गई है कि अब इनसे बाहर निकलना एक दिवास्वपन सा लग रहा है। वह फिर भी उससे बाहर निकलने के लिए बराबर संघर्ष कर रही है। इसके लिए वह दिन–रात प्रयास करती है कि कोई न कोई सहारा अवश्य ही उसे बाहर निकालेगा। इसका एक उदाहरण देखिये –

"तुमने शादी क्यों नहीं की ? बातों के बीच में एकाएक डॉक्टर विमला ने रचना से पूछा। शादी हुई थी। रचना धीरे से बोली।

फिर ?

तलाक हो गया।

एक और उदाहरण देखिए –

मैं तो बालविधवा हूँ, जिस कुल की हूँ वहाँ दूसरे विवाह के बारे में सोचना भी पाप है, सो बचपन से ही अकेलेपन से समझौता कर चुकी हूँ। मगर जब विवाहित औरतों के दुःखों को सुनती हूँ तो सोचकर सन्तोष करती हूं कि मैं बहुतों से भली हूँ, कम–से–कम गृहस्थी के नाम पर किसी के अत्याचार की शिकार तो

---

[77] नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी (दिल्ली : सरस्वती विहार, 1989), पृ॰ 39

नहीं हूँ। अब तो मन भी सन्यास ले चुका है। इस तरह की कोई इच्छा, कोई उमंग भी मन में नहीं उठती है। सुलोचना ने अपने–आप अपने बारे में बताया।''[78]

जब नारी की समस्याएँ बढ़ने लगी तब साहित्यकारों ने उसे साहित्य में प्रगट कर अपनी ओर से उनकी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया। समकालीन महिला लेखिकाओं के साहित्य में इसका परिणाम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आधुनिककालीन लगभग सभी महिला लेखिकाओं ने अपने साहित्य में महिलाओं से संबंधित अनेक समस्याओं का चित्रण किया है। इसके लिए नासिरा शर्मा का साहित्य भी अपवाद नहीं है। अतः नासिरा शर्मा महिलाओं से संबंधित समस्याओं में एक अलग ही फार्मूला अपनाती हैं। 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास की नायिका महरूख कहती है। ''मानती हूँ औरतों की तकलीफें बेशुमार हैं, मगर मर्द कब अपनी उलझन से आजाद है। सबसे बड़ी उलझन तो आज की बदलती औरत है जिसे वह समझ नहीं पा रही है। मर्दों को हम जज्बाती नजर से न देखकर उन्हें व्यावहारिक तौर पर देखें तो शायद हम उनकी कुंठाओं की गिरहें खोल सकें और उन्हें बहुत कुछ समझा सकें।''[79] इस प्रकार वह समस्याओं के निर्माण के कारकों को ही नष्ट करना चाहती है। उनके साहित्य में नारी से संबंधित विवाह विषयक, सौन्दर्य विषयक, दहेज और विधवा नारी से सम्बन्धित समस्याओं का चित्रण मिलता है। यह सब उसके अशिक्षित होने के कारण ही हो रहा है अथवा वह पुरुषों के अहंकारी प्रवृत्ति के कारण डरी हुई है जिसके कारण अत्याचार को सहन कर रही है। इस सम्बन्ध में देखिए–वास्तव में उनकी चिन्ता के केन्द्र में पूरा स्त्री समाज है और जहाँ कहीं हैं वह ज्यादतियों का शिकार है, शोषित है, उत्पीड़ित है। इसलिए उसे शिक्षा देकर जागरूक करना होगा। स्त्री अपने पति के ऊपर सब कुछ न्यौछावर कर देती है पर पति अपनी पत्नी को एक दासी के रूप में देखता है, उसे अपने से हीन समझता है, उसको अपने पैरों की जूती समझता है। इसका एक उदाहरण देखिए –

''इसका अर्थ तो यह हुआ कि पुरुष की उपस्थिति ही सारे दुखों की जड़ है। रचना हंस पड़ी।

---

[78] नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी (दिल्ली : सरस्वती विहार, 1989), पृ० 32

[79] नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी (दिल्ली : सरस्वती विहार, 1989),, पृ० 39

किसी सीमा तक – उसे ही खुश करने की ललक में जो आपसी स्पर्धा चल पड़ती है, वास्तव में वही दुख और क्लेश को जन्म देती है। विमला ने कहा।

तो फिर अगर औरत, औरत के साथ घर बसाकर रहने लगे, तो जीवन सुखी हो जाएगा ? रचना ने दूसरा सवाल उठाया।

वहाँ फिर दूसरी समस्याएँ उभरेंगी। विमला सोच में डूब गई।

लड़ाई और न निभना, कहीं भी दो इन्सानों के बीच का मसला हो सकता है, क्योंकि सोच और नजरिए का झगड़ा वहाँ भी उठेगा। वहाँ भी आपसी समझ की जरूरत पड़ेगी। यहाँ मसला सिर्फ मर्द–औरत का होकर भी बहुत कुछ उनके सोचने और देखने के अंदाज को, उनके जुड़ने और न जुड़ने से जोड़ता है। अगर यह मान लिया गया है कि औरत और मर्द के दिमाग़ में कोई फ़र्क नहीं है तो फिर उनके अहसास की दुनिया भी समान है। यह तो हमने हज़ार साल से तय कर लिया है कि मर्द ऐसा है, औरत ऐसी है। यह पहचान हम दोनों पर थोपी हुई है। हर पल बढ़ती औरत साबित भी यही कर रही है कि वह सिर्फ़ जुल्म नहीं सह सकती है। महरुख ने कहा। वास्तव में देखा जाए तो शिक्षा ज्ञान की कुंजी है। इस शिक्षा से जो भी व्यक्ति लाभ उठाता है वह ज्ञान से परिपूर्ण हो जाता है। यह शिक्षारूपी गंगोत्री नारी के विकास में सहायक सिद्ध हुई है। इसके जरिए वह अपने जीवन में सुधार लाने में सफल सिद्ध हुई है।

पढ़ी–लिखी औरत जब अनुराग से भरती है तो अपना सब–कुछ दाव पर लगा देती है, मगर मर्द ऐसा नहीं करता है। उसके काम और कर्म के दो अलग क्षेत्र हैं यहाँ तक कि वह प्यार भले ही किसी से करता हो, तो भी वह पर स्त्री के प्रति अपना आकर्षण कम नहीं कर पाता, बल्कि अवसर मिलने पर सहवास से उपजा सुख न तो उसे पाप मालूम पड़ता है और न मानसिक क्लेश देता है। जबकि औरत कुंठित होकर आत्महत्या या आत्म–प्रताड़ना से भर–भर जाती है। रचना की आवाज भर्रा गई थी।''[80]

शिक्षा ने नारी को समस्त अंधविश्वासों से मुक्त कर तार्किक दृष्टिकोण प्रदान किया है। आज भी उसे शिक्षा प्राप्त करने में अनेक समस्याओं का सामना करना

---

[80] नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी (दिल्ली : सरस्वती विहार, 1989), पृ॰ 154

पड़ रहा है। नासिरा शर्मा ने नारी को शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली समस्याओं का चित्रण किया है। इनके उपन्यास साहित्य में स्त्री शिक्षा से सम्बन्धित अनेक समस्याएँ उभरकर आई हैं चाहे वह उपन्यास हो अथवा कहानी। जब कोई लड़की पढ़ती हुई बड़ी होती जा रही है तो उसके माता–पिता को उसके विवाह की चिन्ता भी सताने लगती है। जिसके कारण लड़की का आगे बढ़ने का उद्देश्य डगमगाने लगता है। मेरी इच्छा है कि लड़का भी देखते जाओ और इस बीच यह जितना चाहे पढ़ना चाहे पढ़ती जाए जैसे लड़का अच्छा मिला मैं इसको ब्याहने के पक्ष में हूँ। माँ ने फैंसला सुनाया। महरुख ने जब हाई स्कूल की परीक्षा पास की तभी उसे पता चला कि उसका रिश्ता बचपन में ही तय कर दिया गया था जिसके कारण वह झल्ला उठती है। उसकी दादी लड़के की तारीफ करते हुए महरुख को बताती है–"लड़का डील–डाल में तो मर्द का बच्चा लगता है। काठी बिल्कुल अपने बाप पर गई है। सुना है पढ़ने में भी बहुत होशियार है।"[81] शरबत बनाते हुए खालिदा ने सास से कहा। वह इस वक़्त शरबत का काम लड़कियों पर नहीं छोड़ सकती थी। छः साल बाद लड़का घर आया है। शक्कर कम या ज्यादा रह गई, तो बात दिमाग में अटक जाएगी।

इसलिए स्त्री को शिक्षा प्राप्त करने में कभी परिवार तो कभी बाह्म कारक रुकावट बनते हैं जिससे उसकी मानसिकता को गहरा आघात पहुँचता है और उसका जीवन कुण्ठाओं से घिर जाता है। इसलिए तेहरान विश्वविद्यालय में अपनी शिक्षा के अंतिम चरण पर पहुँचने वाली सात युवा लड़कियाँ परस्पर सहेलियाँ और अपने भविष्य की चिंता में डूबी हुई हैं। एक कहवाघर में एक फालगीरन (महिला ज्योतिष) उनके कहवे की जूठे प्यालों की बची तलछट से उनका भविष्य बता रही है। इन्हें झूठे भाग्यवादी सपने दिखा रही फालगीरन का विरोध करती है तय्यबा–मेरा भाग्य पढ़ना इतना आसान नहीं है। उसकी भाषा तुम्हारे लिए अनजान है। मेरा भाग्य करम है न कि कहवे की तलछट। यह लड़की पढ़ी–लिखी होने के कारण भाग्य में विश्वास नहीं करती है बल्कि अपने कर्त्तव्य करने में विश्वास करती है क्योंकि जैसे अच्छे–बुरे कर्म करते हैं वैसे ही उनका भविष्य बनता है।

---

[81] नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी (दिल्ली : सरस्वती विहार, 1989),, पृ० 154–155

''पुरुष द्वारा नारी का शोषण हर समाज में होता रहा है और आज की तीसरी दुनिया के देशों में नारी—वह किसी भी धर्म या संप्रदाय की क्यों न हो पुरुष समाज के शोषण का शिकार बनी हुई है। संभवतः मुस्लिम समाज में नारी की स्थिति सबसे दयनीय है। धर्म के ठेकेदार भारत जैसे धर्म—निरपेक्ष राष्ट्र में भी मुस्लिम स्त्रियों को मिलने वाले अधिकारों का विरोध करते हैं और उस विरोध के समक्ष सरकार को झुकना पड़ता है।''[82] नासिरा शर्मा के उपन्यासों में मुस्लिम नारी की दशा को गहरी संवेदना के साथ अंकित किया है।

''थोड़ा—बहुत महरुख़ के कानों में अमृता के विवाहित जीवन की बातें पड़ती रहती थीं। यह सोचकर कि जहाँ दो बर्तन होंगे, टकराहट तो होगी ही। उसने इन छोटी—छोटी बातों की तरफ़ न ध्यान दिया, न कभी अमृता को कुरेदा ही। मगर नींद की गोली खाने की नौबत भी हो सकती थी, यह उसके ख़्याल में भी नहीं आया था। अमृता इस हद तक परेशान है वह नहीं जानती थी। थोड़ी—बहुत बातें रचना और सुलोचना के मुँह से सुनकर उसने अमृता की तरफ़ देखा।''[83]

''शाल्मली आरम्भ से अन्त तक किस भाषा में नरेश से कहे कि वह औरत बने रहने में ही विश्वास रखती है और सुखी है, मगर औरत बने रहने की यह लाचारी नहीं है कि वह दुख पीती, अत्याचार सहती जाए। उसे दोष करने का न सही, अपने दोष जानने का तो अधिकार है ? यहाँ तक कि वह अपनी वाक्य शक्ति जो भगवान ने मर्द—औरत दोनों को बराबर से दी है, उसका उपयोग न करे। अपने जन्म—सिद्ध अधिकार को वह केवल पत्नी बने रहने के लोभ में छोड़ दे या फिर यह नियम क्यों नहीं बना दिया जाता है कि विवाह के लिए औरत को अपनी जबान कटवानी अनिवार्य है। शाल्मली सोचती और कुढ़ती।''[84]

वैवाहिक संघर्ष

पति—पत्नी के आपसी मधुर सम्बन्धों की वजह से ही उनका दाम्पत्य जीवन खुशियों से भर जाता है और जब उनकी मानसिकता एक—दूसरे से नहीं मिलती

---

[82] विजय राउत : नासिरा शर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, संस्करण—2011 पृ0 24

[83] नासिरा शर्मा'ठीकरे की मंगनी', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण—2013 पृ0 179

[84] नासिरा शर्मा 'शाल्मली', राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी पृ0 66—67

और एक–दूसरे के प्रति द्वेषपूर्ण व्यवहार की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है तब वह नरक भरा जीवन भोगने की स्थिति में आ जाते हैं। इसलिए सुन्दर दाम्पत्य कभी पहले हमारे परिवार की रीढ़ की हड्डी हुआ करते थे परन्तु अब वह लालचवश लचीली बन गई है। इसके परिणामस्वरूप दाम्पत्य सम्बन्धों में काफी बदलाव आने लगे हैं क्योंकि उनकी मनोवृत्तियों में एक–दूसरे के प्रति शंका अथवा भय, तनाव, द्वेष की भावना पनप रही है।

भारतीय समाज में संतान का होना नितांत आवश्यक है और इससे ही जीवन की सार्थकता मानी जाती है। जब किसी कारण पति–पत्नी को संतान प्राप्ति नहीं होती तो उन कारणों की तरफ देखते हुए सिर्फ पत्नी को ही दोषी माना जाता है और सिर्फ उसी को पीड़ा, दुख अथवा यातनाएँ दी जाती हैं। इसलिए पति–पत्नी का दाम्पत्य जीवन भले ही सुख–चैन से चल रहा हो, अगर उसे संतान की प्राप्ति नहीं होती तब दाम्पत्य सम्बन्धों में तनाव पैदा हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप उनके वैवाहिक जीवन टूटने के कगार पर पहुँच जाते हैं। नासिरा शर्मा के साहित्य में संतान न पैदा होने के कारण भी वैवाहिक सम्बन्धों में बिखराव हुआ। वस्तुतः आज भी संतान न होने के कारण तनाव के उदाहरण दिखाई देते हैं। 'मिस्र की ममी' कहानी में शादी के पश्चात् छः वर्ष तक जब योता की गोद नहीं भरती है। इसका यह उदाहरण देखिए –''शादी के छह साल गुजर गए। योता की गोद खाली है। शुरू में जिंदगी जीने की तमन्ना खुशियाँ समेटने की इच्छा ने इस ओर ध्यान न देने दिया। अब उसके मन में संतान प्राप्ति की इच्छा और अधिक तीव्र हो जाती है। इससे वह पूरी तरह टूट जाती है। इसलिए वैवाहिक संबंध बिगड़ने में सन्तान न होना भी एक कारण बनता चला जा रहा है। इसमें सास–ससुर, देवर, ननद का व्यवहार भी बदल जाता है।

कारण क्या था? विमला ने तकिए पर सिर टिकाकर छत की बल्लियों को ताकते हुए कहा। कारण ही कारण थे। उन्हें मुझ पर शक था। जब हाथ उठाने लगे तो फिर न मुझसे, न मेरे घर वालों से सहन हुआ। कितने ही साल चिता पर गुजार दिए मैंने! रचना ने गहराती आवाज में कहा।

बच्चा? विमला उठकर बैठ गई बच्चा वह मुझसे नहीं, अपनी बुआ की लड़की से चाहते थे, जिससे उन्होंने प्रेम–विवाह कर रखा था।

दुनिया के भय से वह मुझे . . .धीरे–धीरे सब खुलता गया। मेरे पास एक ही चारा था कि अपने सम्मान की रक्षा करूँ। सुहाग, पति, भविष्य, सन्तान, घर सब–कुछ उस कलह में खत्म हो गया था। अब तो यह बहुत पुरानी बात हो गई।''[85] इतना कहकर रचना के उदास चेहरे पर हंसी बिखर गई।

इस भौतिकवादी युग में नित्य प्रतिदिन परिवार के अन्दर परिवर्तन हो रहा है। समाज के बदलने से परिवार में भी परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन के जरिए लोगों में बदलाव आ जाता है। लोगों की निजी आदतें भी बदल जाती हैं लेकिन वह जितनी तेजी से प्रगति की ओर भाग रहा है उतनी ही तेजी से वह अपनी संस्कृति, समाज और परिवार के प्रति उदासीन दिखाई देता है।

समाज में वैवाहिक जीवन का स्थान महत्वूपर्ण है और यह जीवन पति–पत्नी के सामंजस्य पर निर्भर होता है। इसलिए उन दोनों में परस्पर अविश्वास, स्त्री–पुरुष की आत्मनिर्भरता, स्त्री–पुरुष की समानता आदि कारणों से दाम्पत्य जीवन में बिखराव आकर एक दिन स्थिति चरमसीमा पर पहुँच जाती है। इस प्रकार बदलते परिवेश से वैवाहिक सम्बन्ध भी समस्या से घिरा हुआ और संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है। यह उनकी मानसिकता में आये बदलाव का कारण ही है जिसमें पारिवारिक रिश्ते भी निजी स्वार्थों के कारण कमज़ोर पड़ते चले जाते हैं।

''भारतीय संस्कृति में विवाह को पवित्र संस्कार माना है। स्त्री–पुरुष के जीवन में विवाह महत्वपूर्ण स्थान रखता है। स्त्री और पुरुष विवाह बंधन में बंधकर दांपत्य जीवन में आगे की ओर चलते हैं। विवाह एक ऐसी संस्था है जो 'स्त्री तथा पुरुष को नैतिक नियमों का पालन करते हुए यौन संबंध स्थापित करने का अधिकार देती है।''[86] मानव जीवन में समुचित संतुलन लाने वाली विवाह एक प्रक्रिया है। विवाह वह नियम है जो विषम लिंगियों के मध्य सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था स्थापित करता है। प्राचीन काल से यह प्रथा भारतीय समाज में व्यवहृत दिखाई देती है। वर्तमान युग तक प्रत्येक समाज तथा जाति में विवाह का कोई–न–कोई रूप हमें दिखाई देता है। विवाह मानव जीवन में यौन संतुष्टि, स्नेह, सहानुभूति आदि की परिपूर्ति करने वाले महत्वपूर्ण साधनों में से एक है। साथ ही वह समाज में नैतिकता

---

[85] नासिरा शर्मा, शाल्मली, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी पृ॰ 18

[86] डॉ. महेन्द्र नाथ श्रीवास्तव, समकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृ0 53

प्रस्थापित करने में भी भूमिका निभाता है। प्राचीनकाल से चली आ रही इस संस्था में कालानुरूप परिवर्तन हो रहा है। जैसे ही इसमें परिवर्तन होने लगा वैसे इसमें कठिनाइयाँ भी आने लगीं। ये कठिनाइयाँ नारी को लेकर विशेष रूप से अत्यधिक जटिल हैं। पुरुष और नारी के लिए आवश्यक विवाह संस्था में नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इससे संबंधित कई समस्याओं का जिक्र नासिरा शर्मा के साहित्य में प्राप्त होता है–

सौंदर्य की समस्या

सौंदर्य नारी की अमूल्य निधि मानी जाती है। सुंदर न होने के कारण कई नारियों को विवाह से दूर रहना पड़ता है। समाज में सौंदर्य नारी के विवाह के लिए एक अहं मुद्दा बन गया है। नारी की यह महत्वपूर्ण समस्या नासिरा शर्मा के साहित्य में परिलक्षित होती है। 'सात नदियाँ एक समंदर' में अख्तर के लिए कुरूपता एक शाप बन गई है। इसी कारण उसका विवाह नहीं हो पाता। वह अपनी सूरत को देखकर अपने विवाह के बारे अपने आप से कहती है, ''यहाँ तो मेरे पीछे भागने को कोई भी तैयार नहीं होगा। अल्लाह ने ऐसी कंजूसी से मुझे बनाया है। न नैन–नक्श अच्छे, न रंग–रूप कहने को कहने वाले कहते हैं कि मुझमें दमक गजब की है, मगर ऐसी दमक खाने से क्या फायदा, जब कोई नजर उठाकर ही न देखे।''[87] 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में भी इस समस्या का चित्रण मिलता हैं। सौंदर्य को ही सब कुछ मानने वाले पुरुषों में एक ही धुन सवार रहती है कि, लड़की सुंदर होनी चाहिए। ताया महरुख की दोनों बहनों की बदरूपता के कारण रिश्ता टाल देती है– ''रेश्मा का रंग जरा सांवला है और सनोवार की आँखे जरा छोटी।''[88] इसी कारण ताया उन्हें अपनी बहू नहीं बनाते।

दहेज की समस्या

दहेज सिर्फ भारतीय समाज में जहरीले विष के समान फैल रहा है। इससे समाज में अनेक समस्याएँ उत्पन्न होकर समाज पर दूरगामी प्रभाव पड़ रहा है। दहेज के कारण आज समाज में कई नव वधुओं को बेरहमी से जलाया जाता है तो

---

[87] नासिरा शर्मा,'सात नदियाँ एक समन्दर,' अभिव्यंजना प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 24

[88] नासिरा शर्मा, 'ठीकरे की मंगनी', सरस्वती विहार, दिल्ली, 1989, पृ0 39,

कई जगह दहेज देने में पिता असमर्थ होने के कारण लड़की को अविवाहित रहना पड़ रहा है। इस समस्या के कारण मध्य वर्ग के लोगों को ज्यादा हानि पहुँच रही है। इन सबसे लड़की के पिता की मानसिक परेशानी तो बढ़ रही है, नवविवाहित लड़की को अपनी जिंदगी तनाव में काटनी पड़ रही है। 'शाल्मली' उपन्यास में इस समस्या का वर्णन मिलता है।''इस आदमी को, जो उसका पति है, जिसका नाम नरेश है, इसको कभी मुक्तिबोध का नाम दिया था। गुजरता समय चीज़ों को कितना बल देता है! एकाएक विश्वास नहीं होता है कि जिसने उसे मुक्ति का संदेश दिया था, उसी ने सबसे बड़ा कारावास दे डाला और यातना शिविर के न समाप्त होने वाले ये रात–दिन...''[89]

''मुस्लिम समाज के अपने कानून हैं। एक मुस्लिम पुरुष एक साथ चार स्त्रियों से विवाह कर सकता है लेकिन स्त्री को यह स्वतंत्रता नहीं दी गई है। वह एक से अधिक विवाह नहीं कर सकती। परंतु उन्हें मुस्लिम परिवारों में संपत्ति के क्षेत्र में पुरुषों के समान अधिकार मिला हुआ है तथा उसका वह मनमाने रूप से प्रयोग कर सकती है।''[90] मुस्लिम समाज में स्त्रियों के लिए कई कानून मौजूद हैं, उन्हीं में से एक है – मेहर। मेहर स्त्री के भविष्य की दृष्टि से सुरक्षा रकम के रूप में वर पक्ष से पक्की हो जाती है जो भविष्य में वर पक्ष ने वधू को अगर तलाक दे दिया तो वह रकम वधू को मिलती है। प्राचीन काल में मेहर की रकम भी मामूली होती थी। लेकिन उसे ज्यादा मान–सम्मान था, कीमत थी।''आज के जमाने में मेहर प्रतिष्ठा का साधन बन गया है। इस कारण मेहर की रकम लाख रुपए में बाँधी जाने लगी है। परंतु बाद में कानून में जैसा लिखा है इसका पालन नहीं किया जा रहा है। स्त्रियों के संरक्षण के लिए बँधाई गई मेहर की रकम ही उनके लिए जब समस्या बनती है तब वह स्त्री कहीं की नहीं रहती है।''[91] एक और उदाहरण देखिए –

''मुझे ऐसा लगता है, सरोज कि हम औरतें सम्बन्धों के लिए जीती हैं। उन्हें बांधते हुए क्षितिज के उस पार तक जाने का संकल्प ले बैठती हैं। हमारी गहराई

[89] नासिरा शर्मा,'शाल्मली,' राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी पृ0 14

[90] डॉ. महेन्द्र नाथ श्रीवास्तव, समकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृ0 316

[91] विजय राउत, नासिरा शर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व,पृ0 208–210

और कोमलता हमारी कमजोरी कहलाती है और हमारे सम्बन्ध, बन्धन यह कहाँ का न्याय है? शाल्मली ने अपने से हट कर सबकी बात कही।

कभी–कभी मुझे लगता है कि मर्द एक ताकतवर घोड़े के समान है, जो दौड़ना जानता है, मगर उसकी आँखों पर पड़ी पट्टी उसे केवल उतना ही छोटा–सा रास्ता दिखाती है, जिस पर उसे दौड़ना होता है। मानवीय सम्बन्धों की सूक्ष्मता, व्यापकता, विस्तार का इन्हें जरा भी ज्ञान नहीं और ये भावनाएँ और संवेदनाएँ, बल के जोर पर नहीं आतीं। शाल्मली ने धीरे–धीरे टुकड़ों से वाक्य फैलाए।''[92]

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में अमजद अपनी लड़कियों के ब्याह के लिए चिंतित होते हुए कहते हैं।''सात बच्चों की जिम्मेदारी,ऊपर से आमदनी की किल्लत, इस हालत में वे जल्द से जल्द लड़कियो के हाथ पीले कर देना चाहते थे।उसके सामने पाँचो लड़कियाँ ताड़ के पेड़ की तरह हर रोज़ बढ़ रहीं थीं, जिन्हे पढ़ाना था, ब्याहना था। लाख वह शादियाँ सादगी से करें,तो भी खाली हाथ, नंगी–बुच्ची लड़कियाँ थोड़ी घर से रुखसत करेंगे।''[93]

नयी और पुरानी पीढ़ी का संघर्ष

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में नयी और पुरानी पीढ़ी का संघर्ष यथावत् देखने को मिलता है। भारत की प्राचीनता से चली आ रही संस्कृति पर विदेशी संस्कृति का प्रभाव पड़ा है। भारतवासी अपनी संस्कृति को भूलकर विदेशी संस्कृति के आचार–विचार, खान–पान, रहन–सहन आदि को अपना रहे हैं। जिस कारण नयी और पुरानी पीढ़ी के बीच विरोधाभास, विसंगतियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

एक पीढ़ी प्राचीनता से जुड़ी रहना चाहती है तो दूसरी पीढ़ी नवीन संस्कृति को अपनाना चाहती है। लेकिन स्थिति यह है कि कौन, कौन–सी परंपरा को अपनाना चाहता है, अभी तक यह तय नहीं हुआ। 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास से एक उदाहरण देखिए – अब्बू महरुख़ की टूटन को समझ रहे थे और उस सायत को कोस रहे थे, जब यह रिश्ता वजूद में आया, जो आज उनकी बेटी की ज़िन्दगी

---

[92] नासिरा शर्मा, 'शाल्मली', राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी पृ0 102
[93] नासिरा शर्मा'ठीकरे की मंगनी', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 19

को वीरान कर गया। रफ़त मियां के लिए उनके दिल में ग़म और गुस्से का तूफ़ान उमड़ रहा था। कहीं मिल जाते, तो दो धप लगाकर पूछते, मियां शरीफ़ों के यही चलन है क्या ? खानदानी लोग यह कब से करने लगे ? मेरी लड़की में कमी क्या थी ? वफ़ादारी और इन्साफ़ का क्या यही तकाजा है ? अगर नई तालीम इसी का नाम है तो हम पुराने लोग बहुत अच्छे हैं। कम–से–कम मजबूत रिश्तों की ठोस जमीन पर तो खड़े हैं। चाहे खाली हाथ, खाली जेब ही सही, मगर हमारे दिल मोहब्बत और इज्जत से लबरेज तो हैं। मर्द भी टूटता है, मर्द भी जुड़ता है, मर्द भी बलिदान करता है, मगर हाँ ऐसे मर्दों की गिनती कम है और औरतों की ज्यादा। कुछ दिन बाद इसका उलटा भी हो सकता है और वजन बराबर भी आ सकता है। औरत को बराबरी मिले तो उसका मुक़ाबला भी बराबर वाले से करना ठीक है। उस वक़्त उसका भी काम, कर्म का क्षेत्र मर्द की तरह ही अलग–अलग होगा, तब उसके लिए मर्द जिन्दगी की न धूरी होगी, न खिड़की, जिससे वह दुनिया देखती है, तब वह एक इन्सान की तरह मर्द की दोस्त होगी।'' महरुख ने रचना को समझाते हुए कहा।

''अगर ऐसा हो गया तो मैं समझूँगी कि हमारा आज का संघर्ष सफल हुआ विमला ने उसी सोच में डूबे हुए कहा।

यकीनन वह खूबसूरत बराबरी का समाज एक दिन आयेगा, जब औरत औरत होकर भी 'गुलाम' नहीं होगी। कल के उस इन्कलाब की कश्मकश में हम पिस रहे हैं, इसलिए कभी–कभी नाउम्मीद भी हो जाते हैं।''[94]''सदियों से बनती–बिगड़ती औरत की मुख़्तलिफ़ तस्वीरें उनके सामने आ–आकर उन्हें सोचने पर मजबूर कर रही थीं। कहीं बहुत गहरे उनका दि़ल और दिमाग यह बात मान रहा था कि खुदा के बनाए दोनों बन्दों में न कोई छोटा है न बड़ा, न कोई कम है न ज्यादा, हाँ, एक–दूसरे से अलग जरूर हैं तांकि संसार में नीरसता व एकाकीपन न आ सके। इसीलिए जो एक के पास है वह दूसरे के पास नहीं है। यहाँ लड़ाई एक–दूसरे के रूप–आकार की छीनने की न होकर बराबर की हैसियत से जीने की

---

[94] नासिरा शर्मा'ठीकरे की मंगनी', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 148

है।''[95]

''महरुख की दलील पुरजोर थी कि जिस ख़ानदान में लड़के विलायत जाने से नहीं झिझकते, उस घर की लड़कियाँ इण्टर करके क्यों घर में कैद हो जाएँ ? उनको अपने दिमाग का इस्तेमाल करने का भी मौका दें ... आज शाहीन एम.ए. कर चुकी है, अच्छे घर में ब्याह कर भी जा रही है। कह रही थी कि मैं घर नहीं बैठूंगी, नौकरी मिल गई तो नौकरी करूँगी, वरना पी–एच.डी. या फिर डबल एम.ए. ही सही। सुनकर महरुख़ के दिल में ठण्डक पड़ गई थी।''[96]

''हरगिज नहीं – यह सहने का नहीं, बल्कि सही फ़ैसले का सवाल तुम्हारे सामने खोलकर रख रही हूँ – अगर न सहना ही सोचकर सब कुछ तज दोगी, तो भी नई ज़िन्दगी में तुमको ही वे हालात सहने पड़ेंगे, किसी भी हालत में तुम उलझन से भाग नहीं सकती हो – डटकर मुकाबला करो – पहले अपने को आंको, फिर पति को, और देखो, गलती कहाँ पर किसकी है – फिर खुलकर पति से बात करो – शादी के दस साल बाद – दो बच्चों की माँ बनकर तुम ज़िन्दगी से खेल नहीं सकती हो। माना, तुम्हें पति नहीं चाहिए, तुम पैरों पर खड़ी हो, मगर बच्चों को बाप चाहिए – माँ–बाप वाला घर चाहिए। उनका हक़ तुम जज़्बात के धारे में बह कर नहीं छीन सकती हो। अपने फ़ैसले में उन्हें भी शरीक करना पड़ेगा। महरुख ने कहा।

मैं क्या हम सब तुम्हारे साथ हैं, फिर ये आँसू क्यों ? याद रखो अमृता, मुहब्बत देने से मुहब्बत बढ़ती है और नफ़रत देने से नफ़रत – इन्सान की पहचान उसके जज़्बात होते हैं जो उसे जानवरों से अलग करते हैं। मगर उस जज़्बात की रौ में इंसान का जानवर बन जाना किसी हालत में भी मुनासिब नहीं है। कहकर महरुख़ ने अमृता का चेहरा पोंछा।''[97]

''जब दोनों घर लौटे तो घड़ी रात के दस बजा रही थी। हवा में खुनकी बढ़ गई थी। अन्ना बुआ ने खाने को पूछा तो रूही ने 'अभी नहीं' कहकर इनकार कर दिया और कमरे में जाकर उसने साइडबोर्ड खोला और उसमें से रेडवाइन की

---

[95] नासिरा शर्मा'ठीकरे की मंगनी', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 149
[96] नासिरा शर्मा'ठीकरे की मंगनी', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 165
[97] नासिरा शर्मा'ठीकरे की मंगनी', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 180

बोतल निकाली, फिर रोहन की तरफ देखकर धीरे से बोली आज मैरिज एनिवर्सरी है। हम तीनों मिलकर मनाते हैं।

रूही ने तीन गिलास बनाए। तीन सिगरेटें जलाईं, फिर म्यूज़िक ऑन कर बोली, आज काज़िम को जलने दो, तुम मेरे साथ डांस करोगे, आओ कहकर रूही ने हाथ आगे बढ़ाया।''[98]

संक्षेप में कह सकते हैं कि नारी चाहे शिक्षित हो या अनपढ़, ज्ञानवान हो या ज्ञानहीन, सुहागन हो या फिर विधवा दोनों स्थितियों में ही उसे पुरुष प्रधान समाज के दवाब में सारा जीवन बिताना पड़ता है। नारी को केवल भोग विलास की वस्तु समझने के साथ–साथ नारी से वासनापूर्ति के लिये उसके साथ दुष्कर्म करना वर्तमान समय में बुराई बन चुका है। नारी को उपेक्षाजनक दृष्टि से देखना तो जैसा भारतीय समाज का प्रमुख ध्येय बन चुका है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में नारी विषयक समस्याओं का वर्णन बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है।

2. समुदाय

सांप्रदायिक आधार पर बटे दो समुदायों के बीच झगड़े और मारकाट को साम्प्रदायिकता कहते हैं। साम्प्रदायिकता हमारे देश की एक गंभीर समस्या बनी हुई है। इसी कारण देश के तीन टुकड़े हो चुके हैं फिर भी इस समस्या का कोई हल नहीं निकल सका है। प्रसिद्ध इतिहासकार बिपिन चंद्र के अनुसार, ''साम्प्रदायिकता का आधार ही यह धारणा है। भारतीय समाज कई ऐसे सम्प्रदायों में बंटा हुआ है, जिनके हित न सिर्फ अलग हैं बल्कि एक–दूसरे के विरोधी भी हैं। अलग–अलग समुदायों और समूहों के हिन्दू, मुस्लिम सिख और ईसाई सिर्फ धार्मिक ही नहीं, बल्कि धर्म से इन मामलों में राजनीति भी है। इसी विश्वास से साम्प्रदायिक विचारधारा का जन्म हुआ और इसी की वजह से धर्मधारी समाज के लोगों के धर्मनिरपेक्ष हितों को भी अलग–अलग बांटकर देखा जाने लगा।''[99]

---

[98] नासिरा शर्मा, 'पारिजात', किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण–2017 पृ0 250

[99] अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की परिभाषित शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2012, पृ.367

हिन्दू मुस्लिम एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए गांधी जी के निजी अभियान के अलावा राष्ट्रीय आन्दोलन, साम्प्रदायिक सोच के खिलाफ एक सतत् जन अभियान कभी खड़ा नहीं हो सका। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि साम्प्रदायिक विचारधारा बिना हिंसा के भी पनप सकती है लेकिन साम्प्रदायिक हिंसा बगैर साम्प्रदायिक विचारधारा के प्रचार के घटित नहीं हो सकती।

नासिरा शर्मा ने अपनी रचनाओं में सम्प्रदायवाद को व्यक्त किया है। सम्प्रदायवाद का सम्बन्ध धर्म, पाखंड एवं विकृत मानसिकता से है। अधिकतर इनकी रचनाओं में सामाजिक चिंतन, संवेदना और विचारों की मनोभूमि है, जिसमें मनुष्य–मनुष्य के बीच में धार्मिक और वैचारिक दूरियाँ हैं।

''सम्प्रदाय शब्द बहुधा धर्म से जुड़कर आता है, जिसमें यह भ्रम पैदा है कि दोनों पर्याय हैं, पर वास्तव में ऐसा नहीं। धर्म में जहाँ व्यापक विस्तृत एवं विशाल विचारधारा समाहित होती है, वहीं सम्प्रदाय सीमित एवं खंडित विचारधारा वाले समूह के लिए प्रयुक्त होता है। धर्म, संघ का समर्थन करता है और सम्प्रदाय संघटन की हिमायत। 'धर्म' माने ज्ञान' धर्म हमें सदाचार और नैतिकता की शिक्षा देता है। दुनिया का कोई भी धर्म हमें गलत रास्ता नहीं बताता। वह तो मानवता का पक्षधर होता है। इसीलिए व्यक्ति का धार्मिक होना माने मानवता से सराबोर होना है।''[100]

नासिरा शर्मा ने वर्तमान परिवेश में साम्प्रदायिक दंगों को लेकर काफी सामाजिक चिन्तन किया है। जिसमें प्रमुख रूप से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जो साम्प्रदायिक दंगे हुए हैं उनको लेखिका ने 'इब्ने मरियम' कहानी में बताया है।

'इब्ने मरियम' की कहानियां विभिन्न देशों में एक ही समस्याओं से जूझ रही इंसानी संवेदनाओं की कहानियां हैं। इनका विस्तार पूरे विश्व में फैला है। ये भूगोल को पार करती कहानियां हैं। किन्तु इनका कालखंड एक है। नासिरा का कहना है अमोख्ता (पंजाब), जड़े (युगांडा) जैतून के साए (फिलिस्तीन) काल सूरज (इथोपिया) कागजी बादाम (अफगानिस्तान) तीसरा मोर्चा (कश्मीर) मोम जामा (सीरिया) मिस्टर ब्राउनी (स्कॉट लैंड) काशीदाकारी (बांग्लादेश) जुलजुता (कनाडा) पुल–ए–सरातर

---

[100] फातेमा शेख अफरोज, नासिरा शर्मा का कथा साहित्य वर्तमान समय के सरोकार, अतुल प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2012, पृ.274

(इराक) जहानुमा (टर्की) इब्ने मरियम (भोपाल) इन सारी कहानियों में उस धारा को संवेदना के समंदर से पकड़ने की कोशिश की है जो मानवीय है।

'जहाँ फब्बारे लहू रोते हैं' रिपोर्ताज में नासिरा शर्मा ने अपने विचारों को दर्शाया है। वर्तमान में ईरान आलोचना आतंक और सम्प्रदाय का मुस्लिम देश है, जिसमें लोगों के बहुत से स्वार्थ और असमानताएं छिपी हुई हैं।

आज का ईरान घुटन, आतंक, सन्देह, द्वेष, प्रतिशोध से भरा ऐसा अन्धा कुआँ हो रहा है। जिसमे रहने वालों में से केवल वही ऊपर खुला आसमान देख रहे हैं जो पानी के ऊपर हैं और सत्ताधारी हैं। जिन्हें आसमान का केवल एक ही रंग नजर आता है जैसा कि वे स्वयं देखना चाहते हैं। उनका पूर्व विश्वास है कि यह रंग संसार के सारे आसमानों को अपने रंग में रंग लेगा, इसलिए उस कुएँ से उभरने वाले हर सिर को वे कुचल देते हैं। मगर इसका अन्त कभी तो होगा। इस तथ्य को भूल भय से आतंकित, सस्ता कहीं हाथों से चली न जाए, मौत का नृत्य तेज कर रहे हैं। मगर वे नहीं जानते कि ये बढ़ते कब्रिस्तान, जलती किताबें संघर्ष जारी रहने की निशानियाँ हैं।

नासिरा शर्मा ने अपने रंचना संसार में सांस्कृतिक चिंतन के बुद्धिजीवियों को समाज के अनुकूल बनाने का प्रयास किया, जिसमें सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं साम्प्रदायिक विचारों को लेखबद्ध किया उनके विचार एक सामाजिक वातावरण को तैयार करने के लिए साम्यवादियों से युक्त बनाया है, जिसमें समाज की विभिन्न यातनाओं को युक्ति संगत उन्हें अनुकूलित करने का प्रयास किया है।

रचनाकार ने अपनी रचनाओं में भारत में शिक्षा का व्यापक प्रसार होगा तभी मुस्लिम समुदाय के लोग पूंजीवाद एवं औद्योगिक प्रगतिशीलता की ओर अपनी विचारधारा एवं अवधारणाओं को अपनाने का प्रयास करेंगे, जिससे गरीबी और दरिद्रता का ह्रास होगा। जीवन के मूल्य एवं जीवन जीने की संस्कृति का व्यापक विस्तार होगा। मुस्लिम संस्कृति वर्तमान समय में भी कठमुल्लेपन की संस्कृति में जी रहे हैं। जिस कारण से उन पर आधुनिकता का प्रभाव नहीं पड़ा।

आज आवश्यकता है कि भारत में शिक्षा का व्यापक प्रचार एवं प्रसार हो तथा आर्थिक एवं सामाजिक समानता का लक्ष्य प्राप्त किया जाए। गरीबी, अशिक्षा एवं सामाजिक शोषण की दहलीज पर खड़े समुदायों को राष्ट्र की मुख्यधारा में नापा

जाए। यदि आपके पड़ोसी को चैन नहीं है तो आप अधिक दिनों तक चैन से रह नहीं पाएंगे। सुख और समृद्धि के लिए शांति आवश्यक है और इस शांति का मार्ग नासिरा शर्मा के शब्दों में निम्न प्रकार है। ''यह जिम्मेदारी देश के जवान माँ–बाप पर है कि वे अपने नए जन्मे बच्चों को ऐसा संस्कार दें, जो वह पहले हिन्दुस्तानी बने, बाद में हिन्दु–मुसलमान। इससे दंगे, फसाद खत्म होंगे, मगर हाँ एक वर्ग को भारी हानि उठानी पड़ेगी। जो 'बांटो' और 'राज करो' की नीति अपनाकर दूसरों की सुरक्षा, शांति, जान–माल की कीमत पर अपनी जेबें भरते हैं, उनके लिए जरूरी है कि वे अब नया काम–धंधा तलाश करें और मेहनत की रोटी कमाने पर विश्वास करें और दूसरों का गला काटना और कटवाना बंद करें। बस, अब बहुत हो चुका।''[101]

नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में वर्तमान समय के विभिन्न सरोकार मानसिक द्वन्द्वता के प्रतीक माने जाते हैं। इसी क्रम में समाज में 'दूसरा ताजमहल' कहानी में अक्षयवट नामक उपन्यास में पूँजीवादी व्यवस्था के द्वारा समाज की भ्रष्टता को दर्शाया है।

3. जल संकट

पृथ्वी पांच तत्वों से मिलकर बनी है पृथ्वी, आकाश, अग्नि, वायु एवं जल। आज से लगभग डेढ़ करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी पर मानव जाति का उद्‌भव हुआ है। चारों ओर हरे–भरे जंगल, झरने और नदियाँ थी इस वातावरण में जब मनुष्य ने अपनी आँखें खोली होगी। वह बड़ा ही मनोरम रहा होगा। परन्तु देखते ही देखते सब कुछ परिवर्तित हो गया है। आज जल संकट की चिन्ता सभी जन को सता रही है। भूमिगत जल की निरन्तर निकासी से जल–स्तर लगातार खिसकता जा रहा है। यदि हमने जल संग्रहण के प्रति उदासीनता दिखाई तो देश को जल संकट की समस्या के दिन देखने पड़ सकते हैं। मानव, पशु–पक्षियों, जीव–जन्तुओं, वनस्पतियों के जीवित रहने के लिए जल अत्यन्त आवश्यक है। यह उनके जीवन के लिए एक अनिवार्य वस्तु है। जल और जीवन का चोली–दामन का साथ है।

---

[101] अहमद एम. फिरोज, नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृ.101

वास्तव में जीवन का उद्भव ही जल से माना गया है। अब तो वैज्ञानिक जीवन के लिए जल की आवश्यकता ऑक्सीजन से भी अधिक मानी गई है। ऐसा माना गया है कि जिस ग्रह पर जल, नाइट्रोजन, कार्बन और अनुकूल ताप है वहां, भले ही ऑक्सीजन नहीं हो परन्तु जीवन की उपस्थिति असम्भव नहीं है, जितने ही जीव हमें पृथ्वी पर मिलते हैं उससे भी अधिक जीव पानी में पाये जाते हैं। इसलिए पृथ्वी का निर्माण करने वाले तत्वों की सुरक्षा करना हमारा कर्त्तव्य और हमारी आवश्यकता है क्योंकि यदि इन तत्वों पर कोई संकट आया तो पृथ्वी पर जीवन समाप्त हो सकता है। नासिरा शर्मा ने'कुइयाँजान' उपन्यास में सकारात्मक सामाजिक उद्देश्यों को ध्यान में रख भविष्य में आनेवाली समस्याओं की ओर इशारा किया है। इस उपन्यास में पानी की विभीषिका इन शब्दों से आरम्भ होती है– "मोहल्ले के कुंए बरसों पहले कूड़े से पाट दिए गये थे। एक–दो घरों में हैंडपाइप थे। जो खराब पड़े थे। मस्जिद वाली गली से मिली अंदरसेवाली गली थी। वहाँ बड़े–बड़े घर थे। उनके यहाँ भी पानी की हाय–तौबा मची हुई थी। शिव मंदिर के पुजारी बिना नहाए परेशान बैठे थे। उन्होंने न मन्दिर धोया था, ना भगवान को भोग लगाया था। उनके सारे गागरे–लोटे खाली लुढ़के पड़े थे। नल की टोंटी पर कई बार कौआ पानी की तलाश में आकर बैठ उड़ चुका था। गरमी ऐसी कि पसीना पानी की तरह शरीर से बह रहा था। पता नहीं किस आशा में पंडित जी बार–बार नल खोलते, फिर बंद कर बड़बड़ा उठते, पग–पग रोटी, उग–उग नीर........मगर अब...... ई शहर का कईसा हाल बनाये दियो हो भगवान। न पानी है, न रोटी।"[102] लेखिका ने इस चिन्ताओं को किसी एक देश की न मानकर समूचे विश्व की की चिंता बताया है। सचमुच आज जल की कमी एक भीषण समस्या बनती जा रही है। "आज विश्व में आँकड़ों द्वारा ज्ञात होता है कि लगभग एक अरब से ज्यादा लोगों को साफ पानी पीने के लिए उपलब्ध नहीं है। दो अरब लोगों को नहाने धोने के लिए पानी नहीं मिल पाता, जिससे लोग अनेक तरह के रोगों का शिकार हो रहे हैं। मृत्यु दर दिन–प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है। भारत में गाँव, कस्बों, शहरों, तालाबों और नदियों का पानी कीटाणु युक्त होता है। उसमें प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले

---

[102] नासिरा शर्मा, कुइयाँजान (नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, 2005), पृ० 77

संखिया की मिलावट होती है। सारे विश्व में 161 प्रमुख नदियाँ एक से अधिक देशों से होकर गुजरती हैं। दुनिया के कुल नदी प्रवाह का 70 प्रतिशत इन्हीं में है और जिन देशों में होकर यह गुजरती है। उनमें संसार की 40 प्रतिशत जनसंख्या रहती है। पानी के कारण सामाजिक, आर्थिक और राजनीति तनाव पनपते हैं। जैसे–भारत और पाकिस्तान, भारत और बंगलादेश, भारत और नेपाल, सीरिया और तुर्की के बीच। स्वयं भारत में कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच कावेरी नदी को लेकर तनाव की स्थिति पनप चुकी है।"[103] पानी को लेकर इन विवादों को देख इस समस्या की गहराई का ज्ञान होता है। इस सम्बन्ध में लेखिका मनुष्य को जल समस्या का जिम्मेदार मान कर कहती है– "हमने धरती से पानी लिया तो खूब मगर जितना उसे देना था, वो नहीं दिया। इस धरती पर हुए हमारे अत्याचार नहीं हैं, जो हमें आज इस दुर्दशा में डाले हुये हैं, फिर तलवारे खिंचती थी और अब देखना जल को लेकर प्रांतों के बीच युद्ध छिड़ेगा। ताजुब नहीं कि यह गृह–युद्ध एक विश्व महायुद्ध में बदल जाए।"[104]

यह सही कहा गया है कि जल ही जीवन है बिना जल के हम जीवित नहीं रह सकते। जल हमारी बुनियादी जरुरतों में से एक है। आज वैश्वीकरण के इस दौर में साफ–सुथरा जल मिलना एक स्वप्न सा लगता है, आज पानी के लिए चारों ओर शोर मच रहा है। पृथ्वी पर 71 प्रतिशत पानी और 29 प्रतिशत भूमि है। फिर भी हमने मीठे पानी के जलस्रोतों को अपने ही हाथों नष्ट करना जारी रखा तो वह दिन दूर नहीं जब चारों ओर अकाल होगा और एक बूँद पानी के लिए हमें तरसना पड़ेगा। इसी बात को नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास'कुइयाँजान' में दर्शाया है कि–"एक समय था जब पग–पग रोटी, डग–डग नीर होता था, लेकिन आज न रोटी है, न पानी है।"[105] जल समस्या के संदर्भ में इस उपन्यास में बार–बार इस बात को उभारा गया है कि मनुष्य चाहे आधुनिक टेक्नालॉजी में कितना ही आगे क्यों न निकल आये या फिर प्राकृतिक जल संपदा के अक्षय स्रोतों के साथ मानवीय

[103] नासिरा शर्मा, कुइयाँजान (नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, 2005), पृ॰ 77

[104] नासिरा शर्मा, कुइयाँजान (नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, 2005), पृ॰ 74–75

[105] वाङ्मय (जून 2009), डॉ॰ एम.फीरोज़ अहमद (संपा॰) (अलीगढ़ : लाल बहादुर शास्त्री मार्ग, 2009), पृ॰ 71

महत्वाकांक्षाओं की खिलवाड़ भले ही क्षणिक सुख–समृद्धि के रूप में नज़र आता हो किन्तु वह अपनी जीविका के लिए भीषण और भयंकर परिणामों को भी आमंत्रित कर रहा है। लेखिका ने सामाजिक सोच और अपनी दृष्टि में प्रकृति के प्रति मानव का उच्छृंखल होना दर्शाया है। तब क्या वास्तविकता से दूर जाया जा सकता है। क्या धरती का तीन चौथाई भाग पानी से घिरा होने के बावजूद भी आज सब प्यासे तड़पने को विवश हो रहे हैं ? प्रकृति के प्रति बढ़ती हमारी बेरुखी के परिणामस्वरूप हम जिस संपदा को नष्ट कर रहे हैं। वह दिन दूर नहीं जब महज पानी को लेकर समूचा विश्व समुदाय एक महायुद्ध को तैयार होगा। यह अचानक और अकारण नहीं हुआ बल्कि पिछले कुछ सालों से पर्यावरण के असन्तुलन से उत्पन्न संकटों और दुष्परिणामों की ओर तमाम दुनिया के वैज्ञानिकों, बुद्धिजीवियों, राजनेताओं का ध्यान गया है। अनेक सरकारी–गैर सरकारी संगठन, राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ भविष्य में होने वाले जल संकट के बारे में सोच कर हैरान है। संकट की चिन्ता ने लोगों को इतना विचलित–चिंतित कर दिया है कि एक तरफ तो वह पानी के नाम पर होने वाले रोज–रोज के झंझटों–झगड़ों, मुद्दों से परेशान है तो दूसरी ओर भविष्य में पानी के नाम पर होने वाले युद्धों विश्व युद्धों की आशंका के कारण बेहद सहमें–डरे हुए हैं। शहरों में पानी को बर्बाद करने वाले लोगों को आगाह करते हुये लेखिका ने भविष्य में होने वाले जल संकट से बचने हेतु समय रहते नसीहतें दी हैं। विकास की दौड़ में खर्चीली व पानी की अधिक मांग करने वाली जीवन शैली को अब बदलना होगा।

लेखिका ने उपन्यास की पात्र खुर्शीदआरा के माध्यम से पानी के बचाव का सुझाव दिया है। मौलवी साहिब की मृत्यु के पश्चात् बदलू जब इनके घर पानी के लिए पहुँचता है तो खुर्शीदआरा घर की टंकी में जमा बरसात के पानी से इस समस्या को सुलझाती है और कहती हैं– "पानी न हो तो आदमी की जान एक–एक बूँद के लिए तरस जाती है। सारा काम ठप हो जाता है।"[106] यदि सभी लोग बरसात के दिनों में इसी प्रकार पानी को एकत्रित करके रख लें तो पानी के संकट से आसानी से बचा जा सकता है।

---

[106] नासिरा शर्मा, कुइयाँजान (नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, 2005), पृ॰ 13

अतः'कुइयाँजान' उपन्यास पानी की किसी एक समस्या या विकृति मात्र से संतुष्ट नहीं होता। यह उपन्यास पानी को एक वटवृक्ष के रूप में देखता है। जिससे मनुष्य जीवन की हर शाखा पल्लवित होती है। पानी में फैल रही गन्दगी का कोई कारण हो या इसका समाधान, जहरीले पानी से पैदा हो रही बीमारियों की चर्चा हो, अवसर का फायदा उठाते डाक्टर, डॉक्टरों को उनकी मानवीय जिम्मेदारियों का स्मरण करना, पानी का व्यवसायीकरण, निजीकरण, नदियों का विभाजन इन सभी पहलुओं पर लेखिका की तथ्य पूर्ण आँकड़ों के साथ बहस'कुइयाँजान' उपन्यास की एक बड़ी विशेषता है।

लेखिका ने 'कुइयाँजान' में मानवीय आचरण एवं स्वभाव से परिचय कराया है। जिसमें समकालीन समाज में कई महानगरों में बहुत से परिवार के लोग पानी को खरीदते बेचते हैं। डॉ. राधारमन दास के अनुसार राजस्थान का जैसलमेर, बीकानेर एवं वाडमेर इसी प्रकार साउथ अफ्रीका जोहन्सवर्ग एवं विक्टोरिया में जल संकट है, जिस कारण से वहाँ के परिवारों में पानी का वितरण राशन व्यवस्था की तरह है, जिससे जीवन बड़ा कष्टप्रद और त्रासदीमय है। नासिरा शर्मा ने कई मुस्लिम देशों की यात्रा की, उन देशों में पेट्रोल है, परन्तु पानी नहीं।

4. पर्यावरण

पृथ्वी पर जो वातावरण है उसे हम पर्यावरण एवम् प्रकृति कहते हैं। पृथ्वी ने अनमोल खजाने मानव को दिये हैं लेकिन मानव ने इन खजानों का गलत ढंग से प्रयोग कर पृथ्वी को ही हानि पहुँचायी है। प्रगति की होड़ में व्यक्ति प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है जिसके फलस्वरूप आज पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है। शुद्ध जल और वायु मनुष्य के लिए एक सपना बन गया है। पेड़–पौधों जो हमारे जीवन के लिये बहुत आवश्यक हैं, जो हमें प्राणवायु देते हैं हम उन्हीं को नष्ट करते जा रहे हैं। पर्यावरण के संतुलन के लिए तैतीस प्रतिशत जंगल होना आवश्यक है। पृथ्वी सदैव देने का काम करती है और इंसान की लेने की हवस कभी समाप्त ही नहीं होती और वह अधिकतम की चाह में जंगलों को काटता चला जा रहा है।

'कुइयाँजान' में लेखिका ने पर्यावरण असन्तुलन की वैश्विक बनती जा रही समस्या का वर्णन किया है। जंगल कटने के कारण भूमंडलीय ताप बढ़ता जा रहा है, वर्षा की कमी के कारण जलाशय सूखते जा रहे हैं। जमीन रेगिस्तान में बदलती

नज़र आ रही है। सम्पूर्ण प्रकृति का चक्र ही बिगड़ता जा रहा है। पानी वाले मास्टर जी सोते समय जो स्वप्न देखते हैं वह केवल सपना ही नहीं वह आज की वास्तविकता है "नदियाँ एक दूसरे से मिलाई जा रही थी। जिसके चलते गांव, बस्तियाँ, जंगल–उजड़ रहे थे। पहाड़ काटे जा रहे थे। जंगल के कटने से दूर–दूर तक खाली मैदान फैल गए थे। उजड़ी बस्तियों के लोग परेशान इधर–उधर भटक रहे थे। कुछ स्थानों पर पानी ने दलदल बना दिया और लाखों लोग बर्बाद हो गए। जल स्तर नीचे हो जाने के कारण प्रांतों के बीच पानी बराबर न पहुँचने से करोड़ों मछलियों एवं समुद्री जीवों का तड़प–तड़पकर मरना आरंभ हो गया। वह गंदगी, जो लवणों और विषैले पदार्थों को समुद्री जीवों तक न पहुँचा सकने से उनका धरती पर रहने वाले जीवों के लिए ऑक्सीजन पैदा न कर सकने से दम घुटके मरनेवालों की बढ़ती संख्या से प्रदूषण का संकट पैदा हो गया था। आसमान का रंग बदल गया। बादलों ने घुमड़ना–बरसना छोड़ दिया और यहां से वहां तक न कोई चिड़िया चहचहा रही ही, न कोई इन्सान दिख रहा था....."[107] मास्टर जी का यह सपना आज की सच्चाई को स्पष्ट करता है।

मानव ही पर्यावरण के प्रदूषण का जिम्मेदार है। हमारे ही कारण ग्लोबल वार्मिंग बढ़ती जा रही है। "इंसानी धन लोलुपता की भेट चढ़ती प्राकृतिक वन संपदा, वहाँ खड़ी होती गगन–चुंबी इमारतें, बड़ी–बड़ी सड़के उन पर धुँआ छोड़ते चलते असंख्य वाहन कल–कारखानों, फैक्ट्रियों से निकलता रासायनिक विषैला पानी एवं शहर भर के केन्द्र बिन्दु नदियों के आँचल में छोड़ने से हम कहाँ बचे हैं।"[108] पृथ्वी की कोई भी ऐसी सम्पत्ति नहीं है जिसे मनुष्य ने प्रदूषित न किया हो। प्रकृति तो पृथ्वी की जन्नत है पर, "पर्यावरण की भी हमने ऐसी–तैसी कर दी है। बस अब तो धूल, धुआ और धूप है।"[109] हमारा यह कार्य हमें विनाश की ओर खींच रहा है।

इस समस्या की जिम्मेदार केवल राजनैतिक चेतना को मानने में कोई समझदारी नहीं है क्योंकि हमें अपनी सामाजिक चेतना में यह बात भी बिठानी होगी

---

[107] नासिरा शर्मा, कुइयाँजान (नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, 2005), पृ॰ 92

[108] वाड्मय (जुलाई–दिसम्बर 2007), फीरोज़ अहमद (संपा॰) (अलीगढ़ : लाल बहादुर शास्त्री मार्ग), पृ0 120

[109] नासिरा शर्मा, कुइयाँजान (नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, 2005), पृ॰ 411

कि जिन नदियों को जिन्हें हमने माँ का दर्जा देकर पूजनीय बनाया था आज हमारे ही हाथों हो रही उसकी दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। इंसानी धन लोलुपता की भेट चढ़ती प्राकृतिक वन सम्पदा, वहाँ पर बनी गगन को चूमने वाली इमारतें, बड़ी–बड़ी सड़कों पर धुआँ छोड़ते चलते असंख्य वाहन, कारखानों से निकलता विषैला पानी और शहर भर के मल–मूत्र को आस्था और संस्कृति की केन्द्र बिन्दु नदियों के आंचल में छोड़ने से हम कहाँ बच पाये हैं। हम इस ओर ध्यान क्यों नहीं दे पा रहे कि रासायनिक तत्व पानी के सहारे धरती के भीतर पहुँचकर पीने वाले पानी में घुल–मिलकर उसे ज़हरीला बना रहे हैं। यह बात अब किसी से छिपी नहीं है कि पीने वाले पानी में टी.डी.एस. की संख्या 2000 से 5000 तक पहुँच गई है। जो मानव जीवन के लिए'सिलो पॉइजन' का काम कर रही है। दांतों की बीमारियाँ, जोड़ों में दर्द, मानसिक विचलन इत्यादि सभी समस्यायें इसी जहरीले पानी की ही देन है। यह सब केवल राजनैतिक ही नहीं बल्कि हमारी निजी और सामाजिक चेतना के प्रश्न है। लेखिका'कुइयाँजान' उपन्यास में इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढती नजर आती है– "जाओ देखो उन घने जंगलों को जो तुमने काट दिये। जाओ ढूँढों उन जीवों को जो तुम्हारी गोली से नापैद होते जा रहे हैं। जाओ देखों उस जमीन को जिसके स्तनों को तुमने निचोड़ लिया और अपनी सत्ता दिखाने के लिए उस पर परमाणु बमों का प्रयोग किया। जाओ देखो उसकी तपती परतों को और उसकी साजिश का अंदाजा लगाओ कि वह किस तकलीफ से दो–चार है। उन पर्वतों को देखा जिन्हें तोड़कर उड़ाकर तुमने अपनी इच्छाएँ पूरी की। उन हिम शिखरों को देखो जिन्होंने अपने वजूद को पिघलाकर तुम्हें नदियाँ दी और तुमने उन्हें बर्बाद कर दिया। यही नदियाँ थी जिनमें किनारे तुम आकर बसे थे, आज तुम उनसे मुँह मोड़ चुके हैं। तुम स्वार्थी हो।"[110]

अंत में कह सकते हैं कि नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास'कुइयाँजान' के माध्यम से प्रदूषण की भयंकर समस्या से लोगों को आगाह किया है। पृथ्वी ही हमारी जन्नत है किन्तु आज के समय में हम अपने दुष्कृत्यों से पर्यावरण को हानि पहुँचा रहे हैं और आज हमारी यह जन्नत नरक में परिवर्तित होते नज़र आ रहे हैं।

---

[110] नासिरा शर्मा, कुइयाँजान (नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, 2005), पृ॰ 27

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं की यथास्थान अभिव्यक्ति हुई है। व्यक्ति समाज का एक अभिन्न अंग है। समाज में रहकर व्यक्ति अपनी सुरक्षा के साथ–साथ भावनात्मक संबंधों का निर्वाह भी करता है। सामाजिक समस्याओं का चित्रण लेखिका ने अपनी सूक्ष्म और पैनी दृष्टि से किया है।

5. धार्मिकता

धर्म ईश्वर के साथ जुड़ी आस्था का नाम है। भय, श्रद्धा, भक्ति और पवित्रता इसका मुख्य आधार है। पूजा–अर्चना, अराधना इत्यादि द्वारा धर्म की अभिव्यक्ति होती है। धर्म को लोक से परलोक की तरफ ले जाने वाला मार्ग माना गया है। प्रत्येक व्यक्ति के लिये इसका पालन करना आवश्यक होता है, क्योंकि इसके बल पर ही मनुष्य में आत्म शुद्धि और आत्म विश्वास जैसे भाव जागृत होते हैं। व्यक्ति का सम्बन्ध समाज से हैं जिसके अन्तर्गत धर्म व्यक्तिगत न रहकर समाज का सामूहिक होता है।

धर्म एक सार्वभौमिक तत्व होने के नाते व्यक्ति जीवन मे एकता लाने का भरपूर प्रयास करता है। धर्म जाति या सम्प्रदाय पर आधारित न होकर विश्वव्यापी धरातल पर समाहित होता है। मानव तथा समाज के प्रत्येक पहलू से धर्म सम्बन्धित होता है। यह जीवन के भीतर का एक मार्ग है। ये आत्म अनुभावन की एक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जीवन को संयमी बनाती है। "धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है जिससे तात्पर्य है – धारण करना, आलम्बन देना, पालन करना।"[111] धर्म वह माध्यम है जिसमें व्यक्ति बिना संसार का त्याग किये आध्यात्मिक वास्तविकता का बोध करता है।

नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में धर्म से सम्बन्धित समस्याओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

अंधविश्वास से अभिप्राय किसी वस्तु, पद्धार्थ, बात पर बिना सोचे समझे अन्धा विश्वास करने से हैं चाहे इसमें किसी की भलाई हो या नुकसान। आज के इस वैज्ञानिक युग में अन्धविश्वासों का बोलबाला ज़ोर–शोर से हैं। वैज्ञानिक प्रगति और

---

[111] गीतारानी अग्रवाल, धर्म शास्त्रों का समाज दर्शन, (वाराणसी : आदर्श विद्या निकेतन, 1973), पृ॰ 70

शिक्षा के प्रभाव ने अन्धविश्वासी मनुष्य की तर्कशीलता को क्षीण करके उसे विवेकशून्य बना दिया है। जब तक अंधविश्वासों में फसा मनुष्य विवेकशून्य होकर जादू–टोनों, जंत्र–मंत्र में जकड़े रखता है तब तक समाज का विकास हो पाना असम्भव है। आज भौतिकवादी युग में केवल अशिक्षित, ग्रामीण व्यक्ति ही नहीं बल्कि सुशिक्षित लोग भी इस अन्धविश्वासों का शिकार होते दिखाई देते हैं। लेखिका ने अन्धविश्वास को अपने उपन्यासों में इस तरह से दृष्टिगोचर किया है।

'पारिजात' उपन्यास में रोहन अपनी पत्नी से सम्बन्ध टूटने का कारण ग्रह न मिलने को मानता है। वह अंधविश्वास में पड़ उस दिन को याद करने लग जाता है, जिस दिन पंडित ने उसे कहा था– "आपके और आपकी पत्नी के ग्रह मिलते नहीं है... उससे अलग होना ही आपके लिए ठीक होगा।"[112] जबकि उनके विवाह टूटने का कारण दोनों के विचारों में मतभेद होता है जिससे दोनों में सब कुछ खत्म हो जाता है और दोनों एक दूसरे से अलग हो जाते है।

'अक्षयवट' उपन्यास में रमेश के घर में शनि के वास के कारण वह रोज़गार के लिये इधर–उधर भटकता रहता है। पंडित रमेश की माता को एक टोटके की रस्म पूरी करने के लिये कहता है कि– "सप्ताह में एक दिन व्रत और सफेद लाई, नदी या किसी भी बहते पानी में डालें। सारे काले बादल छँट जाएँगे। मन को शान्ति मिलेगी। सब तरफ से हारकर रमेश की माँ इन टोने–टोटकों को भी अंजाम देने लगी, कि शायद इन्हीं बातों का प्रभाव पड़े और रमेश का समय बदल जाए। रास्ते के बीच और चौराहे पर वह पूरी–हलवा, सिंदूर, फूल, नीबूं भी रखने लगी थी।"[113] सड़क या चौराहे पर अकसर हमें यह दृश्य दिखाई देता है। रमेश की माँ इस अन्धविश्वास में फसकर तकिये में ताबीज सिलती है और गौरया को दाने भी डालती है।

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास की नायिका महरुख के पैदा होते ही एक ठीकरे की रस्म की जाती है। महरुख को इस बात का पता हाई स्कूल की परीक्षा पास करने के बाद पता चलता है जिसे जानकर उसे बहुत ताज्जुब होता है– "खालिदा

---

[112] नासिरा शर्मा, पारिजात (दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, 2011), पृ॰ 58.

[113] नासिरा शर्मा, अक्षयवट (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2003), पृ॰ 39

आज से यह लड़की मेरी हुई कानपुर वाली खाला ने उसकी पैदाइश के फौरन बाद गन्दगी से भरे ठीकरे पर चांदी का चमचमाता रुपया फेंककर कहा था। यह टोटके की रस्म थी, ताकि लड़की जी जाए। इसके ददिहाल में तो लड़कियां जीती ही न थीं।"[114] महरुख बड़ी होने के बाद गाँव में अध्यापिका के पद पर कार्य करने लगी। जब वह अपनी किताबें संभाल कर कमरे से निकली तो लछमिनिया को देखकर हैरान हो गई जो बैंगन और टमाटर के पौधों की अगरबत्तती से आरती कर रही थी। महरुख के पूछने पर लछमिनिया उससे कहती है– "बुरी नज़र वाले का मुंह काला! देखों, कइसा बैंगेन फला है। रोज़ तोहर पढ़ाई वाले बचवा आवत है का पता के की नज़र में का है?"[115] लछमिनिया की ये बाते उसके अन्धविश्वास को दर्शाती है। लेखिका ने अपने उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' के रहीमुउद्दीन में पनप रहे अंधविश्वास को दर्शाया है रहीमुउद्दीन की कहीं ये बातें उसके अंधविश्वास को प्रत्यक्ष करती है–"कल इस घर में सारे पुरखों की रुह आयेगी। एक–एक करके सारे मुर्दों के नाम पर नज़र होगी। इस सारे इंतजाम के बीच जिंदा और मुर्दा अपना संवाद स्थापित करेगें, मगर उनका वहा कहीं जिक्र नहीं आयेगा, जो अपनो के बीच से चले गये।"[116]

इसी उपन्यास की शमीमा के पैरों की तकलीफ बढ़ जाने के कारण उसे अपने बेटे गोलू के पास शहर में आना पड़ता है। गोलू चाहता है कि उसके माता–पिता उसी के पास वहा रहे किन्तु शमीमा उसे कहती है– "उस घर मा चिराग कौन जलइहे, बेटवा? बुजुर्गों की सह भटक जइहे। बरसों से रोशन मा आयकी उनकी आदत जो पड़ गयी है।"[117] शमीमा के इन्कार की वज़ह सिर्फ ओर सिर्फ उसका अन्धविश्वास होता है।

'सात नदियाँ एक समंदर' उपन्यास की तय्यबा भविष्य देखने में विश्वास नहीं रखती वह उसे केवल अन्धविश्वास मानती है। लेखिका ने तय्यबा के माध्यम से

---

[114] नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी (दिल्ली : सरस्वती विहार प्रकाशन, 1989), पृ॰ 17
[115] नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी (दिल्ली : सरस्वती विहार प्रकाशन, 1989), पृ॰ 78
[116] नासिरा शर्मा, जिन्दा मुहावरे (नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 1993), पृ॰ 30
[117] नासिरा शर्मा, जिन्दा मुहावरे (नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 1993), पृ॰ 95

अन्धविश्वासी लोगों में तीखा व्यंग्य किया है। वह कहती है–"यदि कोई इन्सान चालाक हो और उसे कोई बेवकूफ मिल जाए तो वह पैसा खूब कमाता है। यहाँ बैठे–बैठे अपनी वाकपटुता से चार सौ तूमान कमा लिये।"[118]

वास्तव में यह अंधविश्वास सामाजिक और वैयक्तिक प्रगति का अवरोधक तत्व है। इसी के कारण मनुष्य की वैज्ञानिक पद्धति कुण्ठित होती जा रही है अर्थात उसका यथार्थबोध नहीं हो पाता। जिससे कई अमानवीय घटनाएं भी घट जाती है। अनेक बार अंधविश्वास एक भयानक दुर्घटना के कारण भी बनते हैं। यह लोगों की प्रगति में बाधक बनते हैं। केवल भारत ही इस अंधविश्वास की चपेट में नहीं है बल्कि विश्व के कई देशों में यह चलता आ रहा है।

धर्म किसी भी सभ्यता एवं समाज का महत्वपूर्ण क्रियात्मक तथा व्यावहारिक पक्ष है। प्रस्तुत अध्याय में नासिरा शर्मा के उपन्यासों को आधार बनाकर यह विचार किया जा रहा है कि समकालीन युग में इनके उपन्यासों में धार्मिक संघर्ष बड़े सशक्त ढंग से हमारे सामने उभरकर आये हैं। सर्वप्रथम धार्मिक परिवेश पर विचार किया जा रहा है। ऋग्वेद में 'धर्म' शब्द का प्रयोग एक ऐसे तत्त्व के रूप में किया गया है जो ऊँचा उठानेवाला (उन्नयन) अथवा पालन–पोषण (सम्योजक) करने वाला है।

भारतवर्ष में अलग–अलग धर्मों के लोग रहते हैं और सभी की अपनी अलग मान्यताएँ होने के बावजूद भी इकट्ठे रहते हैं। इसलिए सच्चा धर्म पक्षपात विहीन होता है और कोई भी धर्म अनैतिक कार्य करने की प्रेरणा नहीं देता है तथा आपस में द्वेष रखने की भावना भी नहीं सिखाता है। आज भी धर्म का पालन करने वाले लोग आपस में लड़ाई–झगड़ा नहीं करते बल्कि सुख शांति से रहना चाहते हैं। मूलतः विचारों की कोई भी गम्भीर साधना, विश्वासों की कोई भी खोज, सद्गुणों के अभ्यास का कोई भी प्रयत्न, ये सब उन्हीं स्त्रोतों से उत्पन्न होते हैं, जिनका नाम धर्म है। अतः जैसे–जैसे समय परिवर्तित हो रहा है वैसे–वैसे धर्म में भी परिवर्तन हो रहा है। इस परिवर्तन की प्रक्रिया से धर्म में जो परिवर्तन हो रहे हैं इससे लोगों के सामने कई समस्याएँ आ रही हैं। आज लोग धर्म का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए

---

[118] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक संमदर (नई दिल्ली : अभिव्यंजना प्रकाशन, 1984), पृ॰ 14

कर रहे हैं। इसी कारण समाज में धर्म को लेकर लोगों के मन में कलुषित वातावरण निर्मित हो रहा है। वस्तुतः धर्म के असली रूप को लोगों ने भूला दिया है। प्राचीन काल में धर्म का इतना विकृत रूप नजर नहीं आता था मुगलकाल तक आते–आते धर्म का स्वरूप और भी कलुषित हो गया। धर्म के नाम पर अनेक कुप्रथाओं ने जन्म लिया। बाल–विवाह, सतीप्रथा, विडम्बनापूर्ण वर्णाश्रम व्यवस्था जैसी कुत्सित प्रथाओं का धर्म के नाम से दुरूपयोग किया गया। वर्तमान समय में धर्म के स्वरूप को राजनीतिज्ञों ने अपने फायदे के लिए और भी बौना साबित किया है। वास्तव में देखा जाए तो नैतिकता एवं मूल्य को धर्म व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी माना जाता था। इसलिए व्यक्ति और समाज को अनुशासनपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करना ही धर्म का प्रमुख कार्य है। आज धर्म के नाम पर अनेक समस्याओं का प्रचलन हो रहा है जैसे ऊँच–नीच, जात–पात और सम्प्रदाय आदि। नासिरा शर्मा ने धर्म के इस बदलते स्वरूप के कारण होने वाली समस्याओं को अपने साहित्य में यथोचित प्रगट किया है। वह यथार्थ परिवेश की कुसंगति की पीड़ा को धार्मिक आडम्बरों से पैदा हुई मानती है।

धार्मिक संघर्ष

भारत में अनेक प्रकार के धर्म हैं–हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख तथा ईसाई। सभी धर्म अनुयायी अपने धर्म को श्रेष्ठ मानते हैं जिसके कारण कई बार बहुत सारे धार्मिक मुद्दों पर झगड़े हुए हैं जैसे–हिन्दूओं का किसी जगह पर अपना मन्दिर बनाने की इच्छा प्रगट करना तो उसी जगह मुसलमानों द्वारा अपने लिए मस्जिद बनाने की बात करना, जिसके कारण होता कुछ नहीं, दोनों धर्मों के लोग आपस में लड़ाई–झगड़ा करने लगते हैं और ये लड़ाई–झगड़ा इस हद तक बढ़ जाता है कि वो दंगो का रूप धारण कर लेते हैं जिसके कारण अनेक बेगुनाह उन दंगो की चपेट में आ जाते हैं। बहुत से घर उजड़ जाते हैं– किसी का पति इन दंगो की लपेट में आकर मर जाता है और वह औरत विधवा हो जाती है तो किसी का बेटा, किसी की पत्नी, किसी का पिता और उसके साथ–साथ बहुत जान–माल का नुकसान होता है। ये दंगे इतना भयानक रूप धारण कर लेते हैं कि इनसे बचना नामुमकिन सा लगता है। इसलिए नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में इन मुद्दों को

भी उठाया है ताकि लोग जागरूक हो सकें। मनुष्य के लिए धर्म एक संवेदनशील मुद्दा है जिसकी रक्षा के लिए वह कुछ भी करने को तैयार हो जाता है।

आधुनिक युग में तो राजनेताओं ने तो धर्म को सत्ता प्राप्त करने का एक खिलौना मात्र समझ रखा है। राजनेता धर्म के नाम पर लोगों से वोट मांगते हैं और विभिन्न मुद्दों की पूर्ति के लिए धर्म के नाम पर उनको उकसाते हैं। इस तरह नासिरा शर्मा जी ने बढ़ती जा रही साम्प्रदायिक राजनीति को अपनी रचनाओं में भली–भांति प्रगट किया है। 'सात नदियाँ एक समंदर' उपन्यास में लेखिका ने सत्य को उजागर किया है और दिखाया है कि किस तरह शाह द्वारा सत्ता में रहने के लिए और खुमैनी द्वारा सत्ता प्राप्ति के लिए धर्म के नाम पर लोगों को उकसाया जाता है और वे लोगों को युद्ध के लिए प्रेरित करते हैं। धर्म का सहारा लेकर सत्ताधारी पक्ष को किसी भी प्रकार से हराकर सत्ता को प्राप्त करना ही विरोधी पक्ष का मुख्य उद्देश्य होता है।''तेहरान में हाहाकार मचा हुआ था जितने कर्मचारी विरोधी थे सबको छटनी का आदेश मिल गया। तनख्वाह बंद कर दी गई थीं। लोग खर्चा चलाएँ कैसे? दो दिन तक व्याकुलता रही फिर सबने तय कर लिया संघर्ष जारी रहेगा।''[119] खुमैनी शाह को सत्ता से हटाकर स्वयं ईरान पर राज्य करना चाहता था। शाह का विरोध करने के पीछे उनका भी एक बड़ा कारण था कि वे शाह विरोधी थे। शाह ने उनके बेटे का वध करवाया और उन्हें देश निकाला दे दिया। इसी कारण उनका एकमात्र लक्ष्य शाह से अपना प्रतिशोध लेना था और उन्होंने अपने इस प्रतिशोध को धार्मिक क्रांति का नाम दे दिया। इस क्रांति के बाद शाह ईरान से चला जाता है और ख़ुमैनी का राज्य स्थपित होता है।''नया ईरान उभर रहा था हर स्थान से शाह का नाम, शाह के लोग हटाये जा रहे थे। शाही ख़ानदान के कपड़े, ज़ेवर और कुत्ते निलाम हो रहे थे।''[120] लोगों के मन में उन्होंने यह विचारधारा उत्पन्न कर दी कि धर्म खतरे मे है। यदि सत्ता नहीं बदली तो सच्मुच इस्लाम का नामोनिशान मिटा दिया जायेगा। ईरान की जनता भड़क गई

---

[119] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 43

[120] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 51

नौजवानों का दल काले झंडे लेकर चिल्ला रहा था :''इन्कलाब इस्लाम धर्म के लिए रोटी के लिए नही।''[121] इन सब विचारों से प्रभावित होकर लोगों ने शाह का विरोध करना शुरू कर दिया। अब स्थिति बिल्कुल बदल चुकी थी ''एक के बाद एक प्रधानमंत्री बदले जा रहे थे। कोई टिक नहीं पा रहा था। व्यवस्था के बदलाव में हर संस्था, हर पार्टी अपनी राय पेश कर रही थी।–आय्यतुल्लाह तालगानी जैसे आध्यात्मिक पथप्रदर्शक ने भी खुमैनी को रहबर मान लिया था। सबको उनके लौटने का इंतजार था, मगर उन्होंने खुले शब्दों में कह दिया था, ''जब तक शाह ईरान में है वे ईरान की धरती पर कदम नहीं रखेंगे।''[122] सामान्य लोगों को धर्म के नाम पर इस तरह उकसाया जाता है कि उनको अच्छे–बुरे की कोई परख नहीं रहती। इसका एक उदाहरण देखिए –''खुमैनी अज़िज़म बेगू खून बे रीज़म (खुमैनी प्रिय, कहो, हम हाज़िर हैं खून बहाने के लिए)।''[123]

आज धर्म के नाम पर कैसे मूल्यों का हनन किया जाता है इसको दर्शाना ही लेखिका का मुख्य उद्देश्य था। धर्म पहले व्यक्ति और समाज को अनुशासनपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करता था। लेकिन समकालीन युग में धर्म के नाम पर हमें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसमें लेखिका ने धर्म के बदलते स्वरूप के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं को उजागर किया है।

आध्यात्मिकता और भौतिकता का संघर्ष

भौतिकतावाद के युग में मनुष्य अधिक–से–अधिक धन अर्जन करना चाहता है, उसकी इसी चाह का प्रभाव स्वाभाविक रूप से धार्मिक क्षेत्र में भी पड़ा जिसके परिणामस्वरूप युगीन परिवेश में धर्म का व्यवसायीकरण हो रहा है जिसका वर्णन 'जिंदा मुहावरे' में देखने को मिलता है। मुस्लिम धर्म में ईद के दिन दावत रखना बहुत ही पुण्य का कार्य माना जाता है। निज़ाम भी ईद के दिन दावत रखता है

---

[121] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 42

[122] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 43

[123] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 42

लेकिन इसके पीछे उसका अपना स्वार्थ छिपा है। वह केवल अपने कारोबार में वृद्धि करना चाहता है। नासिरा के कथनानुसार – "ईद के दिन निज़ाम के यहाँ बड़ी चहल–पहल थी। शहर के कई ताजिर, वज़ीर और फौजी अफसर उसके यहाँ ईद मिलने आए थे। रात को उसने बहुत बड़ी दावत का इंतजाम भी किया था। सच पूछा जाए तो ईद सिर्फ बहाना थी, दरअसल निज़ाम एक्सपोर्ट–इम्पोर्ट का सिलसिला शुरू करना चाहता था। इसीलिए वह खालिस ताजिराना दावत थी।"[124]

"धर्म में पहले आध्यात्मिकता की जो भावना मौजूद थी, उसका स्थान भौतिकता ने ले लिया है। धर्म जो कभी जीवन में प्रमुख था, आज गौण बन गया है। मंदिरों में ईश्वर–पूजा, धर्म–कर्म आदि में अर्थ की ही प्रधानता है। धर्म के वे ही ठेकेदार हैं, जो आर्थिक दृष्टि से समृद्ध हैं इसीलिए रामचरितमानस के विद्वान वक्ताओं को भाषण देने की जगह अब राजनेताओं और फिल्मी कलाकारों को निमंत्रण दिया जाता है क्योंकि उनके नाम के कारण भीड़ अधिक और चंदे की उगाही ज्यादा हो जाती है।"[125] अतः धार्मिक क्षेत्र में धर्म–प्रबुद्ध व्यक्तियों की अपेक्षा धनी या उच्चवर्ग के व्यक्तियों को सम्मान दिया जाता है चाहे वे चारित्रिक और कर्म की दृष्टि से हीन ही क्यों न हों। नासिरा शर्मा धार्मिक परिवेश में प्रवेश कर गए बाज़ारवाद का उल्लेख करती हुई कहती हैं–"बाज़ार ने पिछले कई दशकों से धर्म को गोद ले रखा है। ऐसे अवसरों पर साड़ी, जेवर, खाने–पीने की नयी से नयी चीज़ों का प्रचार धार्मिक भावनाओं के मिश्रण से किसी जाल की तरह फैला हुआ था। धर्म का मूल भाव तो कहीं खो चुका था।"[126] इस प्रकार धर्म के क्षेत्र में दिखावा ही प्रमुख हो चुका है। यदि कह दिया जाए कि वर्तमान युग में धर्म व्यक्तिगत स्वार्थों की सिद्धि का साधन बन गया, तो अनुचित न होगा।

भौतिकतावादी प्रवृति के प्रति संघर्ष

आजकल शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार हेतु अनेक भौतिक साधनों की आवश्यकता होती है। इन साधनों की कमी हो गई तो शिक्षा प्रचार–प्रसार का काम

---

[124] नासिरा शर्मा, 'जिंदा मुहावरे', वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण–2012 पृ0 50

[125] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली–110003, संस्करण–2013 पृ0 17–18

[126] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली–110003, संस्करण–2013 पृ0 10

कैसे होगा ? अतः शिक्षा के प्रचार–प्रसार में सहायक साधन बहुत आवश्यक बन जाते हैं। अतः 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में इस समस्या को उठाया है। महरूख जिस ग्रामीण इलाके में अध्यापिका थी उस स्कूल की हालत बहुत ही गम्भीर थी। इस स्कूल में साधनों की कमी के बारे में वह कहती है "ब्लैक बोर्ड की इतनी बुरी हालत है कि कुछ लिखना नामुमकिन है। इस तरह से बच्चों का बहुत नुकसान होगा। बोर्ड के इम्तिहान तो अब करीब आ गए हैं।"[127] वह प्रधानाध्यापक से मिलकर इस समस्या की पूर्ति करने को भी कहती है लेकिन वह इसे अनसुना कर देते हैं। आज ग्रामीण इलाकों में स्कूल सिर्फ खोला जाता है वहाँ अध्यापक भी शिक्षा के लिए अपना योगदान बहुत कम देते हैं। ऐसे देहात क्षेत्र में शासन भी अपनी सुविधाएँ देने में उदासीनता ही दिखाई देता है। अतः इसकी ओर गम्भीरता से न समाज देख रहा है न अध्यापक और न ही शासन। इसलिए ऐसी चीजों की पूर्ति के लिए नये संसाधनों को जुटाना चाहिए तभी बच्चों को उचित शिक्षा दी जा सकती है। जब बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्त होगी तभी बच्चे अच्छे संस्कारी होकर भविष्य में विकास कर पायेंगे और देश भी उन्नति करेगा।

आज हमारी आर्थिक नीति ने भोगवादी संस्कृति के विस्तार को बहुत विकसित किया है और यह नीति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसका समर्थन दे रही है, इससे हमारे बीच परस्पर बिखराव आने लगा है और साथ ही साथ हमारे सम्बन्धों में भी दरार पड़ने लगी है। आज व्यक्ति ने प्रसिद्धि के पीछे अपने परिवार और समाज को भी भूला दिया है। अपने उपन्यासों में नासिरा शर्मा ने ऐसे बदलते सन्दर्भो को चित्रित किया है। 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास इसका जीता जागता उदाहरण है – इस उपन्यास में रफत महरूख को भूला कर इंग्लैंड की किसी अमीर लड़की के साथ अपना सम्बन्ध बनाता है वो सिर्फ अपनी इच्छाओं की पूर्ति करना चाहता है। इसमें महरूख आधुनिक नारी है जो इस जगत में अपनी एक पहचान बनाती है। इसी होड में वह अपने माता–पिता को भी भूल जाती है। आज के युग में अधिक आधुनिक बनती जा रही पीढ़ी और इससे परम्परागत मूल्यों का हो रहा ह्रास बताना ही लेखिका का मुख्य उद्देश्य रहा है जबकि 'शाल्मली' उपन्यास में

[127] नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी (दिल्ली : सरस्वती विहार, 1989), पृ॰ 48

लेखिका ने इसके विरुद्ध चित्रण किया है। इस उपन्यास में शाल्मली आई.ए.एस. अफसर होने के बावजूद अपने माता–पिता की ही नहीं बल्कि अपनी सास की भी सेवा करती है और बाहर के लोग तो सास को उसकी माँ ही मानते हैं जबकि उनका अपना बेटा अपनी माँ की बिल्कुल भी परवाह नहीं करता। इन उपन्यासों के माध्यम से नासिरा शर्मा ने ह्रास हो रही मानवीयता को बचाने की कोशिश बराबर की है। इन उपन्यासों में सांस्कृतिक समस्याओं के अन्तर्गत आधुनिक बदलते सन्दर्भ, अंधानुकरण की होड में खो रहा आदमी, भाषा के प्रति नष्ट हो रही आत्मीयता और परम्परागत मूल्यों के पतन के बारे में चिंता व्यक्त की है।

आज इस भौतिकवादी युग में जितनी सुख–सुविधा हम भोग रहे हैं किन्तु इस सुख–सुविधा को भोगने के बाद भी हम असंतोष महसूस कर रहे हैं। इसलिए एक तरफ मनुष्य ने स्वयं को जितना आरामदायी तथा सुखमय बनाया है उतना ही वह अपने को विविध सांस्कृतिक स्थिति से घिरा हुआ महसूस करता है। वह अपने बच्चों और पत्नी में सभी संस्कार चाहता है परन्तु खुद उस पर खड़ा नहीं रहता और अपनी जिन्दगी आराम से जीना चाहता है। आज के युग में उसकी भौतिक प्रवृत्ति की ओर झुकने के कारण यह समस्या उसे ज्यादा सताने लगी है और दूसरी ओर कुछ गरीब लोग प्राथमिक चीजों की भी पूर्ति नहीं कर पाते हैं।

ऐसी स्थिति में वह अनेक समस्याओं से जूझते दिखाई दे रहे हैं इसलिए आजकल समाज दो भागों में विभाजित हुआ है। आज परिवर्तन के साथ–साथ लोगों की समस्याओं में भी परिवर्तन हो गया है किन्तु समस्या का जो मूल कारण है वह नहीं बदला है। आज मानव के जीवन का एक भी हिस्सा ऐसा नहीं बचा है जो समस्या से न घिरा हो। ऐसा इसलिए हो रहा है कि हम परस्पर प्रेम, त्याग, समपर्ण की संस्कृति से दूर होते चले जा रहे हैं। लेखिका नासिरा शर्मा ने इन समस्याओं में से कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं का चित्रण किया है जो व्यक्ति को जकड़कर उसका शोषण कर रही है। लेखिका ने केवल भौतिकतावादी प्रवृत्ति की समस्या को ही उजागर नहीं किया बल्कि इसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं का समावेश भी किया है। लेखिका ने सिर्फ सांस्कृतिक परिवेश की गिरती गरिमा का ही चित्रण नहीं किया है बल्कि उनके मूल तक जाने का प्रयास भी किया है कहीं–कहीं इनका हल ढूँढने का प्रयास भी किया है जो

सराहनीय है।

अन्धविश्वास प्रवृति के प्रति संघर्ष

समाज में धर्म के नाम पर आडम्बर दिखावा और प्रपंचता का बोलबाला बराबर फैला हुआ दिखाई देता है जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू–मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी में परस्पर मतभेद उभरता हुआ दिखाई देता है। किसी भी धर्म के मानने वाले लोग अपने मजहब, धर्म, विचार अथवा मत को ही सबसे सर्वोपरि मानते हैं। इसलिए वह अपने ही धर्म के रीति–रिवाज, पूजा–पाठ, परम्पराओं आदि से अपने जीवन को चलाते हैं। ऐसा करने से उनमें अन्धविश्वास की परम्परा भी पनपती है। इसलिए अन्धविश्वास सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के कई देशों में उत्पन्न होता चला आ रहा है। प्रत्येक देश में अन्धविश्वास का स्वरूप अलग–अलग होता है और यही अंधविश्वास लोगों की प्रगति में बाधा बनता है और उनके लिए समस्या के रूप में सामने उभर कर आता है। कभी यह धर्म का नाम लेकर आता है, कभी नीति–रीति का, कभी देवी–देवता और प्राचीन ऋषि–मुनियों का। इसलिए कोई भी अंधविश्वास कोरा अंधविश्वास नहीं होता, उसके पीछे कोई न कोई विश्वास निहित होता है। नासिरा शर्मा के साहित्य में इस समस्या की स्थिति को भी प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। हर धर्म अपने आपको दुनिया के बाकी सारे धर्मो से श्रेष्ठ मानता है और श्रेष्ठता पर जो भी उँगली उठाता है, उस धर्म के मुखिया उसकी उँगली ही नहीं काटते सिर भी कलम कर देते हैं। इस तरह की मानसिकता केवल धार्मिक आडम्बरपूर्ण कट्टरता को प्रदर्शित करती है जिसके कारण न जाने कितने निर्दोषों को मार दिया जाता है। इस सम्बन्ध में 'जीरो रोड़' उपन्यास में स्वयं नासिरा शर्मा जी कहती हैं "कहीं धर्म के नाम पर मारा जा रहा है तो कहीं देश के नाम पर। रंग और नस्ल की पीडा को बहुत सहा है।"[128] यह स्थिति मनुष्य की घृणित मानसिकता को प्रकट करती है जिससे उभरने के लिए व्यक्ति को समभाव की सोच की मनोवृत्तियों को पैदा करना होगा तभी कहीं जाकर प्रेमपूर्ण सौहार्द के साथ रह पायेंगे। इसलिए चाहे मुस्लिम हो अथवा हिन्दू किसी का भी धर्म लड़ना नहीं सिखाता है बल्कि परस्पर सहयोगी बनकर रहना सिखाता है।

---

[128] नासिरा शर्मा, राष्ट्र और मुसलमान, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2011

अतः अन्धविश्वास का कोढ केवल भारत में ही नहीं अपितु पूरे संसार में भी फैला हुआ है। पहले यह अन्धविश्वास निम्न वर्गों तक ही सीमित था, लेकिन अब इस अन्धविश्वास ने उच्च वर्गीय और शिक्षित लोगों को भी अपनी बाहों में लपेट लिया है। ऐसा ही अन्धविश्वास 'अक्षयवट' में भी देखने को मिलता है।

अकबरपुर मौहल्ले में रहने वाले जहीर के परदादा सगीर अहमद पास के ही गाँव में रहकर डॉक्टरी करते थे। अन्धविश्वास के खिलाफ बात करने की वजह से उन्हें जान से हाथ धोना पड़ा। 'अक्षयवट' उपन्यास में यह चित्रण धार्मिक आडम्बरपूर्ण कट्टरता की घृणित मानसिकता को उजागर करता है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में धार्मिक मान्यताओं और अंधविश्वासों के संघर्ष का वर्णन इस प्रकार है –

मन्नत व मनौती

मन्नत का अर्थ है – "किसी देवता की पूजा करने की वह प्रतिज्ञा जो किसी कामना विशेष की पूर्ति के लिए की जाती है।"[129] संतान रहित संतान की, गरीब धन की तथा कुछ लोग यश की कामना से मन्नत माँगते हैं अतः विभिन्न देवी–देवताओं में आस्था रखनेवाले मनुष्य अपने–अपने मन में संकल्प लेते हैं तथा उसकी पूर्ति हेतु मंदिर, मस्जिद, पीर–मज़ार, गुरुद्वारे जाकर प्रार्थना करते हैं।

'सात नदियाँ एक समंदर' उपन्यास में लोगों द्वारा विभिन्न स्थलों पर जाकर मन्नत मांगने का वर्णन हुआ है। "ईरान में 'हज़रत रेज़ा का हरम, सोने के कलस, गुंबद आदि तेज़ रोशनी में झिलमिल–झिलमिल कर रहे थे। ...दूर–दूर से आए धर्मनिष्ठ यात्री सिजदे में गिरे थे। मन्नत मान रहे थे। जरी से लिपट रो रहे थे।"[130] गुरुवार को पीर की दरगाह पर मन्नत मांगनेवालों की भीड़ नज़र आती है।

'अक्षयवट' उपन्यास में जुमेरात के दिन "हजरत अब्बास की दरगाह की ज्यारत को बहुत लोग आते हैं। ...गलियाँ खचाखच भर जाती हैं।"[131] पन्नालाल सुनार के घर बेटा पैदा होता है इसलिए"बेटे की मन्नत पूरी करने अजमेर जाना था। रमजानी की हठ पर पिछले वर्ष मालती और पन्ना ख्वाजा साहब की दरगाह

---

[129] शीर्ष कहानियाँ, रचना प्रकाशन, जयपुर, संस्करण–2015 पृ0 59

[130] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, संस्करण–2013 पृ0 42

[131] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण–2013 पृ0 56

पर माथा टेक आए थे। उन्हीं की कृपा से यह दिन देखना इस उम्र में उन्हें नसीब हुआ था''[132]

व्यक्तियों द्वारा मन्नत मांगी जाती है और पूरी होने पर मन्नत वाले स्थान पर जाकर जो चीज भेंट करने को कही गयी थी वह भेंट चढ़ाई जाती है।

'जिंदा मुहावरे' उपन्यास के अली नकी के पिता लखनऊ के इमामबाड़े में मन्नत माँगते हैं जो पूरी हो जाती है। विभाजन के उपरांत वह स्वयं वहाँ जाने में समर्थ नहीं है इसीलिए जब निजाम की लखनऊ जाने की बात सुनते हैं तो उसे कहते हैं – ''मैंने बड़े इमामबाड़े में मन्नत मानी थी। वह पूरी हो गई, मगर चाँदी का शमादान चढ़ाने न जा सका। भूला हुआ था। ..तुम यह कर्जा उतार देना।''[133] इसमें भारत–पाक विभाजन की त्रासदी भरा वर्णन किया गया है जिसमें विभाजन ने व्यक्ति को इतना मजबूर कर दिया है कि वह चाहकर भी अपनी मन्नत पूरी नहीं कर पाता। 'अक्षयवट' में रचनाकार ने दर्शाया है कि मन्नत पूरी होने पर ''बहादुरगंज में हजरत अली की दरगाह पर जुमे–जुमेरात की औरतों की खासी भीड़ रहती थी।''[134] दरगाह पर आई कुछ औरते मनौती खुदा के आगे मदद के लिए इस तरह फरियाद करतीं हैं कि''नौहे की आवाज़ दरगाह के पेड़ों की शाखों में कलावा करने लगीं–

'ऐ कुल के मददगार,

मदद करने आओ मुश्किल से छुड़ाओ! फरियाद है फरियाद। दोहाई है दोहाई, मुश्किल यह पड़ी है।

ऐ कुल के मददगार''[135]

'कुंइयाँजान' उपन्यास में नासिरा शर्मा द्वारा हिंदू धर्म के अनुयायी द्वारा दरगाह पर मन्नत माँगने का वर्णन करते हुए सभी धर्मों को समान बताने व आस्था रखने का संदेश दिया है। पन्नालाल सुनार के घर संतान न होने पर वह रमजानी के कहने पर ख्वाजा साहब की दरगाह पर मनौती माँगता है और अठारह वर्षों

---

[132] नासिरा शर्मा, कुइयाँजान, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 13

[133] नासिरा शर्मा, 'जिंदा मुहावरे', वाणी प्रकाशन,, नई दिल्ली, संस्करण–2012 पृ0 104

[134] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण–2013 पृ0 435

[135] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण–2013 पृ0 435

पश्चात् संतान का जन्म होने पर ''पन्ना सुनार को बेटे की मन्नत पूरी करने अजमेर जाना था। ...उन्हीं की कृपा से यह दिन देखना इस उम्र में उन्हें नसीब हुआ था।''[136] मनुष्य के जीवन में इतने अंधविश्वास बढ़े हुए हैं कि वह सोचता है कि माँगने पर उसे इच्छित वस्तु अवश्य मिलेगी। यही कारण है कि युगीन परिवेश में धार्मिक स्थलों पर मन्नत का धागा बांधने और पूरी होने पर खोलने का प्रचलन बढ़ गया है।

अस्तु, नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में मन्नत (ईश्वर से इच्छित वस्तु की प्रार्थना करना) माँगना और उसके फलीभूत होने पर मन्नत को पूरी करते हुए परमात्मा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। जनसामान्य स्वयं पर या अपने प्रियजन पर आए दुःख या मुसीबत को दूर करने हेतु तांत्रिकों का आश्रय लेते हैं जो उन्हें विभिन्न प्रकार के टोने–टोटके करने का परामर्श देते हैं। नासिरा शर्मा ने 'ठीकरे की मंगनी' और 'अक्षयवट' उपन्यासों में टोने–टोटके संबंधी विश्वास को शब्दबद्ध किया है। 'ठीकरे की मंगनी' में महरुख़ की नौकरानी लछमिनिया को प्रसव पीड़ा के दौरान एक डॉक्टर की आवश्यकता थी लेकिन किसी ने लछमिनिया की सास को उस पर टोना होने की बात कही और उससे बचने के लिए उसकी सास ''... लछमिनिया के सिरहाने लोहे का टुकड़ा, हल्दी, कील, सिल का बट्टा और पता नहीं क्या–क्या जमा हो रहा था। दिन ढलते–ढलते शाम हो गई। लछमिनिया के सिरहाने तेल की ढिबरी रखकर उसकी सास उसके सर से छुआ कर कोई चीज़ बाहर ले गई।''[137] इन्हीं अंधविश्वासों के कारण कभी–कभी मनुष्य मृत्यु के द्वार तक पहुँच जाता है। कुदृष्टि को भी टोटके का एक प्रकार माना जाता है। लछमिनिया इसी प्रकार के अंधविश्वास से घिरी है। वह किसी फलदार पेड़–पौधे के सूखने का कारण कुदृष्टि को मानती है और वह महरुख़ से अगरबत्ती की मांग करती है। महरुख़ के पूछने पर कहती है 'टोटका हैं' लछमिनिया जलती अगरबत्ती के साथ बैंगन और टमाटरों के पौधे के सामने उनकी आरती–सी उतारने लगी और कहती है बुरी नज़र वाले तेरा मुँह काला! देखो, कइसा बैंगन फला है? रोज तोहार पढ़ाई

---

[136] नासिरा शर्मा, कुइयाँजान, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 13

[137] नासिरा शर्मा, 'ठीकरे की मंगनी' किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 91

वाले बचवा आवत हैं। का पता के की नज़र में का है?''[138] इसी प्रकार के विश्वास से 'अक्षयवट' में रमेश की माँ घिरी है। रमेश परिवार का सबसे बड़ा पुत्र है जिसका जीवन कठिनाइयों से भरा है। अपने पुत्र के जीवन में आई इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए रमेश की माँ एक पंडित के पास जाती है और जो भी वह कहता है, करने को तैयार होती है। ''पंडित जी ने कहा था कि सप्ताह में एक दिन व्रत और सफेद लाई, नदी या किसी बहते पानी में डालें। ... रास्ते के बीच और चौराहे पर वह पूरी–हलवा, सिंदूर, फूल, नींबू भी रखने लगी। किसी ने कहा टूटी मस्जिद के पास जो अंधे मौलवी साहब रहते हैं उनके ताबीज़ में बहुत असर है। ...ताबीज़ लाकर रमेश के तकिया में सिल दी और रोज सुबह उठकर गौरेयाँ को दाना बिखेरती।''[139] अपने पुत्र की प्रगति हेतु रमेश की माँ इस प्रकार के कार्यों में विश्वास करती है। ऐसी सोच का एकमात्र कारण नासिरा शर्मा ने अनपढ़ता को बताया है। अनपढ़ता के कारण ही मनुष्य में जागरूकता का अभाव है। वह अपने अच्छे–बुरे को नहीं समझ सकता, इसीलिए किसी के भी बहकावे में आ जाता है और कुछ भी अनैतिक कार्य करने लगता है। इस अनपढ़ता और अज्ञानता के कारण ही लछमिनिया या उसकी सास इस प्रकार के टोने–टोटके में विश्वास करती है।

धर्म उचित मार्गदर्शन करने का एक माध्यम है जो मनुष्यों के सर्वकल्याण की भावना से अनुप्रेरित है लेकिन आधुनिक युग में धर्म का मूलभूत रूप विकृत हो गया है। धार्मिक क्षेत्र में अनेक प्रकार की रूढ़ियाँ और अंधविश्वास शामिल हो गए हैं जो व्यक्ति के मन को कुंठा से भर देते हैं और समाज के विकास को अवरूद्ध करते हैं। ज्योतिष एक विद्या है लेकिन कुछ स्वार्थी लोगों ने ज्योतिष का दुरूपयोग करना आरंभ कर दिया और इससे जन–सामान्य का शोषण कर अपनी जेबें भरने का साधन बना लिया है और जनसामान्य व धर्म–भीरू लोगों को गुमराह करते हैं। इसी अंधविश्वास का विरोध 'सात नदियाँ एक समन्दर' की तय्यबा करती है जो क्रांतिकारी विचारों से युक्त है और ज्योतिष की अपेक्षा कर्म पर बल देती है। उसकी मान्यता है कि ''....भाग्य यदि हाथ में लिखा होता तो आज संसार में कोई दुःखी

[138] नासिरा शर्मा, 'ठीकरे की मंगनी' किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 79

[139] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण–2013 पृ0 39

और बेचारा न बचता, सब भाग्य–रेखा को पढ़कर अपनी राह बदल लेते।''[140] जब फालीगरन अन्य सखियों का भविष्य देख पैसे ऐंठती हुई उस तक पहुँचती है तो स्पष्ट शब्दों में तय्यबा उससे कहती है, ''नहीं! मुझे समय बरबाद नहीं करना है। मैं स्वयं पेंटिंग करती हूँ....... चाहो तो तुम्हारा भूत और भविष्य रेखाओं की विभिन्न अभिव्यक्तियों द्वारा खींच दूँ।' तय्यबा ने यह कहकर अपनी प्याली सीधी की और उसमें पानी भर दिया और कटाक्ष भरी नज़रों से सबको घूरा।' वह फालीगरन को कहती है।

ये मेरे भाग्य की रेखाएँ नहीं हैं। यह ईरान का मानचित्र है जो मेरे हाथ में है। यह पहाड़, ये नदियाँ, यह मैदान और यह विश्वविद्यालय, यह कारावास और यह घर, इसे मुझे सँवारना है। इसे तुम क्या पढ़ पाओगी?''[141] नासिरा शर्मा ने तय्यबा के माध्यम से कर्म पर बल दिया है और बताने का प्रयास किया है कि भाग्य को मनुष्य अपने कर्मों द्वारा बनाता है। फालीगरन जैसे लोग ज्योतिष के माध्यम से जन–सामान्य को मूर्ख बनाते हैं और धन अर्जित कर अपना भरण–पोषण करते हैं अतः फालीगरन पर कटाक्ष करती हुई तय्यबा कहती है – ''यदि कोई इन्सान चालाक हो और उसे कोई बेवकूफ मिल जाए तो वह पैसा खूब कमाता है। यहाँ बैठे–बैठे अपनी वाक्पटुता से चार सौ तूमान कमा लिये।''[142] फालीगरन जैसे ढोंगियों के लिए ज्योतिष केवल लोगों को ठगने का साधन मात्र है जो लोगों में ज्योतिष विद्या के प्रति अनास्था उत्पन्न करता है। लोगों के मन में यह संदेह उत्पन्न करते हैं और उनसे पैसे ठगते रहते हैं।'कागज़ की नाव' उपन्यास में नूरजहाँ भी अपने पति राजेश को वश में करने के लिए क़ादिरी साहब के पास जाती है। एक दिन कान्ता को नूर की कही बात याद आती है। हम औरतों की जिंद़गी क्या है कान्ता?कैद बामशक्कत। कैदखाना भी वही पुराना बस क़ैदी बदलते रहते हैं। भला हो क़ादिरी साहब का जो उन्होंने मियां को वश में करने की दवा दे दी वरना आज मैं क़ब्र में दबी होती। अज्ञान के कारण इनकी बातों पर किया जाने वाला विश्वास ही अंधविश्वास है। इसीलिए नासिरा शर्मा ने ज्योतिष का नहीं अपितु

---

[140] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, संस्करण–2013 पृ0 13

[141] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, संस्करण–2013 पृ0 12

[142] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, संस्करण–2013 पृ0 13

उसके माध्यम से फैलाये जाने वाले अंधविश्वास का विरोध किया है।

अन्धानुकरण वृत्ति के प्रति संघर्ष

नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में लोगों के बिना देखे, सोचे–समझे अन्धानुकरण करने की वृत्ति का भी चित्रण किया है, जिसमें ज्योतिष प्रमुख रूप से है। ज्योतिष के आधार पर भविष्य देखने का विश्वास लगभग सभी देशों में व्याप्त है। ईरान में इस विश्वास का वर्णन लेखिका ने उपन्यास 'सात नदियाँ एक समंदर' के माध्यम से किया है जिसका प्रारंभ ही ज्योतिष के माध्यम से होता है, जिसमें फालीगरन सातों सखियों का भविष्यफल कहवे की तलछट के माध्यम से उनको बताती है। इसीलिए जब कोई भी मनुष्य विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों से जूझता है तो किसी ज्योतिषी को उस व्यक्ति की जन्मकुंडली दिखाकर ग्रह–नक्षत्रों की दशा जानकर उसके ग्रहों की दशा सुधारने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय किए जाते हैं क्योंकि ऐसा विश्वास समाज में प्रचलित है कि ग्रहों की दशा का मनुष्य के जीवन पर प्रभाव पड़ता है। उन ग्रहों की दशा को सुधारने के लिए जो उपाय बताये जाते हैं मनुष्य उन उपायों को पूरा जरूर करता है। 'अक्षयवट' उपन्यास में रमेश की माँ रमेश के जीवन में आए कष्टों को लेकर अत्यंत चिंतित है। इसीलिए वह ज्योतिष से उसके भविष्य के विषय में पूछती है और ज्योतिष जन्मपत्री देखकर बताता है कि ''रमेश के घर शनि का वास है। पूरे नौ वर्ष तक यह कष्ट भरा समय चलेगा। मगर जब शनि जाएगा तो बहुत कुछ देकर जाएगा। तभी नौकरी और विवाह का योग है। यदि विवाह और नौकरी का योग चौबीस वर्ष की आयु तक नहीं बना तो समझो फिर रमेश का कुछ नहीं होगा।''[143] ज्योतिष के माध्यम से मनुष्य की जीवन दशा को पूर्णरूप से नहीं अपितु कुछ हद तक समझा जा सकता है। ज्योतिषी की गणना सही निकली और रमेश को पुलिस की नौकरी प्राप्त हुई और विवाह भी हो गया। 'जीरो रोड़' में दुबई में भी सिद्धार्थ, ईयाद और रमेश द्वारा कहवा पिया जाता है और कहवे से भविष्य देखा जाता है क्योंकि ''ईयाद फाल देखने में माहिर है।''[144] 'पारिजात' उपन्यास में रोहन को भी एक ''ज्योतिषी ने

---

[143] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण–2013 पृ0 39

[144] नासिरा शर्मा, 'जीरो रोड़' भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली–110003, संस्करण–2013 पृ0 64

बताया था आपके और आपकी पत्नी के ग्रह मिलते नहीं हैं ... उससे अलग होना ही आपके लिए ठीक होगा...' तब उसे बड़ा गुस्सा आया था। मन–ही–मन वह कह उठा कि इस तरह के लोग यूरोप आकर खासी कमाई करने लगे हैं, मगर साल–भर बाद जब वह दोबारा टकराया तो रोहन ने उससे खुद पूछा था कि देखें अब क्या कहता है।

आपके भाग्य में औरत का सुख नहीं है। उसने बड़ी कुटिल मुस्कान के साथ कहा था, फिर हँसकर बोला था, उसके भी उपाय हैं।

रोहन को उसका यह जुमला बार–बार याद आता रहा, उस दौरान जब वह उस पूरे जंजाल में फँसा रहा। अभी भी उसे लगता है कि जैसे वह किसी भूलभुलैया में फँस गया है। लाख चाहने पर भी उसे बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिल रहा है। यह छटपटाहट उसे हर पल व्याकुल बनाए रखती है। आज पहली बार उसे महसूस हुआ कि जैसे वह रूही के ग़म में अपने को देख रहा हो।''[145] लेकिन जब उस ज्योतिषी का कथन सत्य होता है तो रोहन पुनः उससे मिलने जाता है। इस प्रकार ज्योतिष पर अन्धानुकरण दिखाना ही लेखिका का मुख्य उद्देश्य था इसी तरह समकालीन युग में भूत–प्रेत पर विश्वास करना एक सर्वमान्य विश्वास है जिसका वर्णन नासिरा शर्मा ने अत्यंत संक्षिप्त रूप में 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में किया है। उपन्यास में बँटवारे के समय जब निज़ाम अपना गाँव छोड़कर पाकिस्तान जाता है तो उसका भतीजा गोलू उसके पीछे जाता है लेकिन ''सामने खेत के बीच में पीपल का अकेला दरख़्त देख उसकी हिम्मत चाचा के पीछे जाने की नहीं हुई। सुंदर काकी पीपल वाली चुड़ैल की कहानी कई बार सुना चुकी थी।''[146]

नासिरा शर्मा ने 'ठीकरे की मंगनी','कागज़ की नाव' और 'अक्षयवट' उपन्यासों के माध्यम से दर्शाया है कि मुख्यतः ग्रामीण परिवेश में रहने वाले लोग अपनी बीमारी के उपचार के लिए चिकित्सालय न जाकर तंत्र–मंत्र कराने वाले तांत्रिकों व बाबाओं के पास जाते हैं, उन्हीं पर विश्वास रखते हैं। 'ठीकरे की मंगनी'

---

[145] नासिरा शर्मा, 'पारिजात' किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2017 पृ0 58–59
[146] नासिरा शर्मा, 'जिंदा मुहावरे' वाणी प्रकाशन,, नई दिल्ली, संस्करण–2012 पृ0 11

उपन्यास में लछमिनिया महरुख़ को किसी के बीमार होने की सूचना देती है और बताती है कि वह किसी मौलवी से अपना ईलाज करवा रहा है क्योंकि ''सफेद मस्जिद वाले मौलवी साहब पर ओका बड़ा विश्वास है, दीदी। झाड़–फूँक चल रही है। ...मौलवी साहेब पचास पैसे में पुड़िया देत है, फिर दीदी, बिसबास की भी बात है।''[147] इसी प्रकार के विश्वास से रेवती और शंकर की माँ भी घिरी है जो अपने दोनों बच्चों को उनकी बीमारी (बलात्कार की घटना से मानसिक रूप से क्षतिग्रस्त) से मुक्ति के लिए किसी पीर की मजार पर इस विश्वास से ले जाती है कि वहाँ से उसके बच्चे एकदम स्वस्थ होकर लौटेंगे। उनकी माँ का विश्वास था कि ''बुजुर्गों के मकबरे में बड़ी कुव्वत होती है। जब तक हसन–हुसैन अपने बाबा के मकबरे से चिपकते रहे तब तक उन पर ज़हर का असर न हुआ। इसलिए मैं भी शाह बाबा के कदमों पर बेटे को लायी हूँ कि उसकी दीवारों की छुअन से इसके बदन का रोग जाता रहे। ऐ शाह बाबा, मेरे बेटे को ठीक कर दो।''[148] एक माँ का अपने बच्चों की सलामती के लिए पीर की मजार पर जाने का वर्णन समकालीन युग के अनुरूप है क्योंकि वर्तमान में लोगों का झुकाव इस ओर अधिक है। इसी विश्वास के चलते जन–सामान्य तंत्र–मंत्र और इन साधु–बाबाओं द्वारा दिये जाने वाले ताबीज़ आदि पर यकीन करने लगते हैं। 'कुइंयाँजान' उपन्यास में राबिया की माँ इसी प्रकार की पात्रा है जो शकरआरा को समीना के लिए संतान प्राप्ति हेतु तावीज़ बनवाने को कहती है क्योंकि विवाह के कई वर्षों पश्चात् भी समीना संतान सुख से वंचित है। उसका कथन है– ''मैं तो कहती हूँ, बेगम साहिबा! एक बार दुल्हन की गोद–भराई के लिए आप मौलाना से मिलकर देखें। साल के अंदर घर में किलकारी न गूँजने लगे तो मेरा नाम बदल देना।''[149] इस प्रकार यह पात्र युग के अनुरूप दिखाई देते हैं।

ईश्वर के प्रति अनास्थावादी वृति का संघर्ष

ईश्वर के प्रति आस्था धर्म की एक मूल प्रवृति है। प्रारंभिक अवस्था से ही मनुष्य ईश्वर में विश्वास करता है। जब भी मनुष्य को अपने जटिल प्रश्नों का हल

---

[147] नासिरा शर्मा, 'ठीकरे की मंगनी' किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 75

[148] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण–2013 पृ0 316

[149] नासिरा शर्मा, कुइयाँजान, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 152

नहीं मिलता, तो उसके समाधान के लिए वह ईश्वर के सामने नतमस्तक होता है। वस्तुतः धर्म की इसी विशिष्टता के कारण मानव ने आलौकिक सत्ता की महत्ता को स्वीकार किया है। यद्यपि युगीन परिस्थितियों में मानव की ईश्वर के प्रति आस्था अनास्था में परिवर्तित हो रही है उसका परमात्मा के प्रति विश्वास टूटता जा रहा है। लेकिन फिर भी इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि कठिन परिस्थितियों में भी मानव अधिकतर ईश्वर की शरण में गया है। इसी ईश्वर के प्रति अनास्थावादी वृति के प्रति संघर्ष को व्यक्त करना ही लेखिका का मुख्य उद्देश्य है वो अपने उपन्यासों के माध्यम से लोगों के दिलों में ईश्वर के प्रति आस्था उजागर करना चाहती है इसलिए नासिरा शर्मा के उपन्यासों 'सात नदियाँ एक समंदर', 'जिंदा मुहावरे' और 'अक्षयवट' में ऐसे पात्रों का विवरण मिलता है जो विषम परिस्थितियों से जूझते हैं किंतु फिर भी ईश्वर के प्रति उनकी आस्था अटूट है।

'सात नदियाँ एक समंदर' की मलीहा एक ऐसी पात्रा है जिसके पति को देशद्रोही घोषित कर सज़ा दी जाती है। मलीहा बिल्कुल अकेली हो जाती है लेकिन विपरीत परिस्थितियों में भी वह नमाज़ पढ़ना नहीं भूलती। वह अल्लाह से दुआ माँगती है

''मेरे माबूद! मुझे सीधा रास्ता दिखा। मेरे दिल और दिमाग को इतनी ताकत दे कि मैं सच्चाई के रास्ते पर चलने से न डगमगाऊँ।''[150] यह सत्य है कि विषम परिस्थितियों में व्यक्ति या तो टूट जाता है अन्यथा अपने अंदर की शक्ति को संभालकर पुनः कर्मरत हो जाता है। मलीहा भी खुदा से प्रार्थना कर रही है – ''मेरे खुदा! मुझे सहारा दे। मैं थकती जा रही हूँ। मुझे ताकत अदा कर।''[151] मलीहा का यह व्यवहार स्वाभाविक है। इसी उपन्यास की एक अन्य पात्रा सूसन का व्यवहार भी इसी प्रकार का है। उसके पति अब्बास को पदच्युत कर झूठे आरोप में फँसाने का प्रयास किया जाता है। इसीलिए सूसन ''कमरे में जानमाज़ बिछाकर खुदा की दरगाह में अपने पति के लिए दिल से दुआ मांगती है।''[152]

ईश्वर के प्रति यही आस्था लेखिका के अन्य उपन्यास 'ज़िंदा मुहावरे' में

---

[150] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, संस्करण–2013 पृ0 227

[151] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, संस्करण–2013 पृ0 227

[152] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, संस्करण–2013 पृ0 80

मिलती है जिसमें गाँव के सभी बुजुर्ग एकत्रित होकर ईश्वर से जाने–अनजाने में किए गए अपराधों की क्षमा माँगते हैं। ''हमारे गुनाह माफ कर! हमारी गलतियाँ दूर गुज़र कर मेरे माबूद! हमें अपनी ज़मीन पर इज्जत बख़्श! तू तो सारी कायनात का मालिक है, अपने बंदो का इम्तेहान इतना सख्त मत ले। हमारा सब्र न आज़मा! हम पर रहम खा!'' [153] ईश्वर को इस सृष्टि का संचालक मानकर उससे परिस्थितियों को बदलने की मांग करना स्वाभाविक है और ईश्वर के प्रति उस अटूट आस्था का प्रतीक है जो कभी भी कम नहीं होती अपितु निरंतर बढ़ती जाती है।

'अक्षयवट' उपन्यास में ज़हीर की दादी फिरोजजहाँ का चित्रण अत्यंत स्वाभाविक है। जब नकल करने के आरोप में ज़हीर को महाविद्यालय से निष्कासित कर दिया जाता है तो ऐसे समय में दादी की प्रतिक्रिया है – ''क्या मिला तुझे मेरे लाल पर बिजली गिराकर?''[154] इतना ही नहीं, अपने अतीत को याद करती हुई अल्लाह से यह भी कह देती है कि ''इस घर को तूने कभी आबाद नहीं रहने दिया।

...हमारे सुहाग भरी जवानी में छीने, मासूमों से उनके बाप छीने, बूढ़ी माँओं से उनके बेटे। आखिर हम क्यों तेरे यह सारे सितम सह रहे हैं? हमारी क्या गलती है? पाँच पुश्तें इस खानदान की दर–ब–दर हैं कहीं तो इस सिलसिले को तू रोक... ।''[155] वहीं दूसरी तरफ यह भी कहती है–''तू बड़ा रहीम और करीम है। मजलूमों, यतीमों, बेवाओं का रखवाला। जालिमों से उन्हें बचाने वाला!...'' [156]

इस प्रकार नासिरा शर्मा एक ऐसी लेखिका हैं जिनके उपन्यासों में आस्था का स्वर निरंतर गूंजता जाता है। वह कभी डगमगाता नहीं। मनुष्य कठिन परिस्थितियों में ईश्वर को याद करके ही अपना दुख हल्का करता है।

जीवन–मूल्यों के धर्मपरक विश्लेषण का वर्णन 'ठीकरे की मंगनी' व 'पारिजात' उपन्यासों में मिलता है। 'ठीकरे की मंगनी' की पात्रा महरुख़ मुस्लिम परिवेश से सम्बद्ध है और जिस गाँव में शिक्षिका की नौकरी करती है वहाँ अधिकतर हिंदू परिवार बसे हैं। इसी गाँव में 'गनपत काका के घर से कीर्तन की आवाज़ आ

---

[153] नासिरा शर्मा, 'जिंदा मुहावरे' वाणी प्रकाशन,, नई दिल्ली, संस्करण–2012 पृ0 82

[154] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण–2013 पृ0 202

[155] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण–2013 पृ0 202

[156] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण–2013 पृ0 202

रही थी....''[157] जिसे सुन महरुख़ उनके घर के द्वार पर जा पहुँचती है और अपने बचपन की उन स्मृतियों में खो जाती है जब वह अपने अन्य सहोदरों सहित खेलते हुए मंदिर में पहुँच जाती है और सभी मंदिर की शोभा देख एवं कीर्तन सुन मुग्ध हो उठते हैं। रचनाकार के शब्दों में ''हनुमान जी का छोटा–सा मंदिर उसे याद आया।

...हनुमान जी के लाल बदन पर लचका लगी पीली धोती और गेंदे के फूल भी देख आई थीं....।''[158] इनके माध्यम से नासिरा शर्मा की सभी धर्मों के प्रति समान दृष्टि व श्रद्धा की अभिव्यक्ति होती है।'ठीकरे की मंगनी' में रफत का ईद के दिन भी घर ना आना उसके अनास्थावादी होने की ओर संकेत करता है।

रूढ़ियों के द्वन्द्व के प्रति संघर्ष

नौरूज़ के तेहरवें दिन 'सीज़दे बदर' का दिन मनाते हैं। इस दिन को ईरानी अशुभ मानते हैं। वे सुबह ही घर छोड़कर बागों, पार्कों में चले जाते हैं, ताकि पहाड़ों, मैदानों की हरियाली उनके जीवन में खुशहाली भर दे। हर घर उस दिन खाली होता है। जाते समय वे गेहूँ, प्याज़ की सारी हरियाली, जो नौराज़ के दिन के लिए बोते हैं, बरतन सहित ले जाते हैं। इसी दिन कुंवारी लड़कियाँ घास में गाँठ बाँधकर अच्छा पति पाने की मन्नत मानती हैं।'सात नदियाँ एक समंदर' में इसका वर्णन करते हुए रचनाकार कहती हैं – ''आज सीज़दे बदर का दिन था, रिवाज़ के अनुसार कोई भी घर पर नहीं था। अपशकुन जो माना जाता था। नौरूज़ के लिए जो गेहूँ गहरी तश्तरी या प्याली में बोते थे उसे उठाकर जंगल में फेंकने जाना होता था क्योंकि विश्वास ऐसा बना है कि नए वर्ष 'नौरूज़' के बाद ऐसा करने से घर की सारी मनहूसियत दूर हो जाती है। इस दिन लड़कियां घास (उसी गेहूँ के फुटाव) में गाँठ बाँधकर अपने भावी पति को पाने की मनोकामना करती थी।''[159] लेकिन यह सब सुनकर तय्यबा को हँसी आ जाती है। वह सोचती है कि''घर की मनहूसियत को फेंकने लोग जंगल की ओर जातें हैं पर अपने अंदर की मनहूसियत

---

[157] नासिरा शर्मा, 'ठीकरे की मंगनी' किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 85

[158] नासिरा शर्मा, 'पारिजात' किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2017 पृ0 28

[159] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, संस्करण–2013 पृ0 17

को कहाँ उगलेंगे।''[160] ईरान में सीज़दे बदर के दिन को अशुभ माना जाता है।

दूसरे दिन शाम को महरुख़ से मिलने ख़ाला और रफ़त भाई भी आए। स्टेशन पर गाड़ी चलने से पहले रफ़त भाई ने संजीदा आवाज़ में कहा, ''मैं तुम्हारा गाँव देखने जरूर आऊँगा, महरुख़। फिर गहरी आँखें झपका कर खिड़की के पास से हट गये थे। अब्बू, अब्बास, हैदर और दूसरे चचाजाद भाइयों से मिलने में महरुख़ रफ़त भाई को एकदम भूल गई। जिनको दस साल अपने ख़्यालों में बसाया, पाँच–छः साल उन्हें ही भुलाने में लगा दिए थे। जख़्म भरने के साथ दिल के किसी कोने में रफ़त भाई भी दफ़न हो गए थे। क्योंकि उनके नाम पर न अब दिल धड़कता था, न चेहरा लाल पड़ता था। सब कुछ बेचारगी में बदल चुका था। अब जब कभी उसे अपनी उस वक़्त की बेक़रारी याद आती, तो उसे रंज होता कि आखिर वह किस मुसीबत में फंस गई थी और कितना वक़्त उसने गँवा दिया था ? जब गाड़ी रेंगने लगी, तो हिलते हाथों के बीच से कहीं रफ़त भाई का चेहरा उभरा, एक सवाल की तरह। महरुख़ ने हाथ हिलाया। ट्रेन ने रफ्तार पकड़ ली। अपना बिस्तर बिछाकर वह आराम से लेटकर किताब में डूब गई।''[161]

''स्वतन्त्रता के बाद शिक्षा के प्रसार का आन्दोलन गाँव–गाँव पहुँचा था। पिता जी बताते हैं कि उस समय जो बच्चों को पाठशाला नहीं भेजा जाता था, उससे जवाब तलब किया जाता था। पेशेवर लोगों के बच्चे भी पढ़ने आने लगे थे, जिन्हें पता था कि उन्हें बाप–दादा का पेशा ही करना है, फिर आज उसी शिक्षा के नाम पर कटाक्ष क्यों? पुरानी मान्यताएँ सड़–गलकर लुप्त हो चुकी हैं, उनकी आज दुहाई क्यों? समाज को आगे जाना है या पीछे ?''[162]

जब उसकी जिंदगी में ग्रहण लगना शुरू हुआ, तो वह आतंकित–सी होकर माँ से एक दिन कह बैठी थी। सब कुछ सुनकर माँ सन्न–सी बैठी रही, फिर बच्चे की दुहाई देने लगीं और अन्त में इतना कह कर रोने बैठ गई थी, ''यही तेरा भाग्य था, शालू। इसे ही संवार, बेटी, रीति–रिवाजों से कट कर कौन जी पाता है, पगली! अपना और दूसरों का हिस्सा भी भोगना ही औरत का भाग्य है, तू उससे अलग

---

[160] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, संस्करण–2013 पृ0 17

[161] नासिरा शर्मा, 'ठीकरे की मंगनी' किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013 पृ0 121

[162] नासिरा शर्मा, 'शाल्मली' धाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, संस्करण–2012 पृ0 11

कहाँ है ?

माँ की इस बात ने उसको दुख की जगह गुस्सा दिलाया था, यह भी कोई बात हुई उसके बाद उसने माँ से कुछ कहा न पिता से, बल्कि हर बार अपने जीवन का बेहद सुखी पहलू दोनों के सामने रखा, जैसे वह बहुत मगन है, बहुत मस्त है, अपने जीवन से पूर्ण संतुष्ट।''[163]

''जो भय समीरा और मार्क को था वह व्यावहारिक रूप से उसके आला अफ़सर को भी था कि कहीं रूढ़िवादी सोच वाले आतंकवादी हंगामा न बरपा कर दें और यह प्रचार इराक़ स्थित मल्टीनेशनल आर्मी के लिए बहुत भारी न पड़े। जोर–ज़बर्दस्ती वाली दुर्घटनाएँ घटी थीं, वह दबा दी गईं थीं। यह बात मामूली स्तर की नहीं थी। माना कि विवाह जैसी पाक संस्था के अन्दर, इच्छा के साथ यह रस्म अंजाम पाने वाली थी मगर जब घृणा का समन्दर ठाठें मार रहा हो उस वक्त छोटी–सी तीली भी भयंकर आग़जनी का कारण बन सकती है। ख़ासकर तब जब आर्मी के लौटने की चर्चा चल रही हो और इस आक्रमण के विरोध में दुनिया के अवाम अपना एतराज लगातार दर्ज़ कर रहे हों।''[164]

धर्म के आधुनिकीकरण के प्रति संघर्ष

धर्म मानवीय समाज का एक अभिन्न अंग है क्योंकि धर्म ही समाज को नियंत्रित करने वाली शक्ति है। धर्म को मनुष्य के मार्ग दर्शक के रूप में स्वीकारा जाता है। लेकिन आधुनिक परिवर्तित युग में जब समाज, राजनीति एवं संस्कृति में निरंतर परिवर्तन होते जा रहे हैं तो धार्मिक परिवेश इस परिवर्तन से अछूता कैसे रह सकता है? धर्म के इस आधुनिकीकरण को नासिरा शर्मा के उपन्यासों में भी देखा जा सकता है।

धर्म जो मनुष्य को दया, ममता, त्याग, धैर्य और सहिष्णुता का पाठ पढ़ाता है, का मूल भाव कहीं खो गया है। धर्म के नाम पर होने वाले युद्धों और झगड़ों ने धर्म का रूप विकृत कर दिया है। कभी राजनीतिज्ञों द्वारा तो कभी धर्म के ठेकेदारों द्वारा लोगों की धार्मिक भावनाओं को उकसाकर धार्मिक उन्माद को बढ़ावा दिया जाता है

---

[163] नासिरा शर्मा, 'शाल्मली' राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, संस्करण–2012 पृ0 121

[164] नासिरा शर्मा, 'अजनबी जजीरा' पृ0 134

और उनके मस्तिष्कों में ऐसे भाव भर दिये जाते हैं कि वे अपने धर्म को श्रेष्ठ मानते हुए किसी भी प्रकार के नैतिक–अनैतिक कार्य करने को तत्पर हो जाते हैं। राजनीतिज्ञों द्वारा फैलाए जाने वाले इसी धार्मिक उन्माद को रचनाकार ने 'सात नदियाँ एक समंदर' में दर्शाया है जहाँ अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु करवाई गई क्रांति को धार्मिक क्रांति का रूप दे दिया गया। ईरान में फैलाए जाने वाले धार्मिक उन्माद का अंकन एक पासदार के वक्तव्य से मिलता है –''यदि जवान लड़के–लड़कियाँ इस्लाम की रोशनी तले नहीं हैं तो माँ–बाप का फर्ज़ बनता है कि उनको सीधे रास्ते पर लाएँ और उनके मन में युद्ध की गरिमा की भावना जगाएँ और उन्हें रणक्षेत्र की ओर जाने के लिए प्रेरित करें। हमारा युद्ध धर्मयुद्ध है।''[165] मानव समाज के लिए धर्म एक ऐसी वस्तु है जिसके लिए वह किसी भी प्रकार के बलिदान एवं त्याग करने के लिए तत्पर रहता है। इसी तथ्य को जानकर अय्यातुल्ला खुमैनी के समर्थक ग्रामीण लोगों की धार्मिक भावनाओं को उकसाकर उन्हें युद्ध के लिए प्रेरित करते हैं और धर्म की रक्षा करना उनका कर्त्तव्य बताते हैं – ''आँसू गैस के सिलेण्डर फटते ही सारे लोग तितर–तितर होने लगे। एम्बुलंस लाशें उठाने व ज़ख्मी उठाने पहुँच गई। दूसरी सड़कों पर टायर जलाकर लड़के बहते आँसुओं को रोक रहे थे।''[166] धर्म के नाम पर सत्ताधारी लोगों द्वारा किस प्रकार धार्मिक उन्माद को बढ़ावा दिया जाता है, ये देखने योग्य है। इसीलिए मार्क्स ने धर्म को अफीम का गोला कहा है। जहाँ वह मानव व मानवता को नहीं अपितु धर्म को श्रेष्ठ मानता है और संपूर्ण विश्व को शमशान में बदलने को आतुर हो उठता है।

धर्म के नाम पर भावुक ईरानी जनता नारे लगा रही थी।''इन्केलाब बराय इस्लाम न बराय नान''[167] बच्चे और बूढ़े सब लड़ने–मरने को तैयार थे। किसलिए ? दूसरे भाई को मारने के लिए ? उनका उत्तर था, 'खुदा की राह में धर्म की खातिर यह युद्ध है। ईरान में ईरानी धार्मिक क्रांति, भारत में गोधरा कांड, रामजन्मभूमि और बाबरी मस्जिद विवाद इसी धार्मिक उन्माद के युगीन प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

युगीन परिवेश में धर्म से जुड़ी पाप–पुण्य, नैतिकता–अनैतिकता, उपासना एवं

---

[165] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, संस्करण–2013 पृ0 150

[166] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, संस्करण–2013 पृ0 42

[167] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर, वाणी प्रकाशन, संस्करण–2013 पृ0 42

धार्मिक विधि–विधानों की धारणा दिखावा मात्र बनकर रह गई है। धर्म के क्षेत्र में श्रद्धा भाव का लोप होता जा रहा है और इसी कारण अपराधी तत्व धर्म को अपने संरक्षण का माध्यम मानते हैं जिससे कि सभी उनके द्वारा किए कुकृत्यों को भुलाकर उन्हें अच्छा इन्सान समझने लगे। धर्म के इस परिवर्तित रूप का उल्लेख नासिरा शर्मा ने 'अक्षयवट' उपन्यास में किया है। रचनाकार के शब्दों में ''सुधीश टार्जन, कासिम उर्फ खूनी पंजा, रंजन उर्फ सुतली बम, सुधनवा उर्फटिपरा, गौहर उर्फ खंजर ने पैंतरा बदल लिया। शरीफों की पंक्ति में बैठने के लिए न केवल अपना हुलिया बदला बल्कि अपने गुरगों से चारों तरफ यह उड़वाया कि उस्ताद ने तौबा कर ली है और नेकी के कामों में बाकी ज़िंदगी गुजारने का फैसला किया है। सो पाँचों वक्त की नमाज पढ़ते हैं, अल्लाह के नाम पर खैरात करते हैं और बिना बाप की बच्चियों की शादी करा विधवाओं और यतीमों की सरपस्ती करते हैं। मोहल्ले के मंदिरों में घंटियाँ बजने लगीं। अखण्ड कीर्तन की आवाजें आतीं और प्रसाद देते हुए पंडित जी बताते कि पापी कब अपनी काया बदल ले, यह सब ऊपरवाले की कृपा है।''[168] लेकिन पंडित जी इस तथ्य से सर्वथा अनभिज्ञ थे कि इन सभी की दृष्टि में धर्म का कोई महत्त्व नहीं है अपितु उनके दुष्कर्मों को छुपाने का माध्यम है। ''बदलें परिदृश्य में शहर ने एक गम्भीर मुद्रा धारण कर ली थी जिसमें उनका अस्तित्व स्वयं उनसे जवाब–तलअ कर रहा था।''[169] वे मानते हैं कि सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से जितने बुरे काम कीजिए उन सबके पापों का परिमार्जन रूपये खर्च करके सरलता से किया जा सकता है। इसीलिए वे अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए मंदिर बनवाते हैं, दान करते हैं और धर्म–शिलाएँ निर्मित करवाते हैं।

अतः नासिरा शर्मा के उपन्यासों में धर्म के आधुनिकरण स्वरूप को युगीन परिवेशानुकूल दिखाया गया है।

6. समाजिकता

सामान्य शब्दों में समाजिकता से भाव नगरों में जाकर वहां वास करने से लिया जाता है। यह वह प्रक्रिया है जिसमें गाँवों के लोग शहरों में बसने चले जाते

[168] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण–2013 पृ0 380

[169] नासिरा शर्मा, ज़ीरो रोड़, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण–2013 पृ0 380

हैं या देहात ही शहरों में परिवर्तित होने लगते हैं। नगरों में समुदाय का बड़ा आकार होता है। यहाँ परम्परागत विचारों और परम्परागत रूढ़ियों का स्थान नियम और कानून ले लेते हैं। बाजार, कारखाने, उद्योग, शिक्षण संस्थाएँ, अस्पताल इत्यादि जो सुविधायें ग्रामीण क्षेत्रों में आसानी से प्राप्त नहीं हो पाती यही नगरों की विशेषता के कारण लोगों के आकर्षण का कारण बनती हैं। इससे लोगों के जीवन–जीने के ढंग में बदलाव आता है। जो उन्हें आधुनिकता की ओर ले जा रहा है।

यद्यपि समाजिकता के कारण मनुष्य को अधिकतर सुख–सुविधाओं का लाभ मिलता है तो दूसरी ओर शहरी जीवन यापन करने से सामाजिक रिश्तों नातों से कट सा गया है क्योंकि यह अधिक कृत्रिम प्रतिस्पर्धा और स्वार्थ से पूर्ण और आत्मीयता से शून्य होता है। शहरीकरण के बारे में राजेन्द्र प्रसाद कहते हैं कि "शहरीकरण की प्रवृत्ति ने अनेक समस्याओं को जन्म दिया। नौकरी के लिए शहर की ओर भागने, आवास की समस्या तथा दूसरी आर्थिक कठिनाईयों के कारण संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार भी चरमराने लगा। प्रकृति से अलगाव, शहरी जीवन की कृत्रिमता, कार्यालयी जिन्दगी की यांत्रिकता, मध्यवर्गीय जीवन की अनेक कठिनाईयों, रोजगार के अवसरों का अभाव आदि ने शहरी व्यक्ति को तनावग्रस्त कर उसे मानो स्नायुरोगी बना दिया है। अपराधी मनोवृत्ति स्वार्थवादिता, परस्पर प्रतिस्पर्धा, भ्रष्टाचार आदि अनेक हीन वृत्तियों के साथ घोर व्यक्तिवाद ने भी शहरी व्यक्ति को आक्रांत कर दिया।"[170] संक्षेप में कह सकते हैं कि जनसंख्या का ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों में जाना शहरीकरण एवं नगरीकरण कहलाता है। इसके परिणामस्वरूप जनसंख्या का बढ़ता हुआ भाग ग्रामीण क्षेत्रों में रहने की बजाए शहरों में रहता है। पिछले कुछ दशकों से जनसंख्या की वृद्धि के साथ–साथ जनसंख्या का ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर स्थानान्तरण भी हुआ है। दिनोदिन नगरों के निर्माण एवं विकास के कारण लोगों का नगरों के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है किन्तु बढ़ते हुये नगरीकरण के कारण अपराध, बाल–अपराध, मादक वस्तुओं का सेवन, आवास की कमी, भीड़–भाड़, बेरोज़गारी, प्रदूषण इत्यादि समस्याओं ने भी जन्म लिया है। नगरीकरण की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए इसकी परिभाषाओं पर

---

[170] राजेन्द्र प्रसाद, तार सप्तक के कवियों की समाज चेतना (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 1987), पृ० 14

विचार करना बहुत आवश्यक है।

पी.एम. हॉसर के अनुसार– "नगरीकरण जनसंख्या के केन्द्रीकरण की एक प्रक्रिया है। यह दो प्रकार से चलती है : जनसंख्या के केन्द्रीकरण की संख्या में वृद्धि एवं किसी केन्द्र विशेष के आकार में वृद्धि।"[171]

स्मेल्स के अनुसार "नगरीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत किसी क्षेत्र और वहां के निवासियों का शहरी होना है।"[172]

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि नगरीकरण से भाव प्रवास के द्वारा शहरों की आबादी में वृद्धि अर्थात् ग्रामीण आबादी की तुलना में शहरी आबादी के अनुपात में तेजी से वृद्धि है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में नगरीकरण की समस्या देखने को मिलती है।

आज भारत देश के लगभग प्रत्येक निम्न और मध्य वर्ग के लोग गाँव को छोड़ शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। मुस्लिम परिवार अब गाँवों में खुद को कभी सुरक्षित महसूस नहीं कर रहा है। फिर गाँवों में सुविधाओं की कमी उन्हें शहरों की ओर खींच लाती है। नासिरा शर्मा के उपन्यास'कुइयाँजान' का पात्र जमाल खाँ इसके बारे में स्वयं से सवाल करता है कि "क्या उन्हें उस जमीन–जायदाद से प्यार है या फिर उन यादों से, जो उस धरती से जुड़ी हैं।"[173]

'शाल्मली' उपन्यास में भी शहरों के हो रहे टुकड़ों को देख वहाँ के वासी बहुत परेशान हैं। इन शहरों के टूटने का कारण एक मात्र शहरों में बढ़ रही निरन्तर आबादी है। शाल्मली दिल्ली में रहती है। दिल्ली का बदल रहा स्वरूप देख कर वह चिन्तित हो उठती है। इसके बारे में सोचते हुये कहती है कि''यह उसके पुरखों का शहर है। जब दिल्ली छोटी थी, जंगल थी, दिल्ली दिल्ली थी और आज इस दिल्ली में कितने नए शहर उग गए हैं। जब भी शाल्मली दिल्ली के उन उजाड़ इलाकों की तरफ निकल जाती है जिधर कभी सिर्फ अरावली की अन्तिम छोर की ऊँची–नीची बिखरी पहाड़ियों के बीच कीकरों के झुरमुट और झरबेरी की झाड़ियां

---

[171] जे.पी सिंह, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन (नई दिल्ली:प्रेंटिस हाल आफ इंडिया, 2008), पृ॰ 285

[172] जे.पी सिंह, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन (नई दिल्ली:प्रेंटिस हाल आफ इंडिया, 2008), पृ॰ 286

[173] नासिरा शर्मा, कुइयाँजान (नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, 2005), पृ॰ 84

फैली थीं, वहां उनको देखते–देखते डी.डी.ए. की कॉलोनियां।"[174] यह सब देखकर दिल्ली शहर की इमारतें भी सोचती हैं कि इस शहर का आगे क्या हाल होगा। अखिरकार इतने लोग हर वर्ष कहां से आ जाते हैं।

कराची जैसा शहर जहाँ पर लोगों को सभी सुख–सुविधाएँ उपलब्ध थी। उसका वर्तमान रूप बिल्कुल बदल चुका है। वह बंटवारे के पश्चात् पूर्ण रूप से नष्ट हो गया है। वह अपना पूर्ण रूप खो चुका था। इसका वर्णन करते हुये लेखिका बताती है कि बंटवारे के बाद जनसंख्या की बढ़ोतरी ने इसका रूप परिवर्तित कर दिया। वे कहती हैं– अब कराची कम आबादी वाला एक सुन्दर बन्दरगाह नगरी नहीं रह गया था। बंटवारे के बाद गंगा–जमनी संस्कृति से उखड़ा, पढ़ा लिखा वर्ग पाकिस्तान सरकार की बागडोर संभाल, फौज को तरतीब दे, अपने में जमाने से लगा हुआ था। बढ़ती आबादी तिजारती जरूरतों के अनुसार धीरे–धीरे शहर अपनी शक्ल बदल रहा था। हरियाली दम तोड़ रही थी।"[175]'जिन्दा मुहावरे' उपन्यास में दर्शाया गया कराची शहर का यह रूप लोगों के समक्ष भय उत्पन्न कर देता है। शहरीकरण की एक प्रमुख समस्या लोगों का परिवार से अलग होना भी है। जिसके कारण उनमें दूरी बढ़ जाती है और जब वह लौट कर वापिस आते हैं तो उन्हें असफलता का सामना करना पड़ता है क्योंकि उन्हें वहाँ कोई दिखाई नहीं देता यही स्थिति'पारिजात' उपन्यास में रोहन की है, जिसके लौटने से पहले ही उसकी माँ की मृत्यु हो जाती है। रोहन जब स्टेशन पहुँचता है तो सोचता है– "माँ का चेहरा अचानक कौंध गया। हमेशा वह उसे लेने प्लेटफार्म पर बाबा के साथ खड़ी दूर से हाथ हिलाती, उसे देखती और वह हँसता हुआ दरवाजे पर आन खड़ा होता और रेलगाड़ी की धीमी होती रफतार के साथ कूदकर माँ के गले लग जाता। बरसों से यही होता चला आ रहा था, मगर आज उसे लेने स्टेशन कोई नहीं आया।"[176] जिससे रोहन का जीवन तहस–नहस हो जाता है। शहरीकरण ने परिवारजनों को एक–दूसरे से इतने दूर कर दिया है कि वह कभी मिल नहीं पाते।

अतएव कह सकते हैं कि आज भौतिकवादी लोग अपने जीवन में सभी

---

[174] नासिरा शर्मा, शाल्मली (नई दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, 1994), पृ॰ 55

[175] नासिरा शर्मा, जिन्दा मुहावरे (नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 1993), पृ॰ 28

[176] नासिरा शर्मा, पारिजात (नई दिल्ली : किताब घर र्पकाशन, 2011), पृ॰ 7

सुख–सुविधाओं की प्राप्ति हेतु शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं परन्तु उनके इस पलायन से गाँवों में जनसंख्या तीव्रता से घटती जा रही है और नगरों में तीव्रता से बढ़ रही है जिस कारण शहर टूटते जा रहे हैं।

7. सांस्कृतिकता

नासिरा शर्मा ने अपने कथा साहित्य में सांस्कृतिकता चिन्तन को विभिन्न कहानियों, उपन्यासों एवं रिपोर्ताज में व्यक्त किया है। नासिरा ने ईरान, अफगानिस्तान के साथ–साथ इतिहास और संस्कृति के जीवन मूल्यों को दर्शाया, जिसमें मानवीय सम्बन्धों की जटिलता और वैचारिक दबाव को मानवीय स्तर पर व्यक्त किया है, जिसमें महिलाओं और पुरूषों के मानवीय सम्बन्धों की जटिलताओं और विषंगतियों को व्यक्त किया है, जिससे बहुत से सामाजिक सम्बन्धों को भी लेखिका ने वरीयता दी है। वस्तुतः नासिरा शर्मा ने कथा साहित्य में मानव मूल्यों को विशेषकर नारीमन की संस्कृति, व्यवस्थाएँ और प्रकृति इन सबसे सम्बन्धित लेखिका ने अपनी बुनियादी प्रश्नों को मूल संवेदनाओं से जोड़कर उनका चित्रण किया है।

नासिरा शर्मा ने इसके लिए इलाहाबाद के किसी पुराने मुहल्ले की गलियों से अपने पात्र लिए हैं। यहाँ बताशेवाली गली है, मदरसे वाली गली है। उपन्यास की शुरूआत एक बच्चे के जन्म लेने और एक बूढ़े की मौत से होती है, ''मोहल्ले के कुएँ बरसों पहले कूड़े से पाट दिए गए थे। एक दो घरों में हैंडपंप थे जो खराब पड़े थे। मस्जिदवाली गली से मिली मदरसेवाली गली थी। वहाँ कुछ पक्के बड़े–बड़े घर थे। उनके यहाँ भी पानी की हायतोबा मची थी। शिव मंदिर धोया था न भगवान का भोग लगाया था। उनके सारे गजरे लोटे लुढ़के पड़े थे। नल की टोटी पर कौआ पानी की तलाश में आ–आकर बैठ उठ उड़ चुका था।''[177]

नासिरा शर्मा ने अपने कथा साहित्य में इलाहाबाद नगर के मुहल्ले कुएँ, मस्जिद, मन्दिर, चौपाल, चबूतरे वहाँ के लोगों को दर्शाया है। रचनाकार ने अपनी रचनाओं में सांस्कृतिक चिन्तन के प्रमुख रूप से ग्रामीण एवं शहरी परम्पराओं को भी

---

[177] फातेमा शेख अफरोज, नासिरा शर्मा का कथा साहित्य वर्तमान समय के सरोकार, अतुल प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2012, पृ. 137

भोगवाद से जोड़ा है, इसके अलावा मानवीय चरित्र एवं सांस्कृतिक चिन्तन को निम्न वर्गों में बाँटा है।

आम आदमी की झटपटाहट– आधुनिकता के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों के मतों को हमने देखा है। आधुनिकता आज के युग का सबसे अधिक विवादास्पद शब्द है। इस पर भाव एवं विषयबोध दोनों ही दृष्टिकोण से विचार किया गया है। आधुनिकता को समसामयिक युगबोध भी कहा गया है। आधुनिकता चिंतन का बहुपक्षीय आयाम है, जो समसामयिक परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में व्यक्ति की समाजगत प्रतिक्रिया के रूप प्रकट होता है। हर प्राणी अपने परिवेश के प्रति सचेत रहता है, यही चेतना व्यक्ति और परिवेश में प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है, 'व्यक्ति अपने निजी चिंतन के आलोक में बाध्य परिवेश के बदलते हुए मूल्यों को जाँचता है। उसका निजी चिंतन समसामयिक पृष्ठभूमि में विशिष्ट प्रकार की प्रतिक्रिया से गुजरता है। इसी प्रक्रिया से आधुनिकता का स्वरूप बनता बिगड़ता है।

भारतीय संस्कृति का कथात्मक जीवनन्त लेखिका ने अपने उपन्यास 'अक्षयवट' में व्यक्त किया, जिसमें इलाहाबादी संस्कृति को आमजन से जोड़ा, इसके अलावा शहर का यथार्थ सत्य, इलाहाबादी संवेदनाओं को मनुष्य की मूल संवेदनाओं से जोड़ा।

नासिरा शर्मा का महाकाव्यात्मक उपन्यास 'अक्षयवट' प्रतीक है उन अविराम धारा का, उस अक्षर विरासत का, जिसका शहर इलाहाबाद की धमनियों में सतत् विस्तार पाता है। ''इलाहाबाद शहर अपने सारे नए–पुराने चटक–मद्धिम रंगों और आयामों के साथ 'अक्षयवट' उपन्यास के जीवंत रूप में उपस्थित है, इसमें शहर की धड़कन में रची–बसी ऐसी युवा जिंदगियों की मर्मस्पर्शी कहानी है, जो विरासत में मिली तमाम उपलब्धियों के बावजूद वर्तमान व्यवस्था की सड़ांध और आपाधापी में अवसाद भरी जिंदगी जीने के लिए अभिशप्त है। इस उपन्यास के माध्यम से नासिरा शर्मा ने जीवन की जकड़न और समय की विसंगतियों की पहचानने और उनसे

मुठभेड़ करने की कोशिश की है। वस्तुतः 'अक्षयवट' को पढ़ना एक बनती–बिगड़ती और होती सभ्यता से साक्षात्कार करना है।''[178]

लेखिका ने 'अक्षयवट' में इलाहाबाद नगर की धड़कन स्पन्दन, सोच, चिन्तन, संस्कृति, रीति–रिवाज, आचार–विचार, धर्म–कर्म की परम्पराएँ, विश्वास, अंधविश्वास, बोली, खान–पान, सगुन, अपसगुन, उतार–चढाव, अन्तर्द्वन्द्व समय अनुसार बदलते चित्रण हैं। स्वकेन्द्रिता और कृत्रिमता है, मूल्यों और विवादों का टकराव है तथा अपने उपन्यास 'अक्षवट' के द्वारा इलाहाबाद शहर की संस्कृति और सांस्कृतिक चिन्तन को दर्शाया है।

प्रत्येक क्षेत्र का 'अक्षयवट' इस बात का प्रमाण है। रचनाकार ने अपने युग को जाना है, समझा है और उसे आत्मसात् करके अपने दृष्टिकोण से पाठकों के समक्ष रखा है। नासिरा शर्मा ने पुराने इलाहाबाद को अपनी चमक–दमक के साथ युग के बदलते संदर्भों से जोड़कर दर्शाया है। लोक जीवन के सभी बिंब, परिस्थितियों के घटना चक्र के साथ उतारे हैं। जनजीवन को उकेरा भी है, सहेजा भी है। यथार्थ सहित इलाहाबाद संवेदना के वे हाशिए सामने लाए हैं, जो इसकी मानसिकता को रेखांकित कर देते हैं।

नासिरा शर्मा ने 'अक्षयवट' में इस्लामिक संस्कृति से परिचय कराया है। किस प्रकार से लोग रमजान के महीने में रोजा रखते हैं। प्रत्येक मोमिन का क्या धर्म है रमजान और रोजों के विषय में।

'अक्षयवट' की कहानी शहर की उत्सव प्रियता रीति–रिवाज और तहजीब के विवरणों से शुरू होती है। हर मौसम के तीज–त्योहार उन्होंने मनाने के इलाहाबादी तौर–तरीके, मौज–मस्ती और लोगों का गहरा इन्वाल्मेंट व उस पर उनकी गंभीर प्रतिक्रियाएं बहुत अधिक डिटेल्स के साथ मौजूद हैं। इसमें गंगा–जमुनी तहजीब के लोकतत्व, कस्बाई 'हिरो–शिव' और लोगों के विश्वास और आस्थाओं का वर्णन विस्तार से किया गया है। यह सहज भी लगता है और स्वाभाविक भी। 'अक्षयवट' का मुख्य उद्देश्य यह नहीं है कि आप तीज–त्योहारों और उनके आनंद रस में

---

[178] एम. फिरोज अहमद, नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन, सामायिक बुक, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृ.144 169

सराबोर होकर रह जाएं। यह केवल पृष्ठभूमि भर है, जो इसकी असली कहानी के खादपानी के लिए उपयोगी की गई है।''[179]

''लेखिका ने 'अक्षयवट' में आदमी की झटपटाहट को दर्शाया है। मनुष्य किस प्रकार से अपने जीवन की प्रतिक्रियाओं को संकुचित और विमोचित करता है। जहीर मस्जिद के अन्दर दाखिल हुआ। दुआ–सलाम के बाद वह भी नमाज में शरीक हुआ। जनाजा उठा तो वह भी चन्द कदम चलकर बांयी गली से मुड़ गया और नीम के पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठ गया। रात का अंधेरा मिलगजी बल्बों की पीली रोशनी के धुंधलेपन में चारो तरफ एक खामोश माहौल को रच रहा था। दोपहर का शोर, लोगों के चेहरे, चहल–पहल जैसे इस रहस्यमय सरसराहट में डूब गया हो। ऐसी तन्हाई जहीर को कम ही नसीब होती है। हवा में हल्की–सी नई ठण्ड थी जिसमें नालियों की बदबू गुंथी हुई थी। एक कुत्ता जाने कहां से टहलता हुआ आकर जहीर को कुछ पल घूरता रहा, फिर दुम हिलाता हुआ पास आकर बैठ गया। जहीर ने जब कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई तो वह बदन फैलाकर लेट गया और आँखें बंद कर लीं। कुछ पल यूँ गुजर गये फिर दरवाजे के खुलने की आवाज खामोशी को तोड़ गई। जहीर ने आवाज की तरफ सिर घुमाया।''[180]

नासिरा शर्मा ने 'अक्षयवट' में आदमी की झटपटाहट से अवगत कराया है और मानवीय विचारधारा और उसका नजरिया किस प्रकार से बदलता है। मानवीय जीवन के शून्य और संवेदनाओं से टकराती हुई कई प्रकार के हालात और परिस्थितियों को आम जनजीवन से जोड़ता है। इसी क्रम में 'बहिश्ते–ए–जोहरे' में– ईरान इन्कलाब की ऐसी लरजाखेज तस्वीर पेश करता है कि– ''किसी–किसी वक्त इन्सानी वजूद से कराहियत महसूस होने लगती है। इस अशरफ–उल–मखलूकात ने दुनिया में आकर महज अपने वकार और शख्सियत को नुमायां करने और उसे हासिल करने के झमेले में ऐसी–ऐसी करतब बाजियां दिखाई हैं, जिनसे हमारी

---

[179] एम. फिरोज अहमद, नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन, सामायिक बुक, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृ.198

[180] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2016, पृ.97

तारीख के तमाम ग्रंथ भरे ही नहीं पड़े, बल्कि नुकतए लफ्ज से लहू के कतरे यूं टपक रहे हैं जैसे बरसात में छप्पर से एक–एक बूंद टपकती है।''[181]

नासिरा शर्मा ने अपने कथा साहित्य में उन विषयों का पराभव किया है जिसमें जीवन की सच्चाई आदमी की झटपटाहट है, इसके अलावा कथा साहित्य में हिन्दू मुस्लिम संस्कृति का समन्वय उन्होंने कई तहरीबे दीं जो सांस्कृतिक चिन्तन से गुजरती हैं।

''हिन्दू और मुस्लिम विचारधारा का सांस्कृतिक चिंतन– हर युग में परिस्थितियाँ तो एक सी रहती हैं और न ही उन परिस्थितियों से जूझने और लड़ने के तरीके एक से रहते हैं। वे बदलते हैं, खतरनाक ये है कि बीसवीं शताब्दी में हुई विज्ञान की तमाम प्रगति एवं प्रसार के कट्टरवाद एवं कठमुल्लापन ने विध्वंसक तरीके को अपना लिया है। आज वही लोग धर्म और मजहब के नाम पर खुलेआम हिंसा करते हैं। लोगों को मारते हैं, प्रताड़ित करते हैं। पिछले दिनों मजहबी, धार्मिक कट्टरवाद बहुत बड़े पैमाने पर योजनाबद्ध तरीके से बढ़ा है। वो इस नाम पर संगठित होता है कि मजहब, धर्म को खतरा है। यह खतरा वही है जो खुमैनी ने ईरान की जनता के सामने रखा था और वह जानता था कि अगर वह ऐसा नहीं करेगा तो उसकी सत्ता दो दिन भी नहीं चलेगी, क्योंकि उसके पास देश के विश्वास के लिए न तो कोई एजेंडा था और न कोई समझ, सिवाय युद्ध के।''[182]

नासिरा शर्मा ने अपनी रचना में हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति से परिचय कराया है। इसके साथ–साथ मानवीय मूल्यों और अपने विचारों पर केन्द्रीभूत कर दोनों समाज के लिए आवरण कथा तैयार की। साहित्यकार की कोई जाति नहीं होती है वह किसी भी जाति का हो उसकी योग्यता का सम्मान होता है। कहीं धर्म के नाम पर लोगों को मारा जा रहा है तो कहीं देश के नाम पर। रंग और नस्ल की पीड़ा को 'जीरो रोड' में बहुत ही शिद्दत के साथ महसूस किया जा सकता है, क्योंकि यह पीड़ा न सिर्फ चक की है और न ही सूडान, बांग्लादेश या भारत की। यह पीड़ा तो वैश्विक है और इसमें पूरी दुनिया का चेहरा हम देखते हैं। आदमी का काम

---

[181] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण–2013 पृ0 156

[182] एम. फिरोज अहमद, नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन, सामायिक बुक, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृ.76

आदमी से चलता है, धर्म और उन्माद से नहीं। 'जीरो रोड' की पूरी पीड़ा और सोच को हमारे सामने रखता है। मुंबई के आतंकवादी हमले के बाद यह उपन्यास और भी प्रासंगिक है, उसे देखते हुए इस उपन्यास की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

''आपका विचार और नजरिया सही है, मगर इस्लाम ने हमें दिया ही क्या है, केवल इस भावना के धर्म का अर्थ कोड़े और जजीरे हैं? जुल्म और सितम हैं? जिस धर्म की अभिव्यक्ति पिछले चौदह सौ वर्षों से खून–खराबा, कत्ल गारतगरी रही हों उससे अपनी आशा तो बंध सकती है, मगर मुझ पर दुश्ती की नहीं मेरा नाम हुसैन था। जब होश आया तो महसूस हुआ मेरा नाम ईरानी नहीं, विदेशी है। आखिर क्यों? माँ–बाप से जी भरकर लड़ा और अपना नाम कुरूश रखा....नाम बदलवाने में दांतों पसीना आया। मान लें, आपका नाम डॉक्टर ब्राउन होता और आप हिन्दू होते। तब मुझे हक था कि मैं आपके दोगलेपन पर आश्चर्य करता। क्या आप स्वयं अपने पर करते?''[183]

लेखिका ने 'यहूद सरगर्दन' कहानी में हिन्दू मुस्लिम संस्कृति से परिचय कराया है। डॉ. प्रताप हिन्दू डॉक्टर हैं, डॉ. बुहरान मुस्लिम डॉक्टर हैं परन्तु दोनों डॉक्टरों में इन्सानियत के विचार हैं न कि हिन्दू और मुसलमान के, केवल मानवता के विचार हैं।

नासिरा ने 'हथेली में पोखर' नामक कहानी में हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति के समन्वय से परिचय कराया। कैलाश हिन्दू संस्कृति से सम्बन्धित है जिसके विचार समाज के विभिन्न संस्कृति और संवेदनाओं पर तहरते दिखाई पड़ते हैं।

मैंने या पिताजी ने क्या किया? गांव से नाता तोड़ उस शहर से संबंध जोड़ा जो कभी अपना नहीं हो सकता है। भौतिक सुख की इस दौड़ में हम विकास की बातें करते रहे। उस जगह के लिए हम अपने को हम करते रहे जिसको हमारी परवाह है ही नहीं। उन पक्की दीवारों में संवेदना की थरथराहट मर चुकी है। एक बनावटी जिंदगी हमने अपना ली है। उससे निकलने की राह......? अभी पूरी तरह गुम नही है। कैलाश का टूटा हौंसला जैसे आशा की पहली बूंदें पड़ते ही हरा हो

---

[183] नासिरा शर्मा, संकलित कहानियाँ, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, संस्करण 2013,पृ. 87

गया। उसने ऊपर आसमान को ताका। नीला छत्र फैला था। सुरमई बादल तो दूर, सफेद बालों का भी कहीं पता न था।

'हवेली में पोखर' नामक कहानी में नासिरा शर्मा ने हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति से परिचय कराया है, जिसमें जिंदगी के बहुत से समझौते उतार–चढ़ाव उदासीनता और व्याकुलता को दर्शाया है। इसी क्रम में नासिरा शर्मा 'पाँचवा बेटा' नामक कहानी में इमाम बाड़े के महत्व से परिचय कराया है। इसके सज्जन सूरज और अमतूल तीन पात्र हैं जो मोहर्रम के समय चंदा इक्ट्ठा करके उनको सजाते हैं, मुहर्रम और इमाम बाड़े के स्वरूप को लेखिका ने कानपुर शहर की संस्कृति से परिचय कराया है।

"पिछले कई दिनों से अनतुल को फिक्र लगी थी कि मोहर्रम का महीना सिर पर है और काम करने वाले रहमान का कहीं पता नहीं है। बात इमामबाड़े की न होती तो वह सज्जन या सूरज, किसी को भी बुला लेती। माना कि आने वाले महीनों में लपलपाती धूप होगी, मगर बादलों का क्या ठीक कब बरसा दे रहमत की बारिश और अमतुल का सारा वदन इस ख्याल से गुनगुना उठा कि सजे ताजिया और अलम का क्या हाल होगा पानी से भीगकर?"[184]

नासिरा शर्मा ने 'असली बात' कहानी में हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति से परिचय कराया है। जिसमें सम्प्रदायवाद को लेखिका ने अपने विचारों के माध्यम से सामाजिक चिंतन को व्यक्त किया है। इसके अलावा उत्तर प्रदेश के शहरों में हिन्दू–मुसलमान की विचारधारा अलग–अलग होने के कारण उनमें मानसिक और आध्यात्मिक विकृतियाँ पनपने के कारण वर्तमान का हिन्दू–मुस्लिम तनाव का जीवन जी रहा है। जिसे 'असलीबात' नामक कहानी में लेखिका ने व्यक्त किया है।

खाली सड़क और गली में पुलिस की गश्त के बावजूद सुनसान घरों की छतों से कभी–कभार सनसनाती बोतलें और अण्डों का आदान–प्रदान जारी था, जिनका पता लगाना पुलिस के लिए मुश्किल था कि किस घर से हमला किस घर पर हुआ है। गोलियों की बौछार और हवाई फायर के दबदबे ने या फिर कबाड़ा

---

[184] नासिरा शर्मा, संकलित कहानियाँ, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, संस्करण 2013, पृ.18

खत्म हो जाने के कारण दोनों मोहल्लों में रात के आखिरी पहर के लगभग खामोशी छा गई।

कृतिकार ने अपनी रचनाओं में हिन्दू–मुस्लिम संस्कृतियों से अवगत कराया है। लेखिका का जन्म स्थान इलाहाबाद है उन्होंने वहाँ की संगमी गंगा–यमुना संस्कृति को विभिन्न रचनाओं से दिग्दर्शित किया। अधिकतर उनकी रचनाओं में मुहर्रम, नवरात्र उत्सव, दशहरा उत्सव तथा संगम का कुंभ एवं मकर सक्रांति का पर्व तथा मूलवासियों की सांस्कृतिक विचारधारा से परिचय कराया है, जिसमें संस्कृतिकता का चिंतन है।

8. आर्थिकता

पूंजीवाद का जन्म सामान्ती समाज के गर्भ से हुआ है तो साम्यवाद का जन्म समाजवाद के विकास से हुआ है। पूंजीवादी व्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर पूंजीपतियों का अधिकार होता है वहीं दूसरी ओर साधनहीन श्रमिकों को अपनी श्रम शक्ति विक्रय करने के लिये विवश होना पड़ता है। वास्तव में "पूंजीवाद उस समाज व्यवस्था का नाम है जिसके अन्तर्गत भूमि, कारखाने, औज़ार इत्यादि थोड़े से भूस्वामियों और पूंजीपतियों के अधिकार में होते हैं और जन–साधारण के पास कोई सम्पत्ति नहीं होती या बहुत थोड़ी सम्पत्ति होती है। अतः वे मजदूरों के साथ में भाड़े पर काम करने के लिए विवश होते हैं।"[185] पूंजीपति अपनी पूंजी के बल पर श्रमिकों का शोषण करते हैं।

आर्थिक मंदी ने केवल भारत को ही नहीं बल्कि समग्र विश्व को अपनी चपेट में ले रखा है। इसकी वजह से ही मनुष्य से मनुष्य के बीच गहरी खाई खड़ी हो गई है। मनुष्य के रिश्ते खोखले हो गये हैं। जिसके पास आज धन है उसके पास सम्बन्धियों की बाढ़ है और जो गरीब हैं उसे कोई स्वप्न में भी अपना रितश्ेदार नहीं मानता। व्यक्ति के जीवन का मूल आधार अर्थ है। इस आर्थिक मंदी का प्रमुख कारण भौतिकवादी जीवन यापन है। आज प्रत्येक व्यक्ति दिखावे की जिन्दगी जीता है। इस झूठी बनावटी जिन्दगी के लिये अत्यधिक धन की आवश्यकता होती है। जिसमें वह अपना ज्यादा से ज्यादा धन खर्च कर देता है। वास्तव में इस बनावटी

---

[185] गोपाल कृष्ण शर्मा, मार्क्सवाद और हिन्दी उपन्यास (नई दिल्ली : प्रकाशन स ंस्थान, 1990), पृ० 22

जिन्दगी को दिखाने हेतु व्यक्ति अपना वास्तविक जीवन नरक बना देता है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में भी आर्थिक मंदी का चित्रण हमें मिलता है।

'सात नदियाँ एक समन्दर' उपन्यास में नासिरा शर्मा ने खालिद के माध्यम से आर्थिक मंदी को दर्शाया है। वह एक बहुत ही प्रसिद्ध व्यापारी है, जिसके पास धन की कमी नहीं है किन्तु सत्ता परिवर्तित होते ही उससे उसकी धन–दौलत छीन ली जाती है। वह अपना दुख अपनी पत्नी से बांटता हुआ कहता है कि–"मेरा अपराध है धनी होना"[186] सत्ता बदलते ही उसका आधे से ज्यादा रुपया सरकार उससे हड़प लेती है। जिससे उसे आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ जाता है।

महंगाई के कारण उत्पन्न आर्थिक मंदी के परिणाम मध्य और निम्न दोनों वर्गों को भोगने पड़ते हैं।'सात नदियाँ एक समन्दर' में लेखिका ने बताने का प्रयास किया है कि ''महंगाई, बेकारी, भय ईरान में अपनी चरम सीमा पर पहुँचा हुआ था। जो पैसे वाले थे उनके तहखाने चीजों से भरे हुये थे"[187] धन में बहुत शक्ति होती है। जिसके पास धन है वह आर्थिक मंदी का कारण फिजूल खर्ची को भी माना जाता है। इस बात को लेखिका ने खालिद के द्वारा बयान किया है "तुमने उसका संतूर तो सुना है वहीं बजाकर लोगों का मनोरंजन करके पैसा कमा रहा है। यानी हजार फ्रांक मास में..... जबकि हम एक समय के खाने में हजार फ्रांक यहा के होटलों में जाकर बिना किसी दर्द के खर्च कर देते हैं।"[188]

'शाल्मली' उपन्यास का पात्र नरेश भौतिकवादी जीवन के प्रति आकर्षित है जिसके पीछे वह अपनी सारी सम्पत्ति नष्ट कर देता है। नरेश मध्यवर्ग का होने पर भी अपने शौक उच्च्य वर्ग जैसे रखता है। वह उनके समान धन खर्च करता है। शाल्मली के समझाने पर भी वह नहीं समझता। अंत में शाल्मली तबाह होते धन को देखते हुये नरेश से कहती है कि–"हर तीसरे–चौथे दिन जब तुम्हें दो–तीन सौ रुपये जेब खर्च चाहिए, तो क्या दोनों की कमाई खर्च नहीं होगी ?"[189]

'जिन्दा मुहावरे' उपन्यास का नायक निजाम भारत के अच्छे–खासे परिवार से

---

[186] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर (दिल्ली : अभिव्यंजना प्रकाशन, 1984), पृ॰ 111
[187] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर (दिल्ली : अभिव्यंजना प्रकाशन, 1984), पृ॰ 192
[188] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समन्दर (दिल्ली : अभिव्यंजना प्रकाशन, 1984), पृ॰ 196
[189] नासिरा शर्मा, शाल्मली (दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, 1994), पृ॰ 101

है परन्तु देश के विभाजन उपरान्त वह पाकिस्तान चला जाता है जहाँ उसे आर्थिक मंदी से गुजरना पड़ता है "दो दिन भूखे रहने और फुटपाथ पर सोने के बाद पेट की आग ने निजाम को मजदूरी करने, बोझ ढोने और फेरी लगाने पर मजबूर कर दिया था।...... वीसियों जमीन, बाग, कुआँ, छोड़कर जिस मुल्क को वह अपना समझकर आया वहां दो गज जमीन के लाले पड़े थे।"[190]

'अक्षयवट' उपन्यास के सलमान को भी आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ता है वह चाहता है कि वह डॉक्टर बने अर्थात् उच्च शिक्षा प्राप्त करे परन्तु धन की कमी उसके स्वप्न को तोड़ देती है वह "डॉक्टर बनना चाहता था। अब्बा ने बड़े भाई की इंजीनियरिंग की पढ़ाई पर इतना खर्च कर दिया था कि अब उनके बूते की बात न थी कि दूसरे बेटे को डॉक्टरी पढ़ाएँ।"[191]

अतएवं धन हमारे जीवन में बहुत प्रमुख भूमिका निभाता है। इसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में सभी प्रकार की सुख–सुविधाएँ प्राप्त कर सकता है। भौतिकवादी युग में व्यक्ति के सभी रिश्ते नाते इसी पर आधारित हैं। जिस व्यक्ति के पास धन है उसे आज सभी सलाम करते हैं और जिसके पास धन नहीं उसे कोई पूछता भी नहीं है। किन्तु धन कोई स्थिर वस्तु नहीं है यह किसी के पास टिका नहीं रहता। आज यह किसी के पास है, तो कल नहीं है जिससे व्यक्ति को आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ता है। आज दिखावे के युग में व्यक्ति आवश्यकता से अधिक धन का व्यय कर अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ हो चुका है। इसकी पूर्ति के लिये वह अन्य किसी का सहारा ढूंढने में विवश है।

9. राजनीति एवं राजनैतिकता

धर्म और राजनीति दोनों एक दूसरे से भिन्न हैं। धर्म का राजनीति में आगमन देश को धीरे–धीरे विनाश की ओर ले जा रहा है। दूसरी तरफ राजनीति धर्म की दुहाई देती हुई इसे गति की ओर ले जा रही है। राही मासूम रज़ा के शब्दों में– "धर्म की आधारशिला पर खड़ी राजनीति केवल देश को तबाह ही कर

---

[190] नासिरा शर्मा, जिन्दा मुहावरे (नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 1993), पृ॰ 15

[191] नासिरा शर्मा, अक्षयवट (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2003), पृ॰ 57

सकती है।"[192] देश में फैली भ्रष्ट और घिनौनी राजनीति समाज में वैमस्य को बढ़ावा दे रही है। प्रत्येक क्षेत्र में धर्म के किसी न किसी दुष्चक्र के कारण घटनायें घटित हो रही हैं। धर्म राजनीति में इस प्रकार से घुल मिल चुका है कि धर्म के बिना राजनीति की कल्पना ही नहीं की जा सकती। नेतागण व्यक्ति को धर्म के नाम पर उनका मार्ग भटकाने का कार्य कर रहे हैं। धर्म को माध्यम बना लोगों की बुद्धि भ्रष्ट कर रहे हैं शासक धर्म की राजनीति का खेल खेल रहे हैं, जिससे साम्प्रदायिक दंगे हो रहे हैं। इनके पीछे छिपा हुआ इनका स्वार्थ लोगों को दिखाई नहीं दे रहा। राजनीति में धर्म का सहारा लेना यह भ्रष्ट नेताओं की दिमागी उपज है। जोकि निरन्तर देश का विनाश करने में लगे हुये है। उनका मकसद केवल और केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करना है। देश के विकास और विनाश से उनका कोई वास्ता नहीं है। इन सबमें यदि कोई पिस रहा है तो वह है आम व्यक्ति जो कि राजनीति के इस दाँव–पेच को नहीं समझ पा रहा। लेखिका ने कहा है– "धर्म तो सिर्फ हथियार है, जिसको सिर्फ इसलिए प्रयोग किया जाता है ताकि आम आदमी तक पहुँच हो सके।"[193] इनके उपन्यास 'सात नदियाँ एक समुन्दर' उपन्यास में धर्म और राजनीति के बीच पीस रही इन्सानी जिन्दगियों का विवरण प्रस्तुत हुआ है। "राजनीति आज इन्सानी खून में प्रवाहित है। इसके प्रकोप से इन्सानियत बीमार है, दम तोड़ती नज़र आती है। संक्षेप में राजनीति सिर्फ पावर गेम है। यही राजनीति है जो किसी की अच्छाई और बुराई को तय करती है, सच्चाई के मुँह पर नकाब डालती है और बुराई के झंडे गाड़ती है। जिन्दगी, आज राजनीति के कारावास में कैद है। इस कैद को मुक्त कौन कराएगा?"[194] जब धर्म का राजनीति में हस्तक्षेप बढ़ने लगता है तो वह अनगिनत जिन्दगियों को तबाह कर देता है। प्राचीन समय से लेकर आज तक दोनों का गठजोड़ बहुत भयंकर रहा है। ईरानी की क्रान्ति आज भी खूनी क्रान्ति के रुप में पूरे विश्व में जानी जाती है। खुमैनी ने अपने शासन काल में धर्म को राजनीति से जोड़ कर खुशहाल ईरान को कब्रिस्तान में बदल कर

---

[192] पूनम त्रिवेदी, राही मासूम रजा का साहित्य स ंवेदना और शिल्प (कानपुर : विद्या प्रकाशन, 2012), पृ॰ 158

[193] नासिरा शर्मा, पारिजात (दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, 2011), पृ॰ 14.

[194] नासिरा शर्मा, जिन्दा मुहावरे (नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 1993), पृ॰ 15

रख दिया था। राजनीति से जुड़ते ही धर्म तानाशाही में बदल जाता है। इसका ज्वलंत उदाहरण है आयतुल्ला खुमैनी और उसका शासन। "कुछ दिन बाद बढ़ते अंकुश से घबराये बुद्धिजीवी अपने पुराने ठिकाने की ओर लौटने लगे। एक वर्ग भाग चुका था तय्यबा जैसा वर्ग अब अर्थहीन होकर नहीं रह गया था। रुढ़िवादिता का दानव समाज को निगलने को आतुल था।"[195] आयतुल्ला ने उस समय शाह का तख्ता पलट कर धार्मिक सत्ता को स्थापित किया। इतिहास गवाह है कि जब भी धर्म और राजनीति का गठजोड़ होता तब इन्सानी नस्लों की बर्बादी होती है– "धर्म एक ऐसी महामारी है जिसकी चपेट में आकर सबसे ज्यादा लोग मरते हैं। महाभारत और रामायण काल से लेकर आज तक जितनी जन हानी धर्म युद्धों से हुई उतनी अन्य किसी से नहीं। हर आतंकवाद का जड़ मूल धर्म ही है। दूसरा आदमी शायर होता था और अब हर दूसरा ईरानी मरसिया गो हो गया है।"[196] खुमैनी की इच्छा पर मौलवियों के झुण्ड तेहरान और कुम से गांवों की ओर चल पड़े और हाथ फैलाकर सरों के उपहार मांगने लगे इन मौलवियों का कहना था– "हमारा नारा रोटी नहीं..... हमारा नारा इस्लाम है... इस्लाम बचाने के लिए ...... इस जंग को जीत में बदलने के लिए..... आप सब हथियार उठा ले और दुश्मन का कलेजा चीर कर रख दें..... आप सब को खुने हुसैन का वास्ता है......।"[197] उनके इस कथन से– "जोश से उबलने, मुँह से खूबसूरत अल्फाजों के फूल गिराते मौलवी भूखे नंगे देहातियों के मन–मस्तिष्क पर अफीम के नशे की तरह चढ़ रहे थे। घरों में खलबली मच गई थी। सर पर कफन बांधे बच्चों, लड़कों और बूढ़ों की कतार सज गई थी।"[198]

धर्म व्यक्ति को असहिष्णु, निर्मम और क्रूर बनाता है। शासक के खिलाफ उठने वाली हर आवाज़ को बंदूक के डर से बंद कर दिया जाता है। सत्तांतर होने के पश्चात् ईरान के हालात बिल्कुल बदल चुके थे। ईरान के नागरिक अमन और चैन की जिन्दगी जीने के आदि हो चुके थे जो धर्म की सत्ता स्थापित होते ही खौफ

---

[195] नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक सम ंदर (नई दिल्ली : अभिव्यंजना प्रकाशन, 1984), पृ॰ 93
[196] वाड्मय (जून 2001), एम.फीरोज अहमद (अलीगढ ़ : लाल बहादुर शास्त्री मार्ग), पृ॰ 10
[197] नासिरा शर्मा, सात नदियां एक समन्दर (नई दिल्ली : अभिव्यंजना प्रकाशन, 1984), पृ॰ 266
[198] नासिरा शर्मा, सात नदियां एक समन्दर (नई दिल्ली : अभिव्यंजना प्रकाशन, 1984), पृ॰ 277

में जिन्दगी जीने लगे थे। एक ओर ईरान, "पहाड़ पेड़ घर नहीं कब्र.... कब्रों में ढल गया है।"[199] वहीं ईरान जहाँ धर्म अफीम की भांति है। जिस प्रकार अफीम का नशा व्यक्ति को सोचने–समझने में लाचार बना देता है और वह पशु की भांति बन जाता है।

धर्म और राजनीति का गठजोड़ इन दिनों सब कहीं मौजूद है। दुनिया भर में अल्पसंख्यक घोर संकट में है। असद पीड़ा भरी इस सच्चाई को बयान करता है, "इनको न क्राइस्ट में दिलचस्पी है और न रसूल में और हम तीसरी दुनिया के पिछड़े अनपढ़ लोग इनकी योजनाओं में ईधन बन जाते हैं"[200]

नासिरा शर्मा का उपन्यास 'ज़ीरो रोड़' एक बड़े भूगोल की रचना है जो दुबई से इलाहाबाद तक फैला है। इलाहाबाद में ललित प्रसाद और लाला चुन्नीराम हिन्दू युवकों में धार्मिक उन्माद पैदा करने के ऐसे स्त्रोत हैं, जिनका नेटवर्क काफी फैला हुआ है। उनके द्वारा करवाये गये सिद्धान्त से हमले का पश्चाताप सिद्धान्त को अन्दर ही अन्दर सताता रहता है। सिद्धान्त अपने भीतर पल रही पीड़ा से पर्दा उठाते हुये कहता है, "वह एक मनहूस घड़ी थी जब मैं धर्म के उन्माद में या फिर दिशाहीन छटपटाहट में उस झुंड में जा मिला जो वे सारे काम करते थे जो सामाजिक दृष्टि से उचित नहीं थे। मगर रामलला का चढ़ता जुनून अयोध्या से चलता इलाहाबाद तक पहुँच गया था। तर्क, तथ्य, मानवता, भाईचारा, उखंडता के सारे सिद्धांत हम जवान भूल चुके थे। कहीं का दबा आक्रोश कहीं और फूटना चल रहा था।"[201] एक जगह नूरा कहती है– "बाबू जी अगर हम मुसलमान न होते मारने वाले हिन्दू न होते, तो हामिद भाई हमें यू छोड़ कर न जाते।"[202]

पहला और सबसे अहम् सवाल भारत देश में पनपती हुई साम्प्रदायिकता का है। आज़ादी के पहले इसका नामोंनिशान भी न था और इन 60 सालों में यह दैत्य कितना विस्तार पा गया है, दंगे जैसे आम आदमी की नियति बन गए हैं।

अतः कहा जा सकता है कि लेखिका के उपन्यासों में राजनीति और धर्म का

---

[199] नासिरा शर्मा, ज़ीरो रोड़ (नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, 2008), पृ॰ 277
[200] नासिरा शर्मा, ज़ीरो रोड़ (नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, 2008), पृ॰ 228
[201] नासिरा शर्मा, ज़ीरो रोड़ (नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, 2008), पृ॰ 281
[202] नासिरा शर्मा, ज़ीरो रोड़ (नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, 2008), पृ॰ 337

गठजोड़ हमें साफ–साफ दिखाई देता है। नेतागण राजनीति में धर्म का प्रयोग कर लोगों को एक दूसरे के खिलाफ भटका रहे हैं। उनसे अधर्मी कार्य करवा कर धर्म का आश्वासन दे रहे हैं। जिससे दिन–प्रतिदिन दंगे फसाद हो रहे हैं और धर्म के पीछे की राजनीति से निरन्तर मरने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है।

10. साम्प्रदायिक भावना एवं एकता

नासिरा शर्मा के उपन्यास–साहित्य में मुस्लिम समाज की स्त्रियों का चित्रण हमें मिलता है। यह चित्रण उन्होंने अपनी पैनी दृष्टि से किया है। नासिरा शर्मा स्वयं मुस्लिम समाज में पली–बढ़ी हुई है। इनके उपन्यासों में आयी छोटी–छोटी बातों से ज्ञात होता है कि लेखिका ने मुस्लिम स्त्रियों की मानसिकता को गहराई से छुआ है। साहित्य के क्षेत्र में इस समाज की समस्याओं ने अस्सी के दशक में प्रारंभ किया हुआ दिखाई देता है क्योंकि इस समाज के पिछड़ेपन– "इस मुद्दे पर कोई बात या विचार करना चाहे तो सीधे फतवे की चक्कर में फंसाने की बात होती है। फिर भला किसी ओर को क्या और क्यों चिंता होगी ?"[203] मुस्लिम समाज की स्त्रियों के बारे में सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि उनके अभिभावक उनके संबंध में कोई गलत निर्णय लेते हैं, अथवा उसका परिणाम विपरीत स्थितियों के साथ प्रकट होता है।

लेखिका ने अपने उपन्यासों के माध्यम से इन्हीं विषमता से भरी समस्याओं को प्रस्तुत किया है।'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास की नायिका महरुख अपनी अस्तित्व की लड़ाई लड़ती नज़र आती है। नारी के जीवन की अर्थवत्ता, उसकी पहचान को मुख्य रखकर महरुख नाम की नारी की जीवन यात्रा को लेखिका ने चित्रित किया है। महरुख एक पारंपारिक मुस्लिम परिवार में जन्म लेती है। जिस खानदान में पहले लड़कियाँ जिंदा नहीं रहती थी। महरुख को जिन्दा रखने के लिये एक टोटके के तहत उसकी मंगनी कर दी जाती है।

इसके बाद उसे अपने खालाजाद भाई रफत के साथ बांध दिया जाता है। भारतीय समाज में स्त्री को पति की आज्ञा का पालन करना पड़ता है जिस कारण महरुख स्वंय को रफत के रंग में रंगने लगी थी। उसका स्वयं का कुछ नहीं रहा जो कुछ था वह रफत के अनुसार होता था। यह भी तो एक तरह का शोषण ही

---

[203] नासिरा शर्मा, कुइयाँजान (नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, 2005), पृ॰ 277

था "भारतीय समाज में नारी का जितना शोषण हुआ है, उतना संभवतः अन्य किसी समाज में नहीं हुआ होगा। नारी के शोषण का हमारे समाज में मुख्य कारण हैं– धार्मिक कर्मकाण्ड, आर्थिक रूप से नारी की पराधीनता, परिवार में पितृ सत्तात्मकता, कुलीन विवाह, संयुक्त परिवार, अशिक्षा, जड़ता और नारी का गलत समाजीकरण आदि।"[204]

महरुख हर हालात में अपने को उस माहौल के अनुसार फिट करने की कोशिश करती है। किन्तु रफत अमेरिका पढ़ाई के लिये जा अंग्रेजी औरत से शादी बना लेता है। महरुख इस हादसे से टूट जाती है। उसकी जड़ें जमाने की तरह प्रयत्नशील हो जाती हैं। वह दिल्ली छोड़ गांव की जिन्दगी की ओर प्रस्थान करती है।''महरुख एक ऐसी औरत है जो पहले तो एक कठपुतली की भांति रफत के बताए रास्ते पर चलती रही लेकिन जब नम्रता या समर्पण के बदले उसे अपने अस्तित्व की उपेक्षा का अहसास होता है वह अपना रास्ता बदल लेती है।"[205] वह अपने अस्तित्व बनाये रखने के लिये आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने की कोशिश करती है।

लेखिका अपने कथन में कहती है–"मेरा विश्वास है कि इन्सान दो बार जन्म लेता है, पहली बार माँ की कोख से और दूसरी बार हालात की मार से... प्रत्येक व्यक्ति कुछ सोच कर आगे बढ़ने के लिये किसी एक दिशा की ओर कदम बढ़ाता है, मगर हवा उसे किसी दूसरी दिशा की ओर उड़ा ले जाती है। बनना वह कुछ चाहता है और बन कुछ और जाता है। इन्सान जैसा ऊपर से दिखता है वैसा वह अंदर से होता नहीं है। किसी भी व्यक्ति के अंदर जरा–सा झांकिए तो महसूस होगा कि तहखाने–दर–तहखाने, कोठरियाँ–दर–कोठरियाँ, गालियाँ–दर–गालियाँ और जाने कितने पर पेच एवम् रास्तों का जाल फैला है, जिस पर से वह चलकर यहाँ पहुँचा है, जहाँ पर आपसे उसकी पहली मुलाकात होती है और आप पल भर में उसके व्यक्तित्व के बारे में फतवा दे बैठते हैं।"[206] सामाजिक और घरेलू विपरीत परिस्थितियों में महरुख स्वयं को सृजनात्मक धरातल पर तराशती है। लेकिन

---

[204] अलका प्रकाश, नारी चेतना के आयाम, (इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 1997), पृ॰ 103

[205] ज्योति किरण, हिन्दी उपन्यास और स्त्री जीवन, (दिल्ली : मेघा बुक्स प्रकाशन), पृ॰ 61

[206] नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी (नई दिल्ली : सरस्वती विहार, 1989), पृ॰ कथन से

अस्तित्व को प्राप्त करने के लिए स्त्री को जिन कठिन रास्तों पर चलना पड़ता है, महरुख भी उसमें पीछे नहीं रही है। महरुख इस बारे में स्वयं कहती है– "मैंने भी अपने पसंद की जिन्दगी जीने की कीमत अदा की है, मैं अपनी जिन्दगी से मुतमईन हूँ। मैंने कुछ खोकर पाया है अम्मी! आप इसे न जान सके तो वह अलग बात है, मगर मैंने सचमुच हादसों से घिर कर, तजुर्बों की सुरंगों से निकल कर कुछ पाया है जो कीमती, बहुत पुरमायनी है, जो आप नहीं मगर आनेवाली नस्लों की औरतें समझेगी।"[207] महरुख का कहा यह कथन वर्तमान नारी की उस सोच को दर्शाती है जो समय के अनुसार नारी को एक स्वतंत्र एवम् उन्मुक्त अस्तित्व प्रदान करती है। महरुख नारी के उस परंपरागत आवरण को निकाल बाहर फेंकती है और स्वयं अपने अस्तित्व की पहचान बनाती है। वह रफत को करारा जवाब देती है।

अतः आज भी परंपरागत मुस्लिम समाज अपनी केंचुली से बाहर आने के लिए तैयार नहीं है। इस समाज ने स्त्री पर अनेक बंधनों को लादा है ताकि यह घर परिवार की दहलीज को लाघ न सके। इसलिए उनके अस्तित्व में धार्मिक कारकों को बेहतर अवरोधक के रूप में प्रयुक्त किया। नासिरा शर्मा ने इसी अस्तित्व को पहचान बनाये रखने के लिए छटपटाती स्त्री का चित्रण किया है जो उन्मुक्त जीवन की कामना चाहती है।

निष्कर्ष–

नासिरा शर्मा के दर्शन में साहित्य और समाज के सरोकार, समय के सरोकार, संस्कृति की विविधता एवं साहित्य की सामगम उसकी प्रतिबद्धता एवं समबद्धता को अपनी अवधारणात्मक शैली के द्वारा दर्शाया है, स्त्री और पुरूष की विषमता, समता, धर्मनिर्पेक्षता को अपने विचारों के द्वारा समाज के समक्ष सदियों पड़े घटाक्षेप को प्रकाशनार्थ किया। लेखिका ने विश्व के कई देशों को यात्रा की समाज में सुलगती हुई घटनाएँ संवेदना का स्तर, महिला लेखन, वर्चस्ववादी व्यवस्था, स्त्री दमन का अनवरत सिलसिला, दलितों की वेदना, सदियों की गुलामी एवं शोषण के तरीकों को नासिरा शर्मा अपने कथा साहित्य के द्वारा पूरे समाज को युगबोधक,

---

207 नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी (नई दिल्ली : सरस्वती विहार, 1989), पृ० कथन से

प्रवाहबोधक एवं दिशा बोधक बनाकर उसे प्रेरणा दी जिससे समाज का प्रत्येक व्यक्ति जागरूक होकर यथार्थ और वास्तविकता से परिचित हो सके।